इस सबब से उस माया के देश में अदल-बदल और भाव-अभाव की कार्रवाई हर दम जारी है। और इसी सबब से दुख-सुख और क्लेश वग़ैरा व्यापता है। सो जब तक कि सुरत इस हद्द के पार निर्मल चैतन्य यानी सत्य पद में उलट कर न जावेगी, तब तक दुख-सुख और जन्म-मरण से सच्चा छुटकारा नहीं होगा और न असली सत्त पद की प्राप्ति होगी।

११—इस वास्ते, कुल्ल सच्चे परमार्थियों को मुनासिब है कि असल सत्य पद का, जो अनंत, अपार और सदा एक-रस क़ायम है और प्रेम और आनन्द का भण्डार है, अपने घट में खोज लगा कर, और चलने की जुगत दरियाफ़्त करके, जिस क़दर बन सके, शौक़ के साथ सहज २ चलना शुरू करें और संसार और उसके भोगों में ज़रूरत के मुवाफ़िक़ बर्ताव जारी रक्खें। ज़्यादती में उनके परमार्थ यानी सत्य पद के मिलने के जतन में ख़लल पड़ेगा। और जो इस तौर पर कार्रवाई करेंगे तो वे राधास्वामी दयाल की दया से, रफ़्ते २ एक दिन, असत्य देश से न्यारे होकर, सत्य यानी निर्मल चैतन्य देश में पहुँच कर बासा पावेंगे और अमर आनन्द को प्राप्त होवेंगे। और जब से कि वे सच्चे मन से प्रेम अंग लेकर अभ्यास शुरू करेंगे तब से, थोड़े अर्से में आहिस्ता २ थोड़ी-बहुत सत्य की प्राप्ति होती जावेगी, यानी शब्द चैतन्य

से मेला होता जावेगा, और उसी क़दर असत्य से दूरी होती जावेगी, और उसका असर भी कम होता जावेगा। और सत्य की प्राप्ति का निशान यह है कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरणों में प्रीति और प्रतीत बढ़ती जावे और संसार और उसके पदार्थों में रग़बत कम होती जावे।

बचन १३

राधास्वामी दयाल के चरणों में किसी न किसी तरह की प्रीति और भाव और सेवा और यादगारी का फ़ायदा।

१—दुनिया के जितने काम हैं, सब प्रीति और शौक़ के साथ किये जाते हैं। जिस काम में कि किसी की प्रीति और शौक़ नहीं होता है, वह काम दुरुस्ती से नहीं बनता है, और जिस तरफ़ जिसकी प्रीति होती है, उसी तरफ़ उसका झुकाव रहता है।

२—जहाँ जिसको गहरी प्रीति है, वहाँ आपस में मेल भी जल्द २ और बार २ होता है, और वहीं एक दूसरे के वास्ते तन-मन-धन भी खुशी से लगाता है।

३—इसी तरह, परमार्थ में जिस किसी की प्रीति आई, वह कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके प्रेमी भक्तों के संग की चाह उठावेगा। और उस को जब २ इत्तिफ़ाक़ से उनका

सतसंग मिलेगा, तो वह बहुत ख़ुश होकर उस में शामिल होगा और दर्शन और बचन का रस हासिल करेगा और उनकी परमार्थी किताबों को बहुत शौक़ के साथ पढ़ेगा और सुनेगा।

४—यह प्रीति, प्रेमियों के संग और उनकी किताबों के पढ़ने से पैदा होगी और बढ़ेगी। और जिस क़दर तबीयत शौक़ के साथ इस काम में लगेगी, उसी क़दर दुनिया और दुनियादारों की तरफ़ से हटेगी।

५—कुल्ल रचना में कुल्ल कार्रवाई प्रीति और शौक की है। सो जिस किसी को परमार्थ में थोड़ी-बहुत प्रतीत के साथ प्रीति आई, उसको उसी मुवाफ़िक़ वहाँ रस और आनन्द मिलेगा और उसी क़दर उससे वहाँ की कार्रवाई बनती जावेगी।

६—कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों के हाल को मुलाहिज़ा करके, निहायत दया के साथ, ऐसा हुकुम फ़रमाया कि जो उनके चरणों में थोड़ी भी प्रीति और प्रतीत लावेगा, तो भी उसका किसी क़दर फ़ायदा परमार्थी इस जन्म में हो जावेगा और आइन्दा की तरक़्क़ी के वास्ते सिलसिला जारी हो जावेगा यानी वह प्रीति दिन-दिन बढ़ती जावेगी।

७—और राधास्वामी दयाल ने तरीक़ा अन्तरी अभ्यास का ऐसा सहज जारी फ़रमाया कि उस को हर

कोई थोड़ा या बहुत, आसानी से कर सके, और अपनी प्रीति और प्रतीत के मुवाफ़िक़ उसका फ़ायदा (यानी रस और आनन्द) जीते-जी देख सके, और सतसंग करके उस प्रीति को, और उसके साथ अभ्यास भी बढ़ा सके।

८—राधास्वामी दयाल की इस क़दर दया और मेहर जीवों पर है कि जो वे थोड़ी-बहुत सचौटी के संग बाहर का सतसंग और अन्तर में अभ्यास थोड़े शौक़ के साथ शुरू कर देवें, तो वे दया से उनको अन्तर में परचे देकर उनकी प्रीति और प्रतीत बढ़ाते हैं और घट में थोड़ा-बहुत रस और आनन्द भी बख़्शते हैं।

९—अब, जिस किसी को दुनिया और दुनियादारों का हाल और यहाँ के सामान और पदार्थों की कैफ़ियत देख कर राधास्वामी दयाल के चरणों में (जो कि जीव के सच्चे हितकारी और दम २ के संगी और मददगार हैं) गहरी प्रीति आई, वही एक रोज़ गुरुमुख का दर्जा पावेगा और उनकी पूरी दया अपनी निस्बत, अन्तर और बाहर, परखता जावेगा। बाक़ी जीवों को जिस २ दर्जे की प्रीति उनके चरणों में होवेगी, उनको उसी क़दर फ़ायदा हाल में मालूम होवेगा, और आइन्दा वे भी अपने शौक़ और प्रीति के मुवाफ़िक़ नम्बर-वार गुरुमुख बनाये जावेंगे।

१०—इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि जहाँ और सब काम दुनिया के करते हैं, वहाँ, थोड़ी-बहुत प्रीति और प्रतीत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरणों में और उनके सतसंग और प्रेमी भक्तों में लाकर थोड़ी-बहुत कार्रवाई परमार्थ की, यानी बाहर का सतसंग और पाठ उनकी बानी और बचन का और अन्तर अभ्यास सुमिरन और ध्यान और भजन का शुरू कर देवें, तो रफ़्ते २ उनकी प्रीति और प्रतीत, दुनिया का तमाशा देख कर, चरणों में बढ़ती जावेगी और जीते-जी उसका फ़ायदा उनको नज़र आवेगा और आइन्दा के वास्ते तरक़्क़ी का सिलसिला, वास्ते हासिल होने सच्ची मुक्ति यानी पूरे उद्धार के, जारी हो जावेगा कि जिस से एक दिन दुख-सुख और जन्म-मरण के चक्कर से सच्चा छुटकारा हो जावेगा।

११—जो कोई किसी क़िस्म का नाता यानी प्रीति थोड़ी या बहुत राधास्वामी दयाल के चरणों में जोड़ेगा या किसी तरह से उनके किसी सच्चे प्रेमी भक्त से प्रीति और मेल पैदा करेगा तो राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से उसका भी किसी क़दर कारज इसी जन्म में बनावेंगे, यानी उसके जीव का थोड़ा-बहुत कल्याण हो जावेगा और आयन्दा को भी सिलसिला लग जावेगा।

१२—और जो कोई कि राधास्वामी दयाल की जुगत की कमाई (सुरत-शब्द अभ्यास) संत सतगुरु या साध गुरू या उनके सच्चे प्रेमी सतसंगी से उपदेश लेकर, सच्चे मन से, थोड़े दिन भी करेगा तो भी वह चौरासी में नहीं जावेगा और आहिस्ता २ सिलसिला उसके उद्धार का जारी हो जावेगा।

१३—खुलासा यह है कि जैसे बने तैसे, किसी न किसी जुगत से, यादगारी राधास्वामी दयाल के चरणों की रोज़मर्रा किसी न किसी वक़्त होनी चाहिये। फिर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से उस जीव को आहिस्ता २ खींच कर चरणों में लगावेंगे और रफ़्ते २ उसका उद्धार करेंगे।

१४—जिस किसी ने कि एक बार भी दर्शन संत सतगुरु के, प्यार और भाव से किये हैं और उनके बचन चित्त देकर सुने और समझे हैं, तो वह अबेर-सवेर सतसंग में मिलाया जावेगा, और जो बिल-फ़र्ज इस जन्म में शामिल नहीं हुआ, तो अंत समय पर उसके जीव की थोड़ी-बहुत सम्हाल की जावेगी और आइन्दा के जन्म में सतसंग में खींच कर मिलाया जावेगा। और जिसने कि कई बार शौक़ के साथ सतसंग किया पर उपदेश नहीं लिया तो उसके भी बहुत से कर्म कट जावेंगे और अंत समय पर उसके जीव की किसी क़दर सहायता की

जावेगी और आइन्दा को सिलसिला उद्धार का जारी हो जावेगा।

१५— जिस किसी को राधास्वामी मत और सतसंग और सतगुरु की महिमा सुन कर राधास्वामी दयाल के चरणों में भाव और प्यार आया और गुप्त सेवा तन-मन-धन की करी, पर कोई सबब से सतसंग में शामिल न हो सका और न दर्शन सतगुरु के किये और न उपदेश पाया, तो भी राधास्वामी दयाल उस जीव की, अपनी मेहर और दया से, सहायता करेंगे और इसी जन्म में, चाहे आइन्दा के जन्म में, उसको सतसंग में मिला कर और सुरत-शब्द की कमाई उससे करा कर, रफ़्ते २ उसका सच्चा उद्धार फ़रमावेंगे।

१६—जो कोई कि राधास्वामी दयाल और उनके नाम और धाम की महिमा सुन कर राधास्वामी नाम का सुमिरन, प्यार और भाव के साथ, करेगा और बानी और बचन को भी शौक के साथ पढ़ेगा, तो राधास्वामी दयाल इसी जन्म में खींच कर उसको सतसंग में लगावेंगे और उस पर दया करेंगे। और जो इस जन्म में मौक़ा न हुआ तो आइन्दा के जन्म में वह ज़रूर सतसंग में शामिल किया जावेगा और कार्रवाई उसके उद्धार की जारी हो जावेगी।

१७—ऐसा हाल दया और मेहर का सुन कर जीवों को चाहिये कि ज़रूर राधास्वामी दयाल के चरणों में, हाज़िर या ग़ायब, ज़रूर थोड़ी-बहुत प्रीति या उनकी याद-गारी करते रहें कि जिससे सहज में उनके जीव का कल्याण हो जावेगा और जो इतनी बात से चूकेंगे यानी सुन कर भी थोड़ा-बहुत भाव और प्यार राधास्वामी दयाल के चरणों में या उनके सतसंग में या उनके प्रेमी भक्त में या उनके नाम और बानी-बचन में नहीं लावेंगे, तो उनको जानना चाहिये कि वे अभागी हैं और उनके उद्धार में अभी बहुत देर है।

१८—राधास्वामी दयाल की यहाँ तक जीवों पर दया और मेहर है कि जो कोई अनजानता और मूर्खता से उनकी या उनके सतसंग की या उनके प्रेमी भक्त की निंदा करता रहेगा तो उसको भी, पहिले उसके पाप कर्म काट कर, अबेर-सवेर खींच कर सतसंग में मिलावेंगे, जहाँ से कि उसके उद्धार का सिलसिला जारी हो जावेगा।

१९—किस क़दर भारी दया की बात है कि जो किसी से महिमा जान कर या अनजानता से कोई सेवा किसी क़िस्म की तन, मन और धन या इन्द्रियों की राधा-स्वामी दयाल के निमित्त बन आवेगी तो उस को भी थोड़ा-बहुत परमार्थी फ़ायदा बख़्शेंगे यानी उसके जीव की किसी क़दर सहायता करेंगे और चरणों में प्रेम-प्रीति का दान

देकर आइन्दा को उसके उद्धार का रास्ता आहिस्ता २ जारी फ़रमावेंगे।

२०—जो कोई राधास्वामी नाम और उनकी बानी को प्यार के साथ गावेगा और पढ़ेगा तो उसको भी थोड़ा-बहुत परमार्थी फ़ायदा पहुँचेगा, क्योंकि यह नाम सच्चे कुल्ल-मालिक का है, और इसका असर बड़ा भारी है, जो प्यार और भाव के साथ गाया जावे। और जो इसका भेद समझ कर सुमिरन करेगा, तो उसका फ़ायदा और भी ज़्यादा होगा यानी वह एक दिन सतसंग में शामिल होकर या किसी प्रेमी भक्त से मिल कर अभ्यास में लग जावेगा। और राधास्वामी दयाल की बानी को भाव से पढ़ने का भी यही फ़ायदा हासिल होगा।

२१—अब ख़्याल करो कि जो लोग प्रीति और प्रतीत के साथ नित्त सतसंग और अभ्यास करते हैं और तन से, मन से और धन से, जिस क़दर मुमकिन है, नित्त सेवा करते हैं और राधास्वामी दयाल की दया और मेहर को अन्तर और बाहर नित्त अपने ऊपर देखते हैं और परखते हैं, उनको किसी कदर भारी दर्जा और मुक़ाम, हर एक की लगन के मुवाफ़िक, बख़्शिश फ़रमावेंगे। और सतसंग से मतलब यह है कि जहाँ कितने ही प्रेमी भक्त, राधास्वामी दयाल के, मिल कर बानी का पाठ और अर्थ और चर्चा

करते हैं। और जिसको ऐसा सतसंग प्राप्त नहीं है, अगर वह आप अपने घर में प्रेम के साथ समझ २ कर बानी का पाठ करता है या अपने कुटम्बियों के साथ चर्चा करके राधास्वामी मत को समझाता है, तो यह भी सतसंग में दाखिल है।

बचन १४

राधास्वामी शरण, सुरत-शब्द धारण, सर्व दुक्ख निवारन। महिमा और बड़ाई राधास्वामी मत की जो कुल्ल-मालिक का सच्चा मत है और बग़ैर जिसके धारण करने के, किसी जीव का सच्चा उद्धार मुमकिन नहीं है।

१—दुनिया और दुनियादारों के हाल पर नज़र करने और ग़ौर करके विचारने से मालूम होता है कि सब जीवों के मन में एक क़िस्म की चाह या तड़प, वास्ते बड़े से बड़े सुख और बड़े से बड़े दर्जे और बुज़ुर्गी और ज़्यादा से ज़्यादा धन और माल और भारी से भारी ताक़त के हासिल होने के वास्ते लगी रहती है, और चाहे जिस क़दर सामान हासिल हो जावे, फिर भी थोड़ी-बहुत चाह वास्ते उसकी ज़्यादती और तरक़्क़ी के बनी रहती है।

२—और जब किसी क़िस्म की तकलीफ़ और दुख या कोई सख़्त मुसीबत या रंज़ या बीमारी आयद होती

है, तो उस वक़्त जीव तहे-दिल से यानी अन्तर के अन्तर से चाहते हैं कि कोई ऐसी ताक़त उनको मिले या कोई ऐसी मदद उनकी करे या कोई ऐसी दवा देवे कि जिससे वह दुख या मुसीबत या तकलीफ़ जल्द दूर हो जावे या कम हो जावे। और जब कोई ऐसा मददगार नहीं मिलता तो लाचार होकर मन ही मन में चुप हो जाते हैं और मुसीबत को, जसे बने, तैसे बरदाश्त करते हैं, लेकिन फिर भी दिल में एक क़िस्म की तड़प और चाह, वास्ते मिलने मदद के, बनी रहती है।

३—पहिली क़िस्म की चाह, जो सुख वग़ैरा की प्राप्ति के लिये उठती है, उसके पूरा करने के लिये अनेक तरह के जतन और अनेक तरह के काम और अनेक तरह की मेहनत जीव उम्र भर करते हैं। यानी सुन कर, पढ़ कर और देख कर, जब और जहाँ जिस किसी को किसी काम या किसी मुआमले या किसी विद्या और हुनर और कारीगरी और सौदागरी और सफ़र वग़ैरा २ में विशेष फ़ायदा हुआ है या मान-बड़ाई और दौलत और हुकूमत और दर्जा मिला है, तो और जीव भी उसी मुवाफ़िक़ कार्रवाई करके, वैसा ही फ़ायदा और दौलत और दर्जा हासिल करना चाहते हैं। और जब एक धंधे यानी काम में पूरा फ़ायदा नहीं हुआ तो दूसरा धंधा शुरू करते हैं, यानी

बराबर अपनी कार्रवाई, जो मतलब के मुवाफ़िक़ न होवे या उससे पूरा फायदा न मिले, बदलते रहते हैं और इसी तरह के फ़िक्र में कि यह काम करना चाहिये और वह छोड़ना चाहिये और इसको बढ़ाना चाहिये और उसको घटाना चाहिये, रात-दिन लगे रहते हैं। और चाहे सब काम उनके मतलब के मुवाफ़िक़ बनते जावें, तो भी चाह ज़्यादा से ज़्यादा तरक़्क़ी की, उनके मन में बनी रहती है और उनको निचला (यानी आराम से) नहीं बैठने देती है। और इसी किस्म के ख़्यालों का हुजूम उसके मन में हर रोज़ बना रहता है और उनको किसी तरह चैन नहीं लेने देता है।

४—यह हाल कुल्ल जीवों का है, चाहे वे ग़रीब हैं या अमीर या राजा-महाराजा या आलिम और फ़ाजिल या भारी हुनर वाले या मूर्ख और नादान।

५—और संग और सोहबत और दुनिया का तमाशा ऐसे ख़्यालात और चाहों को बढ़ाता रहता है और नये २ ख़्याल और चाहें पैदा करता है।

६—खुलासा यह कि सब जीव अनेक क़िस्म के ख़्यालों और कामों और बखेड़ों में हमेशा लिपटे रहते हैं और ऐसे कामों की कसरत में उनको कभी इस बात के सोच और विचार करने का वक़्त भी नहीं मिलता कि क्यों बा-वजूद हासिल होने बहुत से सामान के, उनके मनमें

तृष्णा और नई-नई चाहें दुनिया की तरक़्क़ी की बनी रहती हैं और पैदा होती जाती हैं। और बे-शुमार जीव इसी हालत में उम्र भर पचते और खपते रहते हैं और आख़िर को मौत के वक़्त यहाँ से ख़ाली हाथ जाते हैं। यानी जिस २ सामान के हासिल करने में उन्होंने अपनी सारी उम्र ख़र्च करी, उनमें से कोई भी उनका अख़ीर वक़्त पर संगी और मददगार नहीं होता, और न मौत या तकलीफ़ के वक़्त धन और माल और हुकूमत और लियाक़त और इल्म और अक़्ल और कुटुम्ब और परिवार और फ़ौज और लश्कर उनका संगी और मददगार होता है। ऐसे जीव रंज और अफ़सोस के साथ जान देते हैं और सब सामान यहाँ का यहीं छोड़ जाते हैं।

७—अब दूसरी क़िस्म के ख़्यालों का ज़िक्र किया जाता है यानी दुख और मुसीबत के दूर करने के वास्ते अनेक तदबीरें सोचते हैं और काम में लाते हैं जैसे दवा-दारू करना, अपने २ अक़ीदे और निश्चय के मुवाफ़िक़ मालिक या देवताओं या पैग़म्बरों और औलियाओं और महात्माओं और जादूगरों और भूत, पलीत और चुड़ैल वग़ैरा से मदद माँगना और मुक़ामात मुतबर्रक व तीर्थ व दरियाओं और कूओं पर जाना और वहाँ के रस्म और दस्तूर के मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना और तावीज़ और गंडे

और क़िस्म २ के पत्थर या लकड़ी वग़ैरा को गले में डालना, या बाज़ू पर बाँधना और निशान, या कोई चीज़ महात्माओं और औलियाओं की अपने संग, वास्ते हिफ़ाज़त के, रखना, या कोई नाम या मंत्र या शब्द का पढ़ना और जाप करना, या कोई ख़ास पूजा अपने मकान पर या किसी और ख़ास मंदिर या मसजिद या मज़ार या गिरजा या किसी ख़ास मुक़ाम में जाकर करना, या किसी फ़क़ीर या साधू या ख़ुदा-परस्त लोगों से इलतिजा करना और मदद माँगना, या दान और पुन्य और ख़ैरात करना और मोहताजों को खिलाना-पिलाना, या किसी देवता और महात्मा के वास्ते नज़र-नियाज़ बोलना और ज़ियारत का वादा करना वग़ैरा २।

८—और जब बा-बजूद इन तदबीरों के, मुसीबत या तकलीफ़ दूर न होवे, तो लाचार हो कर ख़ामोश हो रहते हैं और उस तकलीफ़ और मुसीबत को जबरन और क़हरन सहते हैं। फिर भी अख़ीर वक़्त तक दिल में ऐसी चाह और तड़प लगी रहती है कि कोई उनकी तकलीफ़ को, जैसे बने वैसे दूर कर देवे या घटा देवे, और जब कोई इलाज पेश नहीं जाता, तो लाचार क़िस्मत या नसीब या अपने पिछले-अगले ऐमालों का नतीजा यानी फल समझ कर या मालिक की मरज़ी ऐसी ही जान कर ज्यों-त्यों, रो-पीट कर सब्र करते हैं।

९—ग़रज़ कि कुल्ल जीव इस दुनिया में सुख और बड़ाई की प्राप्ति की चाह और फ़िक्र में, और भी तकलीफ़ और दुक्खों के दूर करने या घटाने के ख़्याल और सोच में, हमेशा सर-गरदाँ रहते हैं। लेकिन जो जतन और तदबीरें कि वे काम में लाते हैं, चाहे उनसे थोड़ा या पूरा फ़ायदा हासिल होवे, फिर भी सुख की चाह और तकलीफ़ और दुक्खों का ख़ौफ़ और चिन्ता उनके मन से दूर नहीं होती है।

१०—इस दुनिया में ऐसी हालत का कोई इलाज न देख कर, बाज़े लोग परमार्थ यानी मज़हब की तरफ़ इस उम्मीद पर रुजू लाये कि वहाँ से कोई सहारा ऐसा मिले कि जिससे दुनिया की तरक़्क़ी और दुनियाँ की तपन से बचें, और ऐसे स्थान का पता लगे कि जहाँ पहुँच कर परम सुख को प्राप्त होवें, और फिर कोई चाह बाक़ी न रहे और ऐसी जुगत मालूम होवे कि जिससे तकलीफ़ और दुक्खों का असर कम व्यापे और रफ़्ता २ उन से पीछा छूट जावे।

११—जब बाज़े लोगों ने इस तरह मज़हबी तह-क़ीक़ात और तलाश शुरू की, तब उसमें उन को बहुत सी दिक़्क़तें पेश आईं—यानी पहले तो कितने ही मज़हब नज़र आये और फिर उनमें आपस में ना-इत्तिफ़ाक़ी दिखलाई

पड़ी कि एक दूसरे को ग़लत या ओछा बतलाता है और मालिक के वजूद के निस्बत भी बहुत सा इख़्तिलाफ़ पाया गया कि कोई किसी को और कोई किसी को मालिक क़रार देता है और कोई मालिक के वजूद से बिल्कुल मुनकिर है।

१२—ऐसी हालत मज़हबों की देख कर बहुत से शक और सन्देह सच्चे खोजी के दिल में पैदा हुए। और जब उसने तहक़ीक़ात शुरू की और वास्ते दूर करने अपने भरमां के, थोड़े सवालात किये तो उनका जवाब पूरा २ किसी मत में न मिला। इस सबब से जैसी चाहिये, वैसी तसल्ली नहीं हुई। पर लोगों के तान और तिशने का ख़ौफ़ करके जिस मज़हज में कि जो पैदा हुए या जिसको किसी सबब से उन्होंने इख़्तियार किया, उसी में चुप्प होकर ज़ाहिरा तौर पर लगे रहे। पर दुनिया के दुख-सुख की हालत और कैफ़ियत उनकी नहीं बदली और न पूरा २ सहारा उनको तकलीफ़ और दुक्ख की हालत में मिला।

१३—यह बात ज़ाहिर है कि कसरत से लोग बे-इल्म और नादान हैं और दुनिया के सुखों के भोगने और उनके वास्ते नई २ चाह उठाने में ऐसे मशग़ूल हैं कि उनको कभी सुध भी इस बात की नहीं आती कि कोई इस दुनिया का सच्चा और कुल्ल-मालिक है, और उससे उनका क्या रिश्ता है, और उनको एक दिन देह और दुनिया के सामान और

कुटुम्ब-परिवार को ज़रूर छोड़ना पड़ेगा, यानी एक दिन मौत ज़रूर आवेगी। फिर बाद मरने के क्या हाल होगा, इसकी उनको ख़बर भी नहीं और न दरियाफ़्त करने की ख़्वाहिश है।

१४—और जो कि इसी क़िस्म के जीव हमेशा यानी ज़िन्दगी भर, इन्द्रियों के भोगों में गिरफ़्तार रहते हैं और नई २ चाहें उठा कर हमेशा मेहनत करते रहते हैं और इसी क़िस्म के लोगों का उनको संग रहता है, तो ऐसी चाह और आदत और स्वभाव और अपने कर्मों के मुवाफ़िक बारम्बार ऊँच-नीच देशों और जोनों में पैदा होकर, हमेशा देहियों के संग दुख-सुख भोगते रहेंगे और इन ऊँच-नीच देशों में बैकुन्ठ और बहिश्त और स्वर्ग और मृत्यु लोक (यानी यह दुनिया) और नर्क और जहन्नुम वग़ैरा शामिल हैं।

१५—सच्चे खोजी लोग हमेशा कम पैदा होते हैं। और उनको जब तक कि पूरी २ कैफ़ियत किसी मज़हब की न मालूम होवे कि जिससे तसल्ली और इतमीनान हो जावे, तब तक उनका खोज हमेशा जारी रहता है। यानी वे हमेशा ख़्वाहिशमन्द रहते हैं कि कोई उनको सच्चे मालिक का सच्चा पता और भेद बतावे और जब कोई भेद देने वाला मिल जावे, तो उससे निहायत ख़ुश होकर

मिलते हैं और उसके बचनों को ग़ौर और तवज्जह के साथ सुनते हैं और मग़्न हो जाते हैं।

१६—ऐसे खोजियों को दो क़िस्में हैं। एक तो वे कि जो बहुत से हालात मज़हबी (जो कि मालिक के भेद में दाखिल हैं) जानना और समझता चाहते हैं और जब उनके संदेह और सवालों के, इत्तिफ़ाक से किसी भेदी से मिल कर, पूरे जवाब मिल जावें, तब उनके मन में एक क़िस्म की शान्ति आ जाती है, लेकिन यह इरादा नहीं होता कि अब उस सच्चे मालिक का उसके निज धाम में पहुँच कर दर्शन करें, क्योंकि अभी उनका मन दुनिया के भोग और बिलास और मान-बड़ाई वग़ैरा का ख़्वाहिशमंद है और उस ख़्वाहिश को छोड़ना या कम करना नहीं चाहता है।

१७—दूसरी क़िस्म के खोजी को दर्दी कहना चाहिए। उसके दिल में सिवाय दरियाफ़्त करने ख़ास २ मज़हबी बातों और भेद मालिक के, एक क़िस्म की तड़प वास्ते देखने हाल क़ुदरत के, और निज धाम में पहुँच कर हासिल करने आनंद और बिलास-दर्शन कुल्ल-मालिक के, लगी रहती है, और वह तड़प किसी सूरत में, जब तक कि उसको जुगत चल कर मिलने मालिक की सिखाई न जावे और वह उसके मुवाफ़िक़ चलना शुरू करके अपने घट में कुछ रस और आनंद न पावे, कम या दूर नहीं होती।

१८—इस दूसरी क़िस्म के खोजी दर्दी को जिस वक़्त कि कोई भेदी अभ्यासी मिलेगा, वह उसके साथ फ़ौरन मुहब्बत करेगा और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके अभ्यास में लग जावेगा और थोड़ा-बहुत रस और आनन्द अंतर में पाकर, दिन २ उसकी प्रीति और प्रतीत चरणों में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के, और भी उनके प्रेमी अभ्यासियों में, बढ़ती जावेगी। ऐसा खोजी किसी पिछले महात्माओं के क़ौल या किसी मज़हबी किताब के हवाले का मुहताज नहीं रहता। वह अपनी प्रीति और प्रतीत सच्चे मालिक के चरणों में, और भी सुरत-शब्द के अभ्यासों में, अपनी इल्मी और अमली तहक़ीक़ात से पैदा करता है और फिर वह प्रीति और प्रतीत ऐसी मज़बूत होगी कि कोई उसको किसी तरह भर्मा नहीं सकेगा और न उसको अपने काम यानी अभ्यास से हटा सकेगा।

१९—थोड़ा सा हाल उस समझ-बूझ का कि जिसके वसीले से खोजी दर्दी को वचन सुन कर और उनका विचार करके गहरी प्रीति और प्रतीत हासिल होती है, आगे लिखा जाता है।

२०—और उस समझ-बूझ का खुलासा यह है।

(१) दुनिया और उसका सामान और सर्व इन्द्रियों

के भोग नाशमान हैं यानी न तो वे आप ठहराऊ हैं और न उनका असर देर तक रहता है।

(२) जीव भी इस रचना में मुक़र्रर अर्से से ज़्यादा देह में नहीं ठहर सकता। फिर चाहे जितनी मेहनत और मशक़्क़त करके अनेक तरह के भोग और सामान पैदा करे, अख़ीर वक़्त यानी मरने के समय उन सब को अफ़सोस के साथ ज़रूर छोड़ना पड़ेगा।

(३) कुटुम्ब-परिवार और धन-माल और बिरादरी और दोस्त और आशना और नौकर-चाकर और जिन २ से इस जीव का व्यवहार है, सब अपने २ वक़्त और मतलब के संगी हैं। इन में से कोई सच्चा और पूरा हितकारी और मददगार नहीं है कि जो आम तौर पर सुख, और ख़ास कर दुख और तकलीफ़ के वक़्त सच्ची मदद करे।

(४) बल्कि अपनी देह और इन्द्रियाँ और अंग २ भी अख़ीर वक़्त पर दग़ा देते हैं यानी महज़ बेकार हो जाते हैं और बीमारी की हालत में भी इनका थोड़ा-बहुत ऐसा ही हाल हो जाता है।

(५) जीव यानी रूह जिसको संत "सुरत" कहते हैं, अमर है। और जहाँ तक कि मन और माया की हद्द है, वहाँ तक मन, सुरत का ख़ोल यानी ग़िलाफ़ होकर, उसके संग मरने के बाद जाता है।

(६) जो कोई इसमें शक लावे तो समझना चाहिए कि जिस क़दर जड़ पदार्थ हैं, इनका असली नाश नहीं है, सिर्फ़ रूप बिगड़ जाता है। फिर सुरत जो कि जड़ को चैतन्य करने वाली है, उसका नाश यानी अभाव किस तरह मुमकिन है? अलबत्ता बाद मरने के देह यानी ग़िलाफ़ बदल जाता है। इस बात के सबूत बहुत हैं, यानी कितने ही मुआमले ऐसे हैं कि कई शख़्सों ने लड़कपन में हाल और मुक़ाम अपने पिछले जन्म का बयान किया, और उसकी ब-खूबी तसदीक़ हो गई। और कितने ही मौक़ों पर मुर्दों की रूहों ने अजनबी लोगों से कुछ अपना पिछले जन्म का हाल और कोई क़ैफ़ियत ख़ास ज़ाहिर की और फिर उसकी तसदीक हो गई। और ऐसे मुआमले भी बहुत कसरत से वाक़ै हुए हैं और होते रहते हैं कि जिनमें मुर्दों की रूहों ने अपने अज़ीज़ों को ख़ास मुआमलों में, ख़्वाब की हालत में, गुप्त भेद या चीज़ें बतलाईं, जिसके सबब से उनका सख़्त तकलीफ़ या नुक़सान से बचाव हो गया या कोई जमा उनको मिल गई।

(७) जाग्रत और स्वप्न की हालतों का मुक़ाबला करने से साफ़ ज़ाहिर होता है कि सुरत का बंधन इस देह और दुनिया के साथ जाग्रत अवस्था में (जब कि उसकी धार आँख के मक़ाम पर ख़ास कर, और कुल्ल

इन्द्रियों के स्थान पर उतर कर ठहरती है) होता है और उसी वक़्त स्थूल देह और दुनिया के दुख-सुख उसको व्यापते हैं। और जब कि सुरत की धार नींद के बस, आँख के मुक़ाम से, अंदर में हट जाती है यानी पुतली किसी क़दर खिंच जाती है या सुवप्न देश में पहुँच कर सूक्षम शरीर और इन्द्रियों के साथ कार्रवाई करती है, तब स्थूल देह और दुनिया का दुख-सुख कुछ नहीं व्यापता, बल्कि उसकी कुछ ख़बर भी नहीं रहती है। फिर जो कोई चाहे कि दुनिया और देही के दुख-सुख से किसी क़दर नजात पावे, तो उसको चाहिये कि अपनी पुतलियों को उलटावे यानी रूह की धार को यहाँ से खींच कर अंतर में ऊपर की तरफ़ को चढ़ावे।

(८) जिस अभ्यास से ऐसी कार्रवाई जब यह जीव चाहे आसानी से बन आवे, तो उसी साधन से दर्जे ब-दर्जे चढ़ाई करके और स्थूल सूक्षम और कारण वग़ैरा ग़िलाफ़ों से न्यारा होकर, एक दिन अपने भंडार में (जो महा आनंद और सुख का स्थान है) पहुँच सक्ता है।

(९) और स्वप्न अवस्था की कैफ़ियत को जाँच करके मालूम होता है कि इस घट में सर्व रस और सुख का भंडार ज़रूर है, क्योंकि जब आदमी सुपना देखता है, तब सर्व इन्द्रियों के भोगों का रस अपने अंतर में लेता है,और

उस वक़्त स्थूल देह और इन्द्रियाँ बेकार होती हैं और कोई पदार्थ और भोग बाहर मौजूद नहीं होते। फिर भोगों के पैदा करने और उनका रस लेने की शक्ति और वह रस और आनन्द घट में ही मौजूद हैं। जो ज़्यादा अंतर में सुरत चढ़े और पर्दों यानी ग़िलाफ़ों के पार जावे, तो ज़रूर उसको शक्ति और आनंद और आराम बढ़ते जावेंगे और देहियों यानी ग़िलाफ़ों की तरफ़ से दूरी और बे-ख़बरी होती जावेगी यानी उनके दुख-सुख कम या बिल्कुल नहीं व्यापेंगे।

(१०) दुनिया में देखा जाता है कि हर एक चीज़ में दर्जे हैं और जानदारों में भी इन्सान से लगा कर कीड़े-मकोड़े और भुनगे और बनस्पति तक बहुत दर्जे हैं। और जो कि आसमानी रचना मिस्ल सूरज और चाँद और तारागन, इस लोक में ज़्यादा लतीफ़ और बहुत बड़ी और ज़्यादा ठहराऊ मालूम पड़ती है, तो ज़रूर हुआ कि उनमें रचना, जानदारों की, ब-निसबत इस लोक के, ज़्यादा रोशन और ताक़तवर और सुखदाई और ठहराऊ इनसान के दर्जे से ऊपर सिलसिले वार होगी।

(११) लेकिन स्थूल देह के साथ सुरत किसी ऊँचे लोक या मक़ाम में नहीं जा सक्ती। पहाड़ों और गुब्बारों पर चढ़ने वालों ने तहक़ीक़ किया है कि साढ़े छः मील

से ज़्यादा कोई मनुष्य इस आकाश में नहीं चढ़ सक्ता। वहाँ पहुँचने पर जान जाती रहती है और जो कि सुरत (रूह) का असली स्वरूप चैतन्य की धार है और वह निहायत सूक्ष्म और लतीफ़ है और चाल उसकी रोशनी और बिजली की धार से (जो कि एक सेकिंड में क़रीब एक लाख कोस के चलती है) ज़्यादा से ज़्यादा है, तो जो वह सुरत, आहिस्ता २ अभ्यास करके, अपनी देह से न्यारी हो जावे यानी अपने घट में आँख के पार आकाश में ऊँचे को चढ़ने लगे, तो उसको ऐसी शक्ति हासिल हो जावेगी कि चाहे जिस ऊँचे लोक में पहुँच कर सैर करे, और वहाँ का सुख और आनन्द देखे, और जब चाहे जब देह में लौट आवे। और इसी तरह अभ्यास बढ़ा कर एक दिन ऊँचे से ऊँचे देश में, जो कुल्ल-मालिक का स्थान और परम आनंद का भंडार है, अपनी चैतन्य धार पर सवार होकर पहुँच सक्ती है, उसी तरह जैसे सूरज की किरन अपनी धार पर सवार होकर सूरज में उलट कर जा सकती है। मैस्मेरिज़्म और हिप्नोटिज़्म के आमिल लोग अपने मामूलों से अक्सर दूर मुक़ामों का हाल और परदेशियों की ख़बर और बीमारी बग़ैरा की अंदरूनी हालत और उसका इलाज दरियाफ़्त करके बता सक्ते हैं और कितने ही ऐसे वाक़ै हुए कि जिनमें बीमारों की या कोई सदमा-रसीदा शख़्स की

रूह अपने जिस्म से किस क़दर न्यारी होकर ऊँचे देश में चढ़ी और उस वक़्त उसके कुटुम्बी या संगियों ने उसको मुर्दा समझा लेकिन वह ऊँचे चढ़ कर सब कार्रवाई देखता रहा,और हरचंद उसकी रूह ने चाहा कि ज़्यादा ऊँचे चढ़ कर गहरा आनंद पावे,लेकिन उसकी रूह फिर देह में उतर आई और आँखें खोल कर उसने जो हालत कि गुज़री और जो कैफ़ियत कि देखी, अपने लोगों से ज़ाहिर की।

(१२) इस तरह अभ्यासी सुरत का ऊपर के लोकों की सैर करना और फिर अपने निज भंडार यानी सच्चे मालिक के चरणों में अपने घट में चढ़ कर पहुँचना मुमकिन है। और रास्ता चलने का, आँख के मुक़ाम से जहाँ कि सुरत की बैठक जाग्रत अवस्था में है, चलेगा।

(१३)—मनुष्य की हालतों से, और भी मुवाफ़िक बचन संतों और महात्माओं के, ज़ाहिर है कि मनुष्य का स्वरूप कुल्ल रचना का नमूना है। यानी जो कुछ कि रचना बाहर है वह सब छोटे नमूने के तौर पर मनुष्य के अंतर में मौजूद है और दोनों का आपस में इत्तिफ़ाक और मेल है और रास्ता ऊँचे से ऊँचे देश का भी घट में, चैतन्य धार के वसीले से, मौजूद और जारी है, जैसे कि कुल्ल आसमानी रचना यानी तारागन जो नज़र आते हैं, इनका सूत हमारी आखों से बवसीले उनकी किरनियों के, जो इस लोक में आती हैं और

इस लोक से उन तारागणों में जाती है,लगा हुआ है। और जिस किसी की सुरत जिस्मानी कैद यानी देही के बन्धन से किसी तरह आज़ाद और न्यारी हो जावे, तो वह अपने सूक्ष्म स्वरूप यानी चैतन्य धार रूप से,जहाँ चाहे,छिन भर में जा सकता है और लौट कर देह में आ सकता है, क्योंकि सुरत की धार की चाल बहुत तेज़ से तेज़ है। रोशनी और बिजली की चाल जो कि निहायत तेज़ है, उसकी चाल के साथ मुक़ाबला नहीं कर सकती।

(१४) सुरत की चैतन्य धार निहायत सूक्ष्म और लतीफ़ है और वह देखने में नहीं आती, पर उसकी कार्र-वाई से, यानी जब वह जाग्रत के वक़्त आँख के मुक़ाम पर उतर कर बैठती है और देह और इन्द्रियों को चैतन्य करती है, उसका देह में मौजूद होना ज़ाहिर होता है। और ख़ास निशान उस चैतन्य धार का, चैतन्यता और शब्द यानी आवाज़ है, क्योंकि जब बच्चा पैदा होता है तो वह पहिले आवाज़ करता है और जो आवाज़ न करे तो मुर्दा (यानी हिस्स से ख़ाली) समझा जाता है। और आदमी या जानवर जब तक बोलता है और हरकत करता है, जिंदा यानी चैतन्य है और जब हरकत और बोल बन्द हो गया, तब मुर्दा समझा जाता है। और जो ग़ौर करके देखा जावे, तो इस दुनिया की कुल्ल कार्रवाई शब्द और

सुरत से हो रही है यानी एक बोलता है और दूसरा सुन कर तामील करता है, बल्कि जड़ पदार्थों की भी कार्रवाई (जो कि चैतन्य पुरुष की मदद से जारी होती है) बग़ैर हरकत और आवाज़ के नहीं होती है और वह हरकतें और आवाज़ गुप्त चैतन्य का (जो सब जड़ पदार्थों में मौजूद है, पर वग़ैर मदद विशेष चैतन्य के कुछ कार्रवाई नहीं कर सकता) ज़हूरा है। ख़ुलासा यह कि जहाँ धार रवाँ है, उसके साथ आवाज़ भी बराबर जारी है, यानी शब्द, कुल्ल का चैतन्य करने वाला और हरकत देने वाला है और ख़ुद चैतन्य रूप है, चाहे जिस दर्जे का होवे। इससे साबित हुआ कि जो कोई चैतन्य धार पर सवार होकर चलना चाहे, वह शब्द यानी उस धुन को, जो उस धार के साथ जारी है, पकड़ कर चले, तो जहाँ से वह धार आती है, वहां पहुँच जावेगा। देखो अंधे आदमी को, जो कोई थोड़ी दूर से बुलावे, तो वह बुलाने वाले की आवाज़ को पकड़ के उसके पास पहुँच जाता है, और अँधेरी रात में जो कोई जंगल में रास्ता भूल जावे और कोई नज़दीक के गाँव से आदमियों की आवाज़ आती होवे, तो वह उस आवाज़ को पकड़ के गाँव में पहुँच सकता है। इस से ज़ाहिर है कि आवाज़ की बराबर कोई रास्ता दिखाने वाला और अँधेरे में प्रकाश करने वाला नहीं है।

(१५) जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उन सब में शब्द की महिमा लिखी है और यह बयान किया है कि शब्द, कुल्ल रचना की आदि है यानी यह कि पहिले शब्द हुआ और फिर उससे रचना हुई और वह शब्द मालिक के साथ था और ख़ुद मालिक का रूप और ज़हूरा है और वही सच्चा कर्तार है। अब समझना चाहिये कि शब्द से मतलब चैतन्य धार से है जो कुल्ल मालिक के चरणों से प्रगट हुई और कुल्ल रचना की कर्तार है और कुल्ल हरकत और चैतन्यता और असर का कारण शब्द है और वही चैतन्य है। पर माया के देश में, ब-सबब मिलौनी माया के, उस चैतन्य शब्द की ताक़त और असर में दर्जे-ब-दर्जे फ़र्क़ हो गया, और उसी क़दर उसकी ताक़त और हरकत और असर में भी फ़र्क़ यानी दर्जे हो गये। पर कुल्ल कार्रवाई जहाँ जैसी है, शब्द के आसरे हो रही है।

(१६) संतों ने, जो कि धुर मुक़ाम यानी कुल्ल-मालिक के धाम से आये, शब्द का भेद साफ़ २ और शरह के साथ बयान किया, और हाल मंज़िलों का, जो कि कुल्ल-मालिक के स्थान से सुरत के पिंड में नशिस्त के मुक़ाम तक वाक़ै हैं, मय कैफ़ियत शब्द हर मुक़ाम के, तफ़सील के साथ, ज़ाहिर किया, कि जिसकी मदद से चलने वाला हर एक मुक़ाम के हाल और कैफ़ियत को समझ कर और

उस मुक़ाम की आवाज़ को पकड़ कर रास्ता तै कर सके, यानी अपनी सुरत को, अपने घट में शब्द को पकड़ के, ऊँचे देश यानी अपने निज घर की तरफ़ चढ़ाता जावे,और इस जुगत से आहिस्ता आहिस्ता एक दिन अपने कुल्ल-मालिक का दर्शन पाकर और माया और मन और काल-और कर्म के घेरे से निकल कर, परम और अमर आनंद को प्राप्त होवे और दुख-सुख और कष्ट और क्लेश और जन्म-मरण से अपना सच्चा छुटकारा कर लेवे।

(१७) जो कोई मन और इन्द्रियों के भोग-बिलास को सच्चा सुख,और देह और दुनिया को अपना रूप और घर समझ कर, इसी के वास्ते मेहनत और जतन करते रहेंगे, तो उस आशा और मंशा और स्वभाव के मुवाफ़िक़, उन को बारम्बार देह धरनी पड़ेगी, क्योंकि मृत्यु, देह की होती है, न कि सुरत की, यानी जब सुरत देह को छोड़ देती है या उससे जुदा हो जाती है, उसी का नाम मौत है।

(१८) लेकिन जो कोई दर्दी खोजी दुनिया और देह के हाल को देख कर,और यहाँ के सामान की नाशमानता ख़्याल करके, अजर धाम और अमर आनंद की प्राप्ति की चाह उठा कर जतन करना चाहते हैं, उनके वास्ते,ऊपर के बयान के मुवाफ़िक़, यह हिदायत की जाती है कि अपनी सुरत को आँख के मक़ाम से, चैतन्य धार यानी शब्द की

धुन को पकड़ के, अपने घट में ऊपर की तरफ़ भेद मंज़िल और रास्ते और चलने की जुगत का, संत सतगुरु से (जो धुर मक़ाम के पहुँचे हुये हैं) या साध-गुरू से (जो निस्फ़ रास्ता तै कर चुके हैं और आगे को चल रहे हैं) या उनके सच्चे प्रेमी सतसंगी से (जो कुछ रास्ता तै कर चुका है और चल रहा है)उपदेश लेकर चलना शुरू करे। लेकिन यह कार्रवाई जब दुरुस्त बनेगी, जब कि चलने वाले के मन में कुल्ल-मालिक के दर्शनों का सच्चा प्रेम पैदा होगा और अभ्यास करके वह प्रेम दिन २ बढ़ता जावेगा और उसी क़दर रास्ता भी आसानी के साथ तै होता जावेगा।

(१६) प्रेम, यानी खैंच शक्ति या आपस में मिलने की शक्ति, कुल्ल रचना का जुज़-ए-आज़म यानी परम तत्व है यानी कुल्ल रचना इसी प्रेम से हुई और इसी प्रेम के आसरे ठहरी हुई है और इसी तरह कुल्ल कार्रवाई इस दुनिया में, प्रेम यानी शौक़ और मुहब्बत के वसीले से जारी है।

(२०) जिसको जिस चीज़ या काम का शौक़ या इश्क़ होता है, वह वही काम करता है और जिसमें उसका प्यार है वह उसी से मिलता है और सब दे दिया और उनके रूप, इसी प्रेम के सबब से बने हुए और ठहरे हुए हैं,यहाँ तक कि कुल्ल मालिक,आप,प्रेम सिंध यानी प्रेम का अपार भंडार है और जो धारें कि उसके चरणों से निकलीं, वह भी प्रेम स्वरूप हैं

और जो उन धारों से मंडल और उनमें रचना पैदा हुई, वह भी प्रेम स्वरूप है। ख़ुलासा यह कि कुल्ल जीव प्रेम रूप हैं और प्रेम से ही कुल्ल कार्रवाई कर रहे हैं और प्रेम ही के बल से अपने निज भंडार की तरफ़ उलट कर जा सकते हैं। इस वास्ते जो कोई कि इस मर-देश से न्यारा होकर अमर-देश में पहुँचना चाहे, वह प्रेम अंग लेकर चल सकता और अपने प्रेम भंडार से मिल सकता है।

(२१) जिस मज़हब और उसके अभ्यास में प्रेम की मदद नहीं है, या उसका ज़िक्र भी नहीं है, वे सब मज़हब और अभ्यास थोथे और ख़ाली है। और यह प्रेम कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरणों में (जो घट घट में मौजूद हैं) आना चाहिये, और ज़ाहिर यानी बाहर में, संत सतगुरु या साधगुरु के चरणों में (जो कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के धाम का भेद देकर, जुगत उनसे मिलने की बताते हैं और मदद देकर सुरत को पहुँचाते हैं) आना चाहिये। तब रास्ता आसानी और दुरुस्ती से तै होगा। और जो प्रेम मन में नहीं आया, तो जो कुछ कि करना यानी अभ्यास वग़ैरा करेगा, वह नेम यानी कर्म में दाख़िल होगा। लेकिन दर्दी खोजी के मन में फ़ौरन महिमा राधास्वामी दयाल और उनके धाम की सुन कर चरणों का प्रेम पैदा होगा। और इसी तरह जिस किसी को संत सतगुरु या साधगुरू मिलेंगे, वे

अपनी दया से बचन सुना कर उसके मन में प्रेम पैदा कर देंगे। और सतसंग और अभ्यास करके वह प्रेम दिन २ बढ़ता जावेगा और एक दिन धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेगा।

२२—यह कैफ़ियत जो ऊपर बयान हुई और जो दर्दी खोजी की समझ-बूझ का नतीजा है, सिर्फ़ दुनिया और अपनी देह की हालत के मुलाहिज़े से मालूम हो सकती है। यानी खोजी और विचारवान पुरुष, देह और दुनिया के हालात को ग़ौर से जाँच कर, जो बयान कि ऊपर की इक्कीस दफ़ों में किया गया है, बतौर नतीजे के, अपनी ज़ाहिरी तहक़ीक़ात से निकाल सकता है। फिर उसके वास्ते कोई ज़रूरत या हाजत किसी की गवाही या तस-दीक़ की (जैसे पुरानी मज़हबी किताबों या महात्माओं के बचन की) नहीं रहती। और इस सबब से उस खोजी का यक़ीन भी पूरा और पक्का होता है। और जो कि उसके दिल में दर्द है यानी इस दुखदाई और मर-देश को छोड़ कर, महा सुख के स्थान और अमर-देश में पहुँचना चाहता है, इस वास्ते उससे कार्रवाई अभ्यास की भी, दर्जे-ब-दर्जे, बहुत दुरुस्त बनेगी और निर्विघ्न जारी रहेगी।

२३—ऐसे दर्दी खोजी को संत सतगुरु (जो कि अंतर-यामी हैं) अपनी दया से संयोग बना कर ज़रूर

मिलते हैं और हर तरह की मदद देकर मेहर और दया से उसका पूरा कारज बनाते हैं।

२४—असल परमार्थ यही है, और सच्ची मुक्ति और पूरा उद्धार इसी का नाम है। बाक़ी जितनी कार्रवाई अंतर और बाहर परमार्थ के नाम से लोग करते नज़र आते हैं, वे भर्म हैं। लेकिन किसी क़दर सफ़ाई और और शुभ कर्म का फल उससे मिलता है यानी कुछ अर्से के वास्ते ऊँचे नीचे देश और योनियों में सुख प्राप्त हो जाता है, पर देहो का बंधन चाहे सूक्ष्म होवे या स्थूल और उसके लाज़मी दुख-सुख और भाव-अभाव यानी जन्म-मरण से छुटकारा किसी सूरत में मुमकिन नहीं।

२५—मज़हब या तरीक़ या पंथ नाम रास्ते का है, और मत और दीन और ईमान नाम उस समझ-बूझ का है कि जिसका यक़ीन हासिल करके, प्रीति के साथ, उस रास्ते पर चलना शुरू किया जावे कि जिससे चलने वाला परम सुख और हमेशा के क़ायम रहने वाले स्थान में पहुँच कर अमर आनन्द को प्राप्त होवे और दुख और ओछे सुखों से क़तई छुटकारा हो जावे, और काम-क्रोध और लोभ-मोह और अहंकार और दसों इन्द्रियों के ज़ोर-ओ-शोर के मक़ाम से बिल्कुल अलेहदा हो जावे और ऐसे स्थान पर पहुँचे कि जहाँ सिवाय सच्चे मालिक के प्रेम, और दर्शनों के आनन्द और बिलास

के,और कोई दूसरी ख़्वाहिश या बर्तावा या किसी क़िस्म का व्यवहार (जो कि दुख-सुख का मूल है) क़तई नहीं है।

२६—अब ग़ौर करो कि मनुष्य के लुभाने और दिल बहलाने और उसको मन और इन्द्रियों का रस और स्वाद देने के वास्ते, ब्रह्म और माया ने बे-शुमार भोग और पदार्थ इस देश में पैदा किये हैं। और सब जीव उन्हीं की चाह और आशा बाँध कर, उम्र भर,दिन रात मेहनत और मश-क़्क़त करते हैं। और फिर भी ऐसे जीव बहुत कम हैं कि जिनको सर्व सुख प्राप्त होवें यानी कुल्ल इन्द्रियों के भोग उन की चाह के मुवाफ़िक़ मिल जावें। लेकिन चाहे पूरा सुख मिले या नहीं, सब जीव उसकी आशा में ब-दस्तूर पचते और खपते रहते हैं,और बा-बजूदे कि अकसर उनके जतन ना-कामयाब होते हैं और और तरह से भी दुनिया के हाथ से धक्के और झटके खाते रहते हैं, फिर भी नई २ चाह और आशा उठा कर अपनी कार्रवाई से बाज़ नहीं आते, चाहे वह आशा पूरी होवे या नहीं।

२७—बड़े अफ़सोस का मक़ाम है कि सब जीव अपनी मामूली अक़्ल और अपनी ज़ाहिरी आँखों से देखते और समझते हैं कि बड़े और छोटे आदमी और सब सामान इस दुनिया का गुज़रता चला जाता है, यानी उनका भाव और अभाव (हस्ती और नेस्ती) बराबर जारी है, और

एक दिन अपने को भी इस देश और उसके सामान और ख़ुद अपनी देह को छोड़ कर जाना है, फिर भारी ताज्जुब और अचरज यह होता है कि ज़रा से सफ़र को जब जाते हैं तो हर तरह का बदोबस्त अपने सुख और आराम का करते हैं और इस भारी सफ़र का, कि जहाँ से फिर लौटना नहीं होगा, कोई जतन अपने आराम के वास्ते दुरुस्ती के साथ नहीं करते। और इस ज़िन्दगी में हर एक शख़्स अमीर और ग़रीब अनेक तरह के रोग और सोग और क्लेश और तकलीफ़ सहते हैं और जो जतन कि उनके दूर करने का करते हैं, उनमें से अकसर कुछ फ़ायदा नहीं देते, यानी उनसे किसी तरह का बचाव दुख और तकलीफ़ का नहीं होता, फिर भी खोज और तलाश नहीं करते कि आया कोई ख़ास जतन ऐसा भी है कि जिससे दुक्खों से पूरा २ या किसी क़दर बचाव और सुखों की आशा और तृष्णा का घटाव या बिलकुल दूर हो जाना मुमकिन होवे।

२८—इन बातों का थोड़ा-बहुत इलाज और जतन और सबब और फ़ायदा हर एक मज़हब में बयान किया है, पर न तो कोई उस जतन को विधि-पूर्वक करता है और न उसकी कार्रवाई की विधि अच्छी तरह से जानता है, और न कोई उसका समझाने वाला हर एक मज़हब में और हर जगह मिल सक्ता है। बल्कि जो पेशवा और आचार्य

अपने वक़्त के, हर मज़हब में होते आये हैं, वे ख़ुद इन बातों से, जैसा कि चाहिये, वैसे वाक़िफ़कार न थे और न हैं। और जोकि यह बातें अक्सर करके इशारे में बयान की हैं, इस वास्ते सिवाय अभ्यासियों के, आम जीव उनको किताबें पढ़ कर दरियाफ़्त नहीं कर सकते। और पहिले तो ऐसा हाल है कि वह जतन और जुगत कि जो थोड़ा-बहुत असर और फ़ायदा दिखलावे, उसकी विधि किसी मज़हब में पाई नहीं जाती। फिर जीवों को कहाँ से और कैसे मालूम होगा ? और दूसरे, सब जीव आम तौर पर मज़हब की तरफ़ से ऐसे बे-परवाह हैं कि न तो किसी के दिल में खोज उन बातों का है, और जो कोई बतावे, तो कोई चित्त देकर सुनना भी नहीं चाहता और न उसके फ़ायदे और असर की परख या जाँच करनी मंजूर है। सिर्फ़ पुरानी रस्म और चाल और सीखों में, जो कि बुजुर्गों के वक़्त से जारी हैं, बग़ैर सोचने और विचारने उनकी असलियत और कैफ़ियत और नफ़ा और नुक़सान के, ज़ाहिरी तौर पर बर्ताव कर रहे हैं। और इसी को परमार्थ समझते हैं यानी इन्हीं कामों से अपनी मुक्ति या उद्धार की, बाद मरने के, आशा बाँध कर बे-फ़िक्र हो रहे हैं। और इतना ग़ौर और ख़्याल आम तौर पर किसी को भी नहीं है कि इस बात की जाँच करें कि आया उन कामों से जीते-जी भी कुछ फ़ायदा,

कि जिससे आइन्दा मुक्ति का सबूत या यकीन होवे, होता है कि नहीं।

२९—अब समझना चाहिये कि असल में शुरूआत मजहबों की किस तरह पर हुई और उनसे क्या मतलब और फ़ायदा मंजूर था। सो संतों के बचनों से ज़ाहिर होता है कि दुनिया में सब जीव आम तौर पर मन और इन्द्रियों के भोग और सुखों की प्राप्ति के लिये, देखा-देखी और सुना-सुनी के मुआफ़िक जतन करने लगे और हर एक मुआमले में ज़्यादा से ज़्यादा आशा और तृष्णा बढ़ाते गये कि जिसके सबब से ज़्यादा मेहनत उनको करनी पड़ी, चाहे वह आसा पूरी हुई या नहीं। और इस सबब से दुख-सुख भोगते रहे और रोग-सोग और तकलीफ़ वग़ैरा के दूर करने के लिये भी जो जतन कि उनको आम तौर पर जीवों की कार्रवाई देख कर मालूम हुये, करने लगे। पर जब उन से कुछ फ़ायदा न हुआ, तब दुखी रहे और कोई उनकी मदद न कर सका। और मौत के वक़्त तो कतई किसी का जतन पेश न गया और वह भारी दुख सब को भोगना पड़ा, और आइन्दा की हालत से सब को बे-खबरी रही कि आया दुख मिलेगा या सुख।

३०—जीवों की ऐसी हालत देख कर, यानी इन तीन क़िस्म के दुक्खों में जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ, उनका

कोई सहाई या मददगार न देख कर, वक़्त-वक़्त के महात्मा और बुद्धिमानों ने और कहीं कभी परमेश्वर या ब्रह्म ने आप औतार धर कर या अपनी कला भेज कर, ऐसी समझ सुनाई या जुगत बताई कि जिस से इन तीनों क़िस्म के दुक्खों की हालतों में थोड़ा-बहुत जीवों को सहारा या मदद मिले और यह समझ और जुगत हर एक ने अपनी-अपनी पहुँच और वाक़िफ़कारी और बुद्धि की ताक़त के मुवाफ़िक़ बताई और किताबों में लिखी। लेकिन हर एक समय के लोगों की समझ और कहन में थोड़ा-बहुत फेर और इख़्तिलाफ़ होता गया। और फिर जीवों की समझ के मुवाफ़िक़ (जिनकी हिदायत के वास्ते वे किताबें बनाई गईं) हर वक़्त में कमी-बेशी और इख़्तिलाफ़ बढ़ता गया कि जिसके सबब से हर मज़हब या गिरोह में बहुत से फ़िरक़े होते गये और असली मतलब कि जो उन किताबों के जारी करने का था, दिन २ गुम और गुप्त होता गया।

३१—खुलासा यह कि जिस-किसी ने जो समझ सुनाई या जुगत बताई, वे सब टटोलवाँ चले यानी नतीजे से सबब को ढूंढ़ते गये। और जिस क़दर कि उनको, बुद्धि की मदद और दुनिया के हाल और क़ुदरत की कार्रवाई को ग़ौर से मुलाहिज़ा और जाँच करने से जो कैफ़ियत मामूली पड़ी, वही उन्होंने ज़ाहिर की और उसी के मुवाफ़िक़

अपने २ देश के जीवों को कर्म और धर्म वग़ैरा की हिदायत की। और जब तक कि आम जीव नादान और बे-परवाह रहे, उन्होंने उनके बचन को दुरुस्ती से माना और उस के मुवाफ़िक़ जिस क़दर बन सका, ज़ाहिरी कार्रवाई की। और जब उनमें से बाज़े-बाज़ों की बुद्धि जागी या विद्या पढ़ कर थोड़ी-बहुत समझ आई और विचार उत्पन्न हुआ, तब वे पिछले महात्माओं और बुद्धिवानों और कलाधारियों के बचनों में इख़्तिलाफ़ और हेर-फेर देख कर उनकी जाँच और तौल करने लगे और कसरें निकाल कर उनकी कार्रवाई में अदल-बदल कर दिया या नई समझ और नई कारवाई जारी करी। और इख़्तिलाफ़ के सबब से हर फ़िरक़े में आपस में लड़ाई और झगड़े होने लगे और एक मज़हब वाला दूसरे पर या एक ही मज़हब वाले अपने मुख़्तलिफ़ फ़रीकों पर तान और तंज़ करने लगे और ग़लतियाँ और कसरें निकाल कर एक-दूसरे को झूठा या ओछा बताने लगा। और इस तरह से असल मतलब गुम हो गया और ज़ाहिरी और दिखावे और हिर्सा-हिर्सी की कार्रवाई बढ़ती गई।

३२—जो समझौती या मत कि औतारों या कलाधारियों ने जारी किये, उनमें धर्म यानी इख़लाक़ की बातें और रस्में थोड़ी-बहुत यकसाँ थीं। लेकिन जो जुगत कि उन्होंने बताई, वह निहायत कठिन और ख़तरनाक थी कि

जिसकी कार्रवाई आम तौर पर जीवों से बननी ना-मुमकिन मालूम हुई। वह सिर्फ़ लिखने और पढ़ने के वास्ते थी, और अमल दरामद उसका आम तौर पर जारी नहीं हुआ। और बाज़ों ने वह ज़ुगत ऐसे मुअम्मे और इशारों में लिखी कि वह आम जीवों की समझ में न आई और न उसकी कार्रवाई जारी हुई, सिर्फ़ ज़ाहिरी रस्मों और कार्रवाइयों में, कि जिनमें असली मतलब और फ़ायदा बहुत कम था, सब जीव अटक गये और उन्हीं की टेकें बाँध कर, एक दूसरे से ज़िद्द और तकरार करने लगे। और दुक्खों के दूर करने या उन में सहायता और मदद की प्राप्ति का ख़्याल किसी को नहीं रहा और इस सबब से सब जीव अपनी २ बुद्धि और समझ के मुवाफ़िक़ काम करने लगे। और नतीजा उसका यह हुआ कि बहुत कम जीव ऊँचे यानी सुख-स्थान में, जैसे स्वर्ग और बैकुन्ठ या बहिश्त या और ऊँचे लोकों में पहुँचे और बाकी कसरत से नीचे के लोक और नरकों वग़ैरा में यानी चौरासी योनियों में भरमे और कुल्ल और सच्चे मालिक का भेद और पता किसी को नहीं मिला और न उसके प्राप्ति के जतन और जुगत की ख़बर पड़ी।

३३—ऐसी हालत जीवों की देखकर, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल ने संतों को, जो उनके निज पुत्र या ख़ास मुसाहब हैं, दया करके संसार में भेजा कि पहिले

सत्तपुरुष का भेद और पता और धाम प्रगट करके (जो कि तीन लोक यानी माया के घेर के पार है) जतन और अभ्यास उसके प्राप्ति का, सुरत-शब्द मार्ग की अपने घट में कमाई करके बताया। लेकिन जो कि पुराने मुतफ़र्रिक मज़हब और उनकी शाख़ों का बहुत ज़ोर और शोर था, इस सबब से संत मत और उसकी जुगती की कार्रवाई बहुत कम जारी हुई। और हरचन्द उस वक़्त से जा-ब-जा साधू संत-मत के, जब-तब प्रगट होते गये और उन सब ने वही सुरत-शब्द मार्ग का उपदेश किया, लेकिन पढ़े-लिखे जीव बहुत कम इस मत में शामिल हुए। और फिर बहुत से जीव जो कि विद्यावान और बुद्धिवान न थे, और जात-पाँत में भी ज़रा कम दर्जे के थे, यानी अहँकारी और अभिमानी न थे, संत-मत में शामिल हो गये। लेकिन इनमें से सुरत-शब्द के अभ्यासी बहुत कम बल्कि थोड़े से ख़ास २ हुये और बाक़ी कोई न कोई ज़ाहिरी पूजा या रस्म में (मुवाफ़िक़ और मतों के, जो कि कसरत से रायज थे) अटक गये, और सिर्फ़ संतों की बानी और बचन के पढ़ने और रस्मी पूजा करने को ही अपने उद्धार का वसीला समझा। और बाज़े वाचक ज्ञानी हो गये, सो इनका हाल भी थोड़ा-बहुत, मुवाफ़िक़ और मतों के जीवों के समझना चाहिये, यानी सच्चे मालिक के धाम में इन में से सिवाय बाज़े ख़ास अभ्यासी और प्रेमियों के कोई न गया।

३४—इसी अर्से में ब-सबब गुम होने असली परमार्थ और रुजू होने आम तौर से कुल्ल जीवों के दुनिया और उसके भोग-बिलास की तरफ़, और भूलने कुल्ल-मालिक और उसके भजन बंदगी के, कर्मों का भार जीवों के सिर पर ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ता गया। और नतीजा उसका यह हुआ कि रोग-सोग और निर्धनता और कलह और क्लेश और आपस में लड़ाई और झगड़े बहुत बढ़ते गये और उम्रें भी जीवों की कम हो गईं और ज़मीन की पैदावार और कार्रवाई और आमदनी हर एक पेशे की बहुत घट गई, और अनेक तरह की चिन्ता और फ़िक्र ज़्यादा सताने लगे, और नक़ली और रस्मी परमार्थ की ज़ाहिरी कार्रवाई ज़्यादा होती गई कि जिसमें असली परमार्थ का फ़ायदा बहुत कम और मन और इन्द्रियों के भोग और दिखावे की कार्रवाई ज़्यादा हो गई और इस सबब से जीव कसरत से नीचे दर्जों में उतरने लगे। तब ऐसी हालत परेशानी और मुसीबत जीवों को देख कर, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल, अति दया करके, आप संत रूप धर कर प्रगट हुये और निहायत आसान जुगत इस माया के देश से निकल कर, निज घर यानी राधास्वामी देश में जाने की, प्रगट की और कुल्ल भेद अपना और अपने धाम का और हाल रास्ते और उसकी मंज़िलों का बयान फ़रमाया। और आम

तौर से जीवों को हेला दिया कि जो कोई देह और दुनिया के दुख-सुख और जन्म-मरन के चक्कर से बचना चाहे, वह उनकी यानी राधास्वामी दयाल की शरण में आवे, और जो सहज जुगत सुरत-शब्द मार्ग की, उन्होंने दया करके जारी फ़रमाई, उसका अभ्यास जिस क़दर बन सके, ग्रहस्थ में रह कर और अपना उद्यम और रोज़गार करते हुये नियम से रोज़मर्रा करे और चरणों में प्रीति और प्रतीत दिन २ बढ़ावे, तो वे अपनी दया से उसका उद्धार फ़रमावेंगे यानी निज घर में पहुँचा कर उसको अमर आनंद बख़्शेंगे।

३४—और जो जीव कि कर्म-धर्म और पिछली टेकों की पक्ष धारण करके, राधास्वामी दयाल के बचनों को नहीं सुनेंगे या नहीं मानेंगे और बे-फ़ायदा हुज्जत और तकरार उठा कर राधास्वामी मत से विरोध जनावेंगे, उनको सिवाय एक दफ़े हाल इस मत का सुनाने के, छेड़ने या उन से बहस करने का हुक्म नहीं है और न किसी को डराने या लालच दिखाने का हुक्म है, क्योंकि यह मत प्रेम का है और जब तक किसी के दिल में सच्चा शौक़ और प्रेम कुल्ल मालिक के चरणों में न आवेगा, तब तक उससे उस सहज जुगत का अभ्यास भी नहीं किया जावेगा। इस वास्ते यह सब जीव काल और माया के घेरे में रहे आवेंगे और वहीं बारम्बार ऊँची-नीची देह धर कर दुख-सुख भोगते रहेंगे।

३६—जो कोई राधास्वामी दयाल की शरण में आवेगा, उसका बचाव तीन क़िस्म के दुक्खों से थोड़ा-बहुत ज़रूर हो जावेगा। और यह हालत अपनी अभ्यास करके वह थोड़ी बहुत इसी जिंदगी में देख सक़ा है। और उन तीनों क़िस्मों के दुक्खों का ज़िक्र दफ़ा ३० में हो चुका है और दूसरी तरह उनको तीन ताप करके भी कहा है यानी मानसी दुख और तन का दुख जैसे बीमारी वग़ैरा और उपाधि का दुख जैसे लड़ाई-झगड़ा, क्लेश वग़ैरा और चौथा मौत का दुख जोकि सब में भारी है।

३७—राधास्वामी मत के उसूल ये हैं :—

(१) सच्चा कुल्ल-मालिक एक है और उसका धाम ऊँचे से ऊँचा है और वहाँ सिवाय प्रेम के, और कोई दूसरी वस्तु नहीं है यानी माया की मिलौनी क़तई नहीं है, और उस कुल्ल-मालिक का नाम राधास्वामी है और यह नाम ध्वन्यात्मक है यानी इसकी धुन घट २ में हो रही है, और यह नाम किसी आदमी का धरा हुआ नहीं है।

(२) और उस सच्चे मालिक का तख़्त घट-घट में मौजूद है और उसके मिलने का रास्ता भी घट में है और वह अपनी किरण यानी धारों के वसीले से सब जगह मौजूद है।

(३) जीव यानी सुरत कुल्ल-मालिक की अंश है, जैसे सूरज और उसकी किरण या सिंध और उसकी बूंद।

(४) कुल्ल-मालिक यानी दयाल देश के नीचे से एक धारा श्याम रंग की निकली जिसका नाम निरंजन और काल पुरुष है और मन इसकी अंश है। इसी ने संकल्प उठा कर और सत्त पुरुष से आज्ञा लेकर नीचे के देश में तिर-लोकी की रचना करी।

(५) इसी देश में शुद्ध माया का प्रथम ज़हूर हुआ। और निरंजन ने इस माया से मिल कर पहिले ब्रह्मांड की रचना करी और पुरुष-प्रकृति और माया-ब्रह्म और शिव-शक्ति और निरंजन-जोत इन्हीं दोनों के नाम हैं जो कि उतार के वक़्त नीचे के मुक़ामों पर धरे गये और यही निरंजन कुल्ल मतों का परमेश्वर और ख़ुदा है। सत्त पुरुष राधास्वामी का भेद किसी ने नहीं पाया।

(६) फिर निरंजन-जोत ने नीचे के देश में अपनी तीन धारों (यानी ब्रह्मा, विष्णु और महादेव) के वसीले से, देवताओं और मनुष्यों और चारों खानों के जीवों की रचना करी। इस देश में मलीन माया प्रकट हुई और उसकी मिलौनी से सब रचना हुई। इस देश को पिंड देश भी कहते हैं।

(७) इस हिसाब से, राधास्वामी मत के मुबाफ़िक़ कुल्ल रचना के तीन बड़े दर्जे हुये। पहिला प्रेम यानी निर्मल चैतन्य देश, जहाँ सिवाय प्रेम यानी चैतन्य के, और किसी की मिलौनी नहीं है। दूसरा, निर्मल चैतन्य और शुद्ध माया

देश, जहाँ ब्रह्मांड़ी रचना यानी ब्रह्म-सृष्टि हुई। तीसरा, निर्मल चैतन्य और मलीन माया देश, जहाँ पिंड यानी सूक्ष्म और स्थूल रचना हुई।

(८) मन जो कि निरंजन यानी काल पुरुष की अंश है, संकल्प-विकल्प यानी इच्छा का भंडार है और इन्द्रियाँ, जो कि देह में बतौर औज़ार के हैं, उनके वसीले से पिंडी मन इस लोक में इच्छा अनुसार कार्रवाई यानी कर्म करता है और यह देह और उसके औज़ार (इन्द्रियाँ) माया का कारज है।

(९) रोशनी और रोशन किरणियाँ चैतन्य और दयाल पुरुष की अंश यानी किरणियों का जहूरा है और अँधेरा और श्याम किरणियाँ काल पुरुष और माया का जहूरा और नमूना है।

(१०) पहिले बड़े दर्जे में, दयाल पुरुष यानी निर्मल चैतन्य का बासा है और दूसरे और तीसरे दर्जे में काल पुरुष और माया प्रधान हैं यानी इन दो दर्जों की रचना माया की हद्द में है।

(११) माया और उसका कारज हमेशा एक हालत में नहीं रहते यानी उसमें तग़ैयुर और तबद्दुल हमेशा जारी रहता है। इस सबब से इसकी हद्द में सुख और दुख व्यापते हैं और भाव और अभाव देहियों का, जो कि बतौर

ग़िलाफ़ के सुरत चैतन्य पर इस देश में चढ़े हुये हैं, होता रहता है, और ग़िलाफ़ या देही, माया के मसाले यानी पाँच तत्व और तीन गुणों से बनी है।

(१२) ब्रह्म और माया देश यानी रचना के दूसरे और तीसरे दर्जे में पाप और पुण्य का ज़हूर हुआ और इसी देश का नाम कर्म-देश है यानी कर्म का ज़हूर इन्हीं दो देशों में हुआ और यही कर्म, पुण्य और पाप कर्म कहलाये।

(१३) पुण्य और पाप कर्म की दो क़िस्में हैं—एक, असली और दूसरी, ज़ाहिरी और रस्मी।

(१४) असल पुण्य कर्म यह है कि संतों की जुगत का अभ्यास करके मन के मुक़ाम से वृत्ति यानी धार उठ कर ऊँचे देश यानी सुरत-चैतन्य के निज घर की तरफ़ रुजू होवे।

(१५) और असली पाप-कर्म यह है कि मन के मुक़ाम से वृत्ति यानी धारा उठ कर इन्द्रियों के घाट पर आवे और वहाँ से बाहर की रचना यानी भोगों और पदार्थों की तरफ़ रुजू करे।

(१६) असली पुण्य कर्म का यह फ़ायदा है कि मन और सुरत दिन २ ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ कर निर्मल होते जावेंगे, और निर्मल आनन्द पाते जावेंगे, और त्रिकुटी के मुक़ाम पर मन ठहर जावेगा, और सुरत उससे न्यारी होकर

दयाल देश में पहुँच कर अमर आनन्द को प्राप्त होगी, और वही जुगत, और जीवों को बता कर या उसकी कार्रवाई में मदद देकर उनको भी परम आनन्द का कराना, यही काम असली और सच्चा परमार्थ है।

(१७) और असली पाप-कर्म का नुक़सान यह है कि मन और सुरत का रुख़ नीचे और बाहर की तरफ़ रहेगा और उनकी धारें इन्द्रियों द्वारे जड़ पदार्थों की तरफ़ बिखरती रहेंगी और देहियों के साथ दुख-सुख सहती रहेंगी और जन्म-मरन का चक्कर नहीं छूटेगा। और, और जीवों को भी ऐसी कार्रवाई की शिक्षा या उसमें मदद देना और असली पुण्य कर्म के करने वालों यानी सच्चे परमार्थी जीवों को उनकी कार्रवाई से रोकना या उसमें विघ्न डालना, पाप कर्म में दाख़िल है।

(१८) रस्मी पुण्य कर्म यह है कि जो सामान क़ुदरती तौर पर या जमाअत के व्यवहार और रस्म के मुवाफ़िक या अपनी ज़ाती मेहनत और मशक़्क़त से हासिल हुआ है, उससे औरों को फ़ायदा और सुख पहुँचाना—मन, बचन और कर्म करके। इसका फ़ायदा यह होगा कि इस शख़्स को आइन्दा विशेष सुख मिलेगा और जो यह कर्म निष्काम बन पड़ेगा तो मालिक के चरणों में प्रेम और भक्ति पैदा होगी।

(१६) और ज़ाहिरी पाप-कर्म यह है कि औरों के सामान पर बद-नीयती के साथ नज़र डालना या उसको ज़बरदस्ती छीन लेना या और तरकीब से नाहक़, यानी ग़ैर-वाजिब और ना-मुनासिब तौर से ले लेना या उनकी किसी तरह से हक़-तल्फ़ी करना और नुक़सान पहुँचाना, या किसी तरह की तकलीफ़ और कष्ट देना, मन बचन और कर्म करके, और परमार्थी जीवों के साथ उपाधि उठाना और लड़ाई-झगड़ा करना।

(२०) असली पुन्य कर्म में प्रवृत्ति (यानी सुरत और मन को गगन में चढ़ाने का अभ्यास) बग़ैर मदद और सत-संग सतगुरु के, जो धुर-धाम का भेदी और बासी हैं, क़तई मुमकिन नहीं है और ज़ाहिरी और रस्मी पुण्य कर्म भी बग़ैर सतसंग सतगुरु के और अभ्यास उनकी जुगती के, निष्कामता के साथ बनना बहुत मुश्किल बल्कि ना-मुमकिन है।

(२१) राधास्वामी अथवा संत मत में महिमा और ज़रूरत सतगुरु की, जो धुर-धाम का भेद बतावें और जुगत चढ़ाने और चलाने मन और सुरत की उसकी तरफ़ समझावें, बहुत भारी है। बग़ैर उनके उपदेश और दया और मदद के, अभ्यास किसी से नहीं बन सक्ता है और न भेद सच्चे मालिक और उसके धाम और रास्ते का मिल सक्ता है।

(२२) संत सतगुरु,कुल्ल-मालिक का स्वरूप या उसके निज और प्यारे पुत्र हैं और जीवों का सच्चा और पूरा उद्धार जब कभी होगा,उन्हीं के वसीले से होवेगा। और उन्हीं की यह ताक़त है कि जीवों को चारों खानों में से निकाल कर, पहिले नर देही में, और फिर सतसंग और अभ्यास कराके ऊँचे लोकों में, और फिर निज धाम में पहुँचावें।

(२३) संत सतगुरु कुल्ल जीवों के सच्चे हितकारी हैं, और रक्षक और बंदी-छोड़ हैं, और वेही जीवों को सच्चे और कुल्ल-मालिक से मिला सक्ते हैं और उसी स्वरूप में यानी संत सतगुरु रूप में सच्चा और कुल्ल-मालिक जब २ मौज होती है, औतार धारण करता है।

(२४) जो किसी को संत सतगुरु न मिलें पर साध गुरू से मेला हो जावे, तो वे भी उसके उद्धार में पूरी मदद दे सक्ते हैं। और साध गुरू उनको कहते हैं कि जो संत सतगुरु या कुल्ल-मालिक से जब वह औतार धारण करे, मिल कर और उनकी दया से अभ्यास करके आधा रास्ता तै कर चुके हैं, यानी पार-ब्रह्म पद में पहुँचे हैं और निज धाम में पहुँचनहार हैं यानी संत सतगुरु गति को प्राप्त होने वाले हैं।

(२५) जो इन दोनों में से किसी से मेला न होवे, लेकिन इनका कोई सच्चा प्रेमी सतसंगी मिल जावे, तो

उससे भेद और जुगत लेकर खोजी और दर्दी परमार्थी अभ्यास शुरू कर सकता है, लेकिन कारज उसका संत सतगुरु ही बनावेंगे यानी सवेर-अबेर उसको ज़रूर दर्शन देकर दया फ़रमावेंगे।

(२६) हर एक जीव में चाहे औरत होवे या मर्द, तीन शक्तियाँ मौजूद हैं—पहिली, देह और इन्द्रियों की शक्ति, दूसरी, मन और विद्या बुद्धि की शक्ति, और तीसरी, सुरत यानी रूह की शक्ति। बग़ैर मथन यानी अभ्यास और मश्क़ के, इनमें से कोई शक्ति नहीं जाग सक्ती है। पहिली और दूसरी शक्ति के जगाने से संसारी फ़ायदे, जैसे धन और नामवरी और हुकूमत और इन्द्रियों के भोग वग़ैरा हासिल हो सकते हैं, और तीसरी यानी रूह की शक्ति के जगाने से जीव को परमार्थी लाभ प्राप्त हो सकता है यानी उसके मन और सुरत घट में चढ़ कर ऊँचे लोकों में और फिर वहाँ से कुल्ल-मालिक के धाम में पहुँच कर परम और अमर आनंद को प्राप्त हो सकते हैं। सब जीवों पर फ़र्ज़ है कि अपने जीव के कल्याण के वास्ते, थोड़ी-बहुत कोशिश, वास्ते जगाने रूह की शक्ति के, ज़रूर करें, और यह काम सतगुरु से मिल कर और उनकी जुगती की कमाई करके बन सकता है।

(२७) मुक्ति यानी सच्चे उद्धार की ज़रूरत सब जीवों को है। और राधास्वामी मत में सच्ची मुक्ति या उद्धार से

यह मतलब है कि जीव सुरत-शब्द का अभ्यास करके माया के घेर से निकल कर निर्मल चैतन्य देश यानी कुल्ल मालिक के धाम में पहुँच कर, अपने सच्चे मालिक और माता-पिता का दर्शन पावे। और जो कि वही धाम परम आनंद का भंडार है और अजर-अमर है और वहाँ किसी तरह का कष्ट और क्लेश और जन्म-मरन का दुख नहीं है, तो सुरत भी वहाँ पहुँच कर अजर-अमर हो जाती है, और परम आनंद को, जो सदा एक रस रहता है, प्राप्त होती है। इसी को सच्ची मुक्ति और पूरा उद्धार कहते हैं।

(२८) जो कोई ऐसी मुक्ति और उद्धार के हासिल करने के वास्ते जो जतन कि संतों ने बताया है, नहीं करेगा, वह माया के देश में ऊँच-नीच देही धारण करके, हमेशा दुख-सुख भोगता रहेगा और जन्म-मरन का चक्कर उसका नहीं छूटेगा। खुलासा यह कि बारम्बार अपनी वासना और कर्म अनुसार ऊँच-नीच देश और योनि में देह धारण करके दुख-सुख भोगता रहेगा।

(२९) जो कि कुल्ल-मालिक प्रेम का भंडार है, और सब जीव भी जो कि उसकी अंश हैं, प्रेम स्वरूप हैं, और कुल्ल कार्रवाई रचना में प्रेम से ही हो रही है, इस वास्ते जो कोई अपनी रूहानी शक्ति को जगाना चाहे, उसको चाहिये कि प्रेम अंग लेकर अभ्यास करे, और उस प्रेम को

दिन २ संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरणों में बढ़ाता जावे। इस तरक़्क़ी के साथ उस के मन और सुरत की चढ़ाई की भी तरक़्क़ी होती जावेगी और एक दिन पूर्ण प्रेम हासिल करके प्रेम भंडार में पहुँच जावेगा। बग़ैर सच्चे प्रेमी यानी शौक़ के, राधास्वामी मत में सुरत-शब्द अभ्यास की कमाई मुमकिन नहीं है।

३८—जो कोई कि राधास्वामी मत में शामिल हुआ, उसी को बड़ भागी समझना चाहिये, क्योंकि उसी का एक, दो या तीन जन्म में सच्चा उद्धार हो जावेगा और जितने कि परमार्थी प्रश्न और सन्देह जीवों के दिल में निसबत कुल्ल-मालिक और उसकी कुदरत और जीव और माया और रचना वग़ैरा के पैदा होते हैं, उन सब का जवाब जिससे शान्ति हो जावे, सिर्फ़ राधास्वामी मत में मिल सकता है। और किसी मत में बहुत से भारी सवालों के जवाब नहीं हैं और इसी सबब से लोगों को पूरा यक़ीन उस मत का नहीं होता है, और न उसकी जुगती या अभ्यास की कमाई हो सकती है और न सच्ची शान्ति हासिल हो सकती है। अब जीवों को इख़्तियार है कि अपने असली नफ़े या नुक़सान का ख़्याल करके, चाहें संतों के बचन को मानें या नहीं। और मालूम होवे कि यह मत कुल्ल-मालिक का है और इसमें सब जीव सर्व देशों और मतों के, जिनके मन में

सच्चा खोज सच्चे मालिक का है, शामिल होकर उसकी सहज जुगती का अभ्यास, बग़ैर छोड़ने घरबार या रोजगार के, आसानी से करके, अपने जीव का कल्यान कर सकते हैं यानी सच्ची मुक्ति को प्राप्त हो सकते हैं।

३६—जो कि यह बचन तूल-तवील यानी बहुत लंबा है, इस वास्ते इसका खुलासा नीचे लिखा जाता है :—

(१) देह और दुनिया और उसके भोग और जितने पदार्थ और सामान हैं, सब नाशमान और जड़ हैं, और इस वास्ते असत्य हैं।

(२) इस रचना में सत्त और चैतन्य और आनन्द स्वरूप, सुरत मालूम होती है कि जिसके सबब से देह हर एक जानदार की चैतन्य हो रही है। और यहाँ जड़-पदार्थ यानी भोगों से थोड़ा-बहुत रस मिलता है यानी कुल्ल देहियाँ, चाहे चैतन्य हैं या जड़, सुरत के सबब से, जो कि उन में प्रगट या गुप्त मौजूद है, सत्त नज़र आती हैं यानी ठहरी हुई हैं, और जब उसका वियोग होता है तो उसी वक़्त या थोड़े अर्से में उन देहियों का अभाव हो जाता है। इस वास्ते इस लोक में सुरत-चैतन्य ही सत्य है, और बाक़ी सब पसारा असत्य है।

(३) जो कि सुरतें, मुवाफ़िक़ देहियों के, अनेक हैं और देह में आती हैं और उसको छोड़ कर चली जाती हैं, तो

ज़रूर हुआ कि इसका कोई ख़ास मंडल या भंडार है और वही महा सत्य और महा चैतन्य और महा आनन्द स्वरूप है।

(४) देही पाँच तत्व और तीन गुन का (जो कि माया का मसाला है) कारज है और ये सब जड़ हैं और सुरत की चैतन्यता से चैतन्य होते हैं।

(५) इन तत्त्वों का भी अलेहदा २ मंडल मौजूद है और स्थूल तत्त्वों का मंडल जुदा २ नज़र आता है।

(६) ऊँचे देश का रचना लतीफ़ और सूक्षम नज़र आती है, फिर वहाँ तत्त्व भी सूक्षम होंगे और उनके मंडल भी ब-दस्तूर सूक्षम होंगे।

(७) यहाँ देखने में आता है कि सुरत की बैठक पाँच तत्त्वों और तीन गुणों और इन्द्रियों और मन के परे है, इस वास्ते सुरत का मंडल यानी भंडार इन सब, बल्कि सुरत के मक़ाम के परे, ऊँचे से ऊँचे मक़ाम में, होना चाहिये। सबूत इसका यह है कि इस रचना में एक सूरज-मंडल के ऊपर दूसरा सूरज-मंडल और दूसरे पर तीसरा और फिर चौथा और पाँचवा सब का अख़ीर है और वहीं से आदि धार प्रगट होकर इन सब मंडलों की रचना करती चली आई है, फिर वही अख़ीर मक़ाम, सुरत चैतन्य का निज भंडार है और वही कुल्ल-मालिक का धाम है और

बीच के मंडल एक का एक भंडार और मददगार और मालिक है।

(८) ज़ाहिर है कि असत्य यानी नाशमान और जड़ पदार्थों में दिल लगाने और बंधन पैदा करने से जब २ उन की हालत बदलती है और अभाव हो जाता है, तब दुख पैदा हो जाता है। और जब यह देह (जो सुरत के बैठने और चंद रोज़ रहने का इस लोक में मकान है) जरजरी हो जावेगी या क़ाबिल रहने के नहीं रहेगी, तब इसके छोड़ने के वक़्त महा दुख होगा।

(९) इस वास्ते अक़्लमंद और विचारवान आदमी को चाहिये कि जड़ और नाशमान यानी असत्य रचना में ज़रूरत और कार्रवाई के मुवाफ़िक़ दिल लगावे और बंधन पैदा न करे।

(१०) लेकिन जिस क़दर मुमकिन होवे, सत्य से प्रीति करे और उसकी प्राप्ति का मुनासिब जतन, इस ज़िंदगी में थोड़ा-बहुत कर लेवे, ताकि इस असत्य रचना के छोड़ने के वक़्त तकलीफ़ न होवे और महा सत्य से मिल कर अमर आनन्द को प्राप्त हो जावे।

(११) जो कि कुल्ल रचना धारों को है और यह सुरत-चैतन्य, उस महा सत्य यानी कुल्ल-मालिक की एक धार या किरण है (और इसी के सबब से इस लोक में रचना होती

है और ठहरी हुई है) तो मुनासिब है कि इसी सत्य और चैतन्य धार को पकड़ के इस के निज भंडार में पहुँचना चाहिये।

(१२) यह चैतन्य सुरत की धार, घट में, गुप्त जारी है, पर नज़र नहीं आती, लेकिन शब्द यानी आवाज़ इसका ज़हूरा और निशान है। इस वास्ते शब्द की धुन को पकड़ के चलने से इस धार का, उसके भंडार की तरफ़, उलटना मुमकिन है।

(१३) जो धुन को पकड़ के यानी आवाज़ को सुनता हुआ चलेगा, वह जहाँ से वह आवाज़ आती है, वहाँ पहुँच जावेगा, चाहे रास्ते में उसके अंधेरा है या उजाला।

(१४) अब आदि शब्द यानी आदि धार का, और भी रास्ते और मंज़िलों का, जहाँ २ से शब्द प्रगट हुआ है यानी धार जारी हुई है, भेद मिलना चाहिये, ताकि खोजी दर्दी मुक़ाम २ की धुन को पकड़ के रास्ता तय करे और आहिस्ता २ एक दिन धुर धाम में, जहाँ से कि आदि धार प्रगट हुई, पहुँच कर, महा सत्य और अमर आनन्द को प्राप्त होवे।

(१५) यह भेद और हाल, रास्ते और मंज़िलों का, (जो कि हर एक के घट में मौजूद है) शब्द भेदी और शब्द अभ्यासी से मिलेगा। उससे पूरी हिदायत और मदद

लेकर, कुल्ल-मालिक के चरणों में (जो कि महा सत्य, महा चैतन्य और महा आनन्द स्वरूप है) अपने मन में प्रेम पैदा करके चलना चाहिये, क्योंकि प्रेम से कुल्ल रचना की कार्रवाई हुई है और जारी है और सब काम प्रेम से हो रहे हैं, इस वास्ते बग़ैर प्रेम के यह रास्ता तै होना मुमकिन नहीं है ।

(१६) यह भेद और हाल मंज़िल और रास्ते का, और जुगत पैदा करने और बढ़ाने प्रेम की, उस महा सत्य और महा चैतन्य और महा आनन्द स्वरूप के चरणों में, जिस को कुल्ल और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल कहते हैं, राधास्वामी मत की बानी और बचन और उनकी संगत से मालूम हो सकता है, और किसी मत में जो इस वक़्त जारी हैं, इस भेद और जुगत वग़ैरा का साफ़ २ और ऐसे क़ायदे और आसानी के साथ कि जिस की कार्रवाई हर कोई कर सके, ज़िक्र भी नहीं है ।

(१७) राधास्वामी मत में सच्चे मालिक की क़ुदरत का भेद है, यानी जिस तरह कि सुरत, रूह, की धार का धुर मक़ाम से उतार हुआ है, उसी क़ायदे और रास्ते से उसके उलटाव और चढ़ाव का अभ्यास, राधास्वामी मत कहलाता है। इस मत में कोई बात या कोई तरीक़ा मनुष्य का बनाया हुआ या विद्या-बुद्धि से निकाला हुआ नहीं

है। और जो कि सिवाय सुरत चैतन्य को धार के उलटाने के, कोई और रास्ता या तरीक़ा सुरत के निज घर में पहुँचने का नहीं है, इस वास्ते सुरत-चैतन्य की धार यानी शब्द की धुन को पकड़ के यानी सुनते हुये चलना, यही सच्चा और पूरा रास्ता है। इसके सिवाय जितने रास्ते अंतर में चलने के हैं, वे सब ख़तरनाक और कठिन और ओछे यानी माया की हद्द में ख़तम होने वाले हैं। इस वास्ते उनसे सच्चा और पूरा उद्धार मुमकिन नहीं है।

४०—और मालूम होवे कि जो मतलब और फ़ायदा परमार्थी कार्रवाई से मंज़ूर है, वह भी इस वक़्त में सिर्फ़ उस जुगत यानी सुरत-शब्द की कमाई से, जो राधास्वामी मत में जारी है, हासिल होना मुमकिन है। यानी संसारी ख़्वाहिशों और तरंगों का पूरा होना या दूर हो जाना और मन और देही के सुक्खों में होशियारी और सम्हाल का रहना और उन के दुक्खों में रिआयत और बचाव, और मौत के महा दुक्ख के वक़्त सहायता, और बजाय तकलीफ़ के आनन्द की प्राप्ति, राधास्वामी मत के अभ्यासी को हासिल हो सकती है और ज़हूर इस कैफ़ियत का कुछ अर्से के अभ्यास के बाद अभ्यासी आप देख सकता है। और वही कैफ़ियत दिन २ बढ़ती जावेगी और एक दिन कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की दया से पूरी २ हालत (जिस का ज़िक्र ऊपर हुआ) पैदा होनी मुमकिन है।

बचन १५

परमार्थियों को तीन क़ायदों पर ख़्याल रखने से अभ्यास में विघ्न कम वाक़ै होंगे, और परमार्थ की तरक़्क़ी दिन २ होती जावेगी।

१—जो लोग कि राधास्वामी मत में शामिल हैं, और सच्ची चाह अपने जीव के सच्चे उद्धार और सच्चे मालिक के दर्शनों की, उसके निज धाम में पहुँच कर, रखते हैं, उनको मुनासिब है कि वास्ते तरक़्क़ी अपने अभ्यास के, और दुरुस्ती चाल-चलन परमार्थी और भी संसारी व्यवहार के, नीचे के लिखे हुए क़ायदों के मुवाफ़िक़, जिस क़दर बन सके, कार्रवाई करते रहें। और जो वे इन क़ायदों को अच्छी तरह समझ कर उन पर नज़र रक्खेंगे तो उम्मेद है कि उनको अपनी कसरें और भूल-चूक मालूम हो जावेंगी और फिर उनकी सम्हाल का जतन भी वे दुरुस्ती से कर सकेंगे।

२—और वे क़ायदे ये हैं :—

पहिला—जो कि सुरत ऊँचे मक़ाम यानी राधास्वामी दयाल के चरणों से उतर कर, पिंड में, आँखों के मक़ाम पर ठहरी है और वहीं बैठ कर इन्द्रियों के द्वारे कार्रवाई देह और दुनिया की कर रही है, सो इसको, राधास्वामी

मत की जुगत के मुवाफ़िक़, अपने निज घर की तरफ़ उल्टाना।

दूसरा—गुरु स्वरूप या मक़ामी स्वरूप का ध्यान करके मन और सुरत को ऊँचे देश में चलाना और ठहराना।

तीसरा—परमार्थ और स्वार्थ में जीवों के साथ इस तरह बरताव करना जैसा कि यह शख़्स, अपने साथ, औरों से बर्ताव चाहता है।

३—इन क़ायदों के मुवाफ़िक़ बर्ताव में जो विघ्न या दिक़्क़तें वाक़ै होती हैं, उनका थोड़ा सा ज़िक्र और हटाने का जतन आगे लिखा जाता है। उसका ख़्याल हर एक सच्चे परमार्थी को, जिस क़दर बन सके, रखना, और उस जतन को काम में लाना मुनासिब है, क्योंकि जो इस क़दर अहतियात और होशियारी नहीं की जावेगी, तो उन क़ायदों के मुवाफ़िक़ बर्ताव कम बनेगा और इस सबब से परमार्थी तरक़्क़ी में भी किसी क़दर कसर पड़ेगी।

४—पहले क़ायदे के मुवाफ़िक़ बर्ताव करने में यानी सुरत और मन की चढ़ाई में संसारी चाहें और तरंगें और इन्द्रियाँ विघ्न डालती हैं, यानी ये सुरत की धार को सिमटने और ऊपर की तरफ़ को चढ़ने से रोकती हैं, क्योंकि जब धार का रुख़ इन्द्रियों के द्वारे बाहर पदार्थों में या देह में नीचे की तरफ़ हुआ, तब उस का मुख ऊपर की तरफ़

मोड़ना और चढ़ाना मुश्किल होगा। इस वास्ते अभ्यासी को मुनासिब है कि आम तौर पर ज़रूरत के मुवाफ़िक़ बाहरमुख कामों और पदार्थों में बर्ताव करे और ख़ास तौर पर वक़्त अभ्यास के, मन और इन्द्रियों को रोक कर और सुरत की धार को समेट कर, अपने अन्तर में ऊँचे की तरफ़ आहिस्ता २ चलाने की आदत करे। जो इस तौर पर कार्रवाई की जावेगी, तो थोड़ा-बहुत रस और आनन्द सिमटाव और चढ़ाई का, मिलेगा और फिर इसी तरह कार्रवाई जारी रखने और उसको आहिस्ता २ बढ़ाने से ज़्यादा रस मिलेगा और देह और दुनिया की तरफ़ से किसी क़दर हटाव होता जावेगा।

५—और जो इस कार्रवाई में मन और इन्द्रियाँ संसारी तरंगें उठा कर ख़लल डालेंगी तो यकसाँ रस नहीं मिलेगा, यानी अभ्यास में कभी आनन्द और कभी रूखा-फीकापन रहेगा और उसी क़दर सुरत की चाल भी निज घर की तरफ़ सुस्त रहेगी।

६—जो कोई अपने मन और इन्द्रियों की हर बक़्त निगहबानी और चौकीदारी करता रहेगा और फ़िज़ूल तरंगों और ख़्वाहिशों को उठने से रोकता रहेगा, तो वह अभ्यास के समय भी उनकी थोड़ी-बहुत सम्हाल कर सकेगा, नहीं तो अभ्यास के वक़्त अनेक तरह के ख़्याल और

गुनावन पैदा होंगे और अभ्यासी को उनकी ख़बर भी नहीं होगी, यानी मन उसका बजाय भजन और ध्यान के, अनेक ख़्यालों में बहता रहेगा। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि जिस क़दर बन सके, अभ्यास के वक़्त मन और इन्द्रियों की रोक और सम्हाल ज़रूर की जावे, ताकि थोड़ा-बहुत रस भजन और ध्यान का मिलता रहे और फिर उस में आहिस्ता २ तरक़्क़ी भी होती जावे।

७—दूसरे क़ायदे के बर्ताव में इस क़दर अहतियात चाहिये कि वक़्त ध्यान और भजन के, पहले स्वरूप का ख़्याल करके उसको अपने सनमुख रक्खे, तो मन और इन्द्रिय जो कि स्वरूप में लगने की आदत रखते हैं, किसी क़दर निश्चल होकर स्थान पर ठहरेंगे या शब्द में लग जावेंगे, और उस वक़्त दूसरी सूरतों का ख़्याल कम आवेगा और शब्द भी साफ़ सुनाई देगा। और जो स्वरूप को संग नहीं लिया जावेगा तो अपने स्वभाव के मुवाफ़िक़ मन और इन्द्रिय अनेक ख़्याल यानी गुनावन में अक्सर चंचल रहेंगे।

८—जब कि ध्यान के वक़्त थोड़ा-बहुत स्वरूप नज़र आ जावेगा या भजन के वक़्त शब्द साफ़ सुनाई देगा तो मन और सुरत उसमें बे-तकल्लुफ़ लग जावेंगे, और दूसरा ख़्याल नहीं उठावेंगे। लेकिन जिस वक़्त कि गुनावन का ज़ोर होगा, उस वक़्त स्वरूप को थोड़ा ज़ोर देकर

ख़्याल से सन्मुख रखने में गुनावन हट जावेगी। और जो गुनावन कम न होवे, तो किसी शब्द के प्रेम की भरी हुई कड़ियों के स्वरूप के सन्मुख गाने या बतौर आरती के पाठ करने से बहुत फ़ायदा होगा।

९—गुरु स्वरूप के ध्यान की और उसको सन्मुख रखने की महिमा इस सबब से ज़्यादा है कि उसका ख़्याल करते ही मन और इन्द्रिय परमार्थी यानी प्रेम के घाट पर आ जावेंगे, और तब भजन और ध्यान का रस ज़्यादा मिलेगा और गुनावन बहुत कम पैदा होगी। लेकिन यह बात जब दुरुस्त बनेगी जब कि अभ्यासी को गुरु स्वरूप में गहरा परमार्थी भाव और प्यार होगा। इसी सबब से राधास्वामी दयाल ने अपनी बानी और बचन में गुरु भक्ति पर ज़्यादा ज़ोर दिया है यानी प्रथम गुरु चरणन में प्रेम पैदा करने के वास्ते ज़ोर देकर हिदायत की है।

१०—मालूम होवे कि बग़ैर तीव्र बैराग के, संसार और भोगों की तरफ़ से, और बग़ैर गहरे प्रेम और अनुराग के, राधास्वामी दयाल के चरणों में मन और सुरत, शब्द में, जैसा कि चाहिये, नहीं लग सकते, और वक़्त भजन के गुनावन और तरंगें बहुत उठती रहेंगी। लेकिन जो अभ्यासी को गुरु स्वरूप में भाव और प्यार है तो उसको अगुवा यानी ख़्याल से सन्मुख रखने से, मन किसी क़दर निश्चल हो

सकता है, क्योंकि साकार स्वरूप में प्यार करने की उसको आदत है और गुरु स्वरूप के सन्मुख होने पर उसके मन और इन्द्रिय, दर्शन और वचन में लग कर फ़ौरन परमार्थी घाट पर आ जाते हैं और संसारी ख़्याल हट जाते हैं, और दूसरा फ़ायदा यह है कि गुरु स्वरूप को संग लेने में अभ्यासी को, मिस्ल मक़ामी स्वरूप के, स्थान २ पर उसको बदलने की ज़रूरत न होगी यानी वही गुरु स्वरूप उसको सत्तलोक तक (जहाँ तक कि साकार रचना है) दर्जे-ब-दर्जे सूक्षम होता हुआ पहुँचा देगा, और अभ्यासी का भी स्वरूप इसी तरह बदलता जावेगा।

११—जो कोई मक़ामी स्वरूप के आसरे चलेगा तो उसको भी यही फ़ायदा हासिल हो सक्ता है, बशर्ते कि वह स्थान स्थान पर थोड़ा-बहुत प्रगट होता जावे और जो प्रगट होने में कुछ देरी हुई या कसर रही, तो उस रूप में ख़्याल से ध्यान करने में वैसा प्यार नहीं आवेगा, जैसा कि गुरु स्वरूप में आ सकता है, और इस सबब से गुनावन यानी मन की चंचलता जल्दी कम या दूर न होवेगी और रस भी कम आवेगा। अब अभ्यासी को चाहिए कि अपने शौक़ और हालत को परख कर, जिस तरह उसको फ़ायदा ज़्यादा मालूम पड़े, उसी तरह अपने ध्यान की सम्हाल करे, क्योंकि बग़ैर ध्यान के, मन और सुरत का सिमटाव, जैसा कि

चाहिये, जल्दी न होवेगा। अलबत्ता जिस किसी को शब्द खुल जावे, उसको इस क़दर ज़रूरत ध्यान पर ज़ोर देने की नहीं होगी। लेकिन ऐसा हाल कुल्ल अभ्यासियों का नहीं हो सकता, किसी बिरले उत्तम अधिकारी की ऐसी हालत होवेगी। इस वास्ते कुल्ल अभ्यासियों को, अव्वल, ध्यान पर ज़्यादा ज़ोर देना मुनासिब और ज़रूर है।

१२—मालूम होवे कि गुरु स्वरूप का दर्शन ऊँचे के मक़ाम पर खिंच कर होता है और मुवाफ़िक और दुनिया की सूरतों के जब ख़्याल करो उस वक़्त यह स्वरूप प्रगट नहीं हो सकता। यह स्वरूप, अंतरजामी पुरुष, आप दया करके, अपने भक्त की प्रीति और प्रतीत बढ़ाने के वास्ते धारण करता है और ऊँचे देश में प्रगट होकर दर्शन देता है। इसी सबब से अक्सर इस स्वरूप का दर्शन स्वप्न-अवस्था में जबकि मन और सुरत का ज़्यादा खिंचाव हो जाता है, होता है, और अभ्यास के वक़्त कभी २ ऐसी दया होती है। इस वास्ते अभ्यासी को जब कभी गुरू स्वरूप का दर्शन अभ्यास के वक़्त या स्वप्न-अवस्था में होवे, तो उसको ख़ास मालिक की समझना चाहिये और उसी स्वरूप को चित्त में धारण करके अभ्यास के वक़्त उस का ध्यान करना चाहिये।

१३—तीसरे क़ायदे के मुवाफ़िक़ बर्ताव करने से अभ्यासी प्रेमी को, उसकी परमार्थी कार्रवाई और संसारी

व्यवहार में बहुत फ़ायदा हासिल होवेगा, यानी उसके हाथ से किसी को किसी क़िस्म की तकलीफ या दुख नहीं पहुँचेगा। और जो कि परमार्थियों को हिदायत है कि जहाँ तक बन सके या मुनासिब होवे, परमार्थी जीवों के साथ दीनता और प्यार और दया भाव के साथ बर्ताव करें। और आम जीवों के साथ दया भाव रक्खें, तो इस तरह बर्ताव करने से, सब की प्रसन्नता हासिल होगी, और मालिक भी प्रसन्न होकर भक्ति और प्रेम की बख़्शायश करेगा और दिन २ हालत बदलती जावेगी और झगड़े-रगड़े और ईर्षा और विरोध वग़ैरा परमार्थी की कार्रवाई में विघ्न नहीं डालेंगे, और हृदय उस का दिन २ शुद्ध और कोमल होता जावेगा और मालिक के चरणों के प्रेम से भरता जावेगा।

१४—जो परमार्थी का धन का भी थोड़ा नुक़सान हो जावे और झगड़ा-रगड़ा और विरोध हट जावे तो ऐसे नुकसान की बरदाश्त करना मुनासिब है और सख़्त-सुस्त और तान के बचन को सहना और क्षमा कर के एवज़ न लेने में परमार्थी का ज़्यादा फ़ायदा है, ब-निस्बत इसके कि ओछे और क्रोधी आदमियों से मुक़ाबिला करना और तकरार बढ़ाना। खुलासा यह कि परमार्थी को इस बात की अहतियात ज़रूर चाहिये कि उसका मन संसारी मुआमलों के सबब से चिन्ता में न पड़े और गदला और

मैला न होवे, और भजन में इस क़िस्म के ख़्याल विघ्न न डालें, नहीं तो उसके रस और आनन्द में भी फ़र्क़ पड़ेगा और यह हर्जा व-निस्बत और छोटे नुकसान या ज़रा सी मन की तकलीफ़ के, बहुत भारी है। और उसका बचाव हर हालत में जहाँ तक मुमकिन होवे और मुनासिब मालूम पड़े, ज़रूर करना चाहिये।

बचन १६

सतसंगियों को मौज और रज़ा पर क़ायम होना चाहिये और दुख-सुख की हालत में भरोसा दया का रख कर परमार्थ में ढीले और रूखे-फीके नहीं होना चाहिये।

१—कुल्ल मतों में जो संसार में जारी हैं और राधास्वामी मत में खास कर, हुक्म है कि जहाँ तक मुमकिन होवे, सच्चे परमार्थी को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने प्रीतम कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की मौज के साथ हर काम में मुआफ़िकत करे, यानी जो वे अपनी मौज से करें, चाहे उस में सुख होवे या दुख, उस को मंज़ूर और क़ुबूल करे और सुख के वक़्त मन में फूले नहीं, और अपने मालिक को भूल न जाय, और दुख के वक़्त दुख का रूप न बन जावे, और अपने मालिक से नाराज़ या रूखा-

फीका न हो जावे। दोनों हालतों में ऐसी समझ क़ायम रक्खे कि जो कुछ होता है, वह मालिक की मौज से होता है और उसमें मसलहत और फ़ायदा है, क्योंकि जब मालिक को अपना सच्चा पिता और हितकारी और सर्व-ससर्थ माना, तब बग़ैर उनकी मौज के कुछ नहीं हो सकता और जो मौज कि वे करेंगे, वह अपने बालक के वास्ते ज़रूर फ़ायदेमंद होगी, चाहे उसका नतीजा जल्द मालूम पड़े या देर से, और उस में, पहिले, परमार्थी फ़ायदे पर नज़र होगी, और फिर दुनिया के फ़ायदे पर।

२—जिस किसी से कि मौज के साथ मुआफ़िक़त बिल्कुल नहीं की जा सकती है, तो जानना चाहिये कि वह शख़्स निपट दुनियादार और कर्मी है और उस का मन अपने तन और इन्द्रियों में, और भी कुटुम्ब-परिवार और दुनिया के सामान और भोग-बिलास में, बँधा और फँसा हुआ है और जब किसी तरह का हर्ज या तकलीफ़ या नुक़सान इन में होता नज़र आता है, तब फ़ौरन बे-कला और घबराहट के साथ (उसकी बरदाश्त न कर के) पुकारने लगता है, और निहायत रंज मान कर और दुखी होकर उस का चित्त बिगड़ जाता है, और जिस-किसी के ताल्लुक़ का वह काम होवे, उसकी शिकायत करता है और भी मालिक से आज़ुर्दा-ख़ातिर होकर, उस की कार्रवाई

पर तान और तंज़ के बचन कहता है और कितने ही अर्से तक दुखी रह कर आख़िर को लाचारी के साथ सब करता है

३—लेकिन जो कि थोड़े-बहुत परमार्थी हैं और सच्चे मन से मालिक की भक्ति में शामिल हुए हैं और उसकी दया और मेहर हर दम माँगते रहते हैं और जो अंतर अभ्यास कि उनको संत अथवा राधास्वामी मत के मुआफ़िक़ बताया गया है, उस को भी नियम से करते हैं और कुछ २ आनन्द और रस भी अंतर में पाते हैं, पर अभी उनके मन में दुनिया और उस के भोगों और पदार्थों की क़दर और चाह बनी हुई है, तो वे भी मौज के साथ जैसा चाहिये मुआफ़िक़त नहीं कर सकेंगे, और हरचंद वक़्त तक-लीफ़ और रंज और नुक़सान के, चित्त उन का दुखी होवेगा और मालिक की तरफ़ से भी किसी क़दर रूखा-फीका हो जावेगा, पर सतसंग के बचन याद करके और संतों की बानी पढ़ कर, थोड़ी-बहुत होशियारी आ जावेगी, और ऐसी समझ धारण करके कि मालिक सर्व समर्थ है और बग़ैर उसके हुक्म के, कुछ नहीं हो सकता, संतोष के घाट पर आजावेंगे और ज़्यादा पुकार और फ़रियाद और शिकवा और शिकायत और किसी को बुरा-भला कहना और मालिक से बेज़ार हो जाना, दुनियादारों की तरह से नहीं करेंगे ।

४—दूसरे दर्जे के परमार्थी जीव, सख़्ती और सुस्ती के वक़्त यानी तकलीफ़ और नुक़सान की हालत में, थोड़े दुखी हो कर, जल्द सतसंग के परमार्थी बचन याद लाकर और अपने अभ्यास में थोड़ा-बहुत मशग़ूल होकर शुकराने के घाट पर आजावेंगे, यानी ऐसी समझ धारण करके कि जो रंज और तकलीफ़ या हर्ज और नुक़सान वाक़ै हुआ, वह न मालूम किस क़दर भारी था, सो मालिक की दया से बहुत कम यानी मन भर का सेर भर रह कर उन पर गुज़रा, और वह फल उनके पिछले कर्मों का था, सो उस दया का शुकराना अपने मालिक के चरणों में बजा लाकर, ब-दस्तूर अपनी भक्ति यानी प्रीति और प्रतीत चरणों में क़ायम रक्खेंगे और ज़्यादा तर तवज्जह भजन में करके और मालिक की दया और रक्षा की परख अपने अंतर में करके, सुखी हो जावेंगे और सुख के वक़्त भी होशियार रह कर मालिक का शुकराना करके, अभ्यास में ज़्यादा तवज्जह करेंगे।

५—इन जीवों के चित्त का बंधन संसार और उसके भोगों और पदार्थों में, ब-निस्बत ऊपर की क़िस्म के जीवों के, किसी क़दर हलका और ढीला होगा और उनकी क़दर भी ब-निस्बत परमार्थ के किसी क़दर कम होगी, यानी परमार्थ का भाव उनके दिल में ज़्यादा होगा।

६—अव्वल दर्जे के परमार्थी जीवों की प्रेम की हालत बहुत ज़बर होगी और उनके चित्त में संसार और उसके पदार्थों का बंधन भी बहुत कम होगा और उसके तरक़्क़ी की चाह भी बहुत कम होगी, सिर्फ़ इस क़दर कि जिस में औसत दरजे पर संसार में गुज़ारा हो जावे और परमार्थ का काम भी जारी रहे। और उनको शरण और भरोसा सच्चे मालिक की दया का बहुत मज़बूत होगा और उसकी मौज को अपने मन की चाह पर, जहाँ तक मुमकिन होगा, हमेशा मुक़द्दम रक्खेंगे यानी उनके चित्त में मालिक की मौज के साथ मुआफ़िक़त करने की मुख़्यता रहेगी और उसके मुकाबिले में अपने मन की चाह को ज़बर नहीं क़रार देंगे और हर हालत में, चाहे दुख होवे या सुख, मालिक की दया के आसरे और भरोसे रह कर उस की बरदाश्त करेंगे। और वे किसी भी वक़्त मालिक की तरफ़ से बे-मुख नहीं होंगे यानी जो मौज होगी, उसको अपने हक़ में मुफ़ीद समझ कर शुक्र करते रहेंगे और ऐसी समझ अपने मन में रक्खेंगे कि जो कुछ कि तकलीफ़ या दुख होता है, वह अपने कर्मों का फल है, मगर उसके साथ मालिक की सहायता बराबर जारी है और उस दुख या तकलीफ़ का नतीजा भी उनके हक़ में बेहतर होगा यानी उस में कर्मों की सफ़ाई और मन और इन्द्रियों की गढ़त

और भजन की तरक़्क़ी होवेगी। यह हालत सच्ची और पूरी शरण वालों की है। जब किसी वक़्त किसी हालत की बरदाश्त कम होवेगी, तो वे उस वक़्त मालिक के चरणों में प्रार्थना, वास्ते हासिल होने ताक़त बरदाश्त के, करेंगे और ऐसी सूरत में उनकी दुआ भी जल्द मंज़ूर होगी यानी अन्तर में किसी क़दर सहायता और शान्ति मालूम होवेगी।

७—इससे ज़्यादा दर्जे के जो परमार्थी हैं, वे साध होंगे जिनकी पहुँच दसवें द्वार तक है। और जो कि वे पिंड और ब्रह्मांड के ऊपर पहुँचे हैं, उनको कोई दुख-सुख देह और दुनिया का नहीं छू सक़्ता है। वे हर हाल में रज़ा के दर्जे पर बर्तेंगे यानी सर्व अंग करके मालिक की मौज के साथ मुआफ़िक़त करेंगे। उन के कर्मों का हिसाब कुछ नहीं रहा और पिंडी और ब्रह्मांडी मन और माया भी नीचे रह गये। उन की रहनी और कुल्ल बर्ताव मौज के अनुसार समझना चाहिये। सिवाय जीवों के हित और उपकार के, और कार्रवाई दुनिया की, उन से कम या बिल्कुल नहीं बन पड़ेगा।

८—अब मालूम होवे कि जो कुछ सख़्ती या तकलीफ़ सच्चे परमार्थियों पर गुज़रती है, वह बग़ैर हुकम और मौज सच्चे मालिक के नहीं आती। और सच्चे परमार्थी से

मतलब यह है कि जिसके हृदय में सच्ची चाह सच्चे मालिक के धाम में पहुँचने की है और जिसने सच्ची शरण राधास्वामी दयाल की धारण की है। सो ऐसी सख़्ती और तकलीफ़ के भेजने में, इन में से कोई न कोई मतलब ज़रूर होगा।—(१) पिछले बाक़ी-माँदा यानी शेष कर्मों का काटना, (२) तन मन और इन्द्रियों को गढ़त करना कि जिससे सुरत की चढ़ाई आसान और तेज़ होवे, (३) झीना मान और अहंकार दूर करना, (४) मन की कसरें और भूल-चूक का दूर करना, (५) भोगों से हटाना और उन में स्वाभाविक झुकाव और प्यार का दूर करना, (६) संसार और उस के पदार्थों की तरफ़ से चित्त में उदासीनता लाना, (७) हर तरह से और हर हालत में आसरा और भरोसा मालिक की दया का मज़बूत करना, और उसी तरफ़ से सहायता की आस रखनी और माँगनी, (८) बढ़ाना प्रीति और प्रतीत का मालिक के चरणों में और तरक़्क़ी देना शौक़ का, वास्ते प्राप्ति दर्शन और पहुँचने निज धाम के, (९) तोड़ना कुल्ल संसारी आसरे और भरोसे और बल का, अन्तर में, (१०) ढीला करना प्रीति और बन्धन का कुटम्ब-परिवार और संसारी लोगों में।

९—अब ख़्याल करो कि ऐसी सख़्ती या तकलीफ़ या कुछ दुनिया के नुक़सान को, कि जिस में ऊपर के लिखे

हुए फ़ायदे हासिल होवें, ऐन दया मालिक की समझना चाहिये, न कि उस की तरफ़ बे-रहमी (निरदईपन) और सख़्त-गीरी (कठोरता) का इल्ज़ाम लगा कर उसके चरणों से बे-मुख होना और अपनी शरण और प्रीति-प्रतीत में ख़लल और विघ्न डाल कर रूखे-फीके हो जाना।

१०—सच्चे परमार्थी को मुनासिब नहीं है कि मालिक को सर्व समर्थ जान कर ऐसी आशा बाँधे कि जितने काम और चाहें दुनिया की उस के दिल में होवें, वे सब मुवाफ़िक़ उसकी ख़्वाहिश के पूरे हो जावें, और नहीं तो मालिक की दयालुता और समर्थता में कसर है। ऐसी समझ निहायत मूर्खता और नादानी, भक्ति के क़ायदे की, ज़ाहिर करती है।

११—सच्चे परमार्थी को जानना चाहिये कि जब वह सच्चे मालिक की शरण में आया और असली मतलब उस का यह है कि जैसे बने तैसे अपने मालिक के धाम में पहुँच कर और उसका दर्शन हासिल कर के, परम आनन्द को प्राप्त होवे तो वह मालिक उस की दरख़्वास्त को वास्ते प्राप्ति ऐसे सामान और तरक़्क़ी दुनिया और उसके भोग-बिलास के, कि जो उसके चलने और रास्ता तै करने में विघ्न डाले और रोक लगावे, कैसे मंज़ूर कर सक़ा है ? क्योंकि ऐसा सामान उस को देना उसके साथ दुश्मनी

करना है यानी उसके परमार्थी काम में ख़लल डालना है। मालिक का दर्शन बग़ैर हटने के, दुनिया और उसके भोगों से, किसी तरह नहीं मिल सकता। तो जबकि मालिक सच्चे परमार्थी पर दया करेगा, तो उसके मन को आहिस्ता २ दुनिया और उसके सामान से हटावेगा, न कि और ज़्यादा सामान देकर उसमें फँसावे और उसकी ख़लासी और ज़्यादा मुश्किल कर देवे।

१२—इस वास्ते सच्चे परमार्थियों को चाहिए कि सिवाय ज़रूरी सामान के, जो लायक़ औसत दर्जे के गुज़ारे के होवे, और कुछ मालिक से न माँगें और उससे उसी को चाहें, यानी दर्शन और निज धाम के प्राप्ति की चाह हर हालत में ज़बर और मुक़द्दम रक्खें। और जब कोई हालत इस क़िस्म की आवे कि जो उनके मन के बरख़िलाफ़ होवे, उसको मालिक की दया का आसरा और भरोसा रख कर जहाँ तक बने, बरदाश्त करें। और जो उस में ज़्यादा घबराहट या बे-कली पैदा होवे, तो अपने अंतर में चरणों की तरफ़ तवज्जह कर के, सहायता और ताक़त बरदाश्त की, माँगें और शिकवा और शिकायत न करें।

१३—यह क़ायदा सच्ची भक्ति का है। यानी भक्त को जहाँ तक बन सके, अपने भगवंत की मर्ज़ी और मौज पर क़ायम रहना चाहिए और जो वह इसके वास्ते पसंद करे,

वही इसको भी पसंद करना चाहिए और अपनी ख़्वाहिश बर-ख़िलाफ़ उसकी मौज के पेश नहीं करना चाहिए। लेकिन जो मन न माने तो अपने हाल और ख़्वाहिश को वक़्त अभ्यास के, चरणों में अर्ज़ कर देना मुनासिब है। आइन्दा भगवंत यानी मालिक की मौज है कि जो मुनासिब होवे, तो मंज़ूर करे, और जो ना-मुनासिब समझ कर मंज़ूर न करे, तो भक्त को चाहिए कि मौज के साथ, जैसे बने, तैसे मुआफ़िक़त करे।

१४—अब मालूम होवे कि परमेश्वर यानी त्रिलोकी-नाथ ने भी कहा है कि जो कोई मेरी भक्ति करता है, उसको मैं तीन चीज़ें देकर दुनिया और उसके भोग और उसकी मुहब्बत से बचाता हूँ। और वे तीन चीज़ें ये हैं—(१) थोड़ी बीमारी, (२) निंदा और निरादर संसारियों की तरफ़ से, (३) निर्धनता यानी सिर्फ़ गुज़ारे के मुआफ़िक़ धन और सामान देना। और उन भक्तों ने इन चीज़ों को परमेश्वर की दात और दया समझ कर ख़ुशी से मंज़ूर और क़ुबूल किया।

१५—पिछले वक़्तों में जो गुरू हुए, वे अक्सर गृहस्थियों को उपदेश नहीं देते थे और पहिली शर्त उन की यही होती थी कि घर और कार-बार छोड़ कर उन के पास आवे और नज़दीक रह कर सेवा करे। और औरतों को बिल्कुल उपदेश नहीं देते थे और अभ्यास भी उनका ऐसा कठिन और

ख़तरनाक था कि हर एक जीव से उसका बन पड़ना मुश्किल, बल्कि ना-मुमकिन था।

१६—बर-ख़िलाफ़ इस के, अब इस ज़माने में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल ने ऐसी दया फ़रमाई कि गृह स्थियों को, चाहे औरत होवे या मर्द, बिला छुड़ाने घर-बार और रोज़गार के, सहज जुगत, वास्ते उन के सच्चे उद्धार के, समझाते हैं और गृस्थ में ही उन से अभ्यास करा के, उन के जीव का कल्यान करते हैं और सब तरह से अपने सेवकों की परमार्थ और स्वार्थ में रक्षा करते हैं।

१७—अब बा-वजूद ऐसी मेहर और दया के, जिससे परमार्थ की सच्ची कार्रवाई बहुत आसान हो गई है, जो जीव संसार के सामान की ज़्यादा तलबी करें और उस के न मिलने या थोड़ी सी सख़्ती और तकलीफ़ या नुक़सान में घबराकर, मालिक की तरफ़ से रूखे-फीके हो जावें या परमार्थ के छोड़ने को तैयार होवें, तो किस क़दर अफ़सोस का मक़ाम है और कैसी उनकी नादानी और ग़फ़लत और अभागता है और परमार्थ की क़दर और चाह की किस क़दर कमी उनके दिल में मालूम होती है ?

१८—अब राधास्वामी दयाल की ख़ास और विशेष दया का हाल बयान किया जाता है कि इस ज़माने में जीवों को निहायत निबल और दुखी देख कर, बजाय सेवक-स्वामी

के, पिता-पुत्र का भाव परमार्थ में जारी फ़रमाया, और जीवों को हुक्म दिया कि जैसे बने तैसे थोड़ी-बहुत लगन और प्रीति चरणों में लगाओ और सतसंग करके और बानी और बचन पढ़ कर, जैसे बने, तैसे, प्रतीत, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके सुरत-शब्द मार्ग की, हृदय में बसा कर, जिस क़दर बन सके नियम के साथ दो बार, जितनी देर मुमकिन होवे, अभ्यास करो और अपनी उमंग के मुआफ़िक़ जिस क़दर आसानी से बन सके तन-मन-धन की कुछ सेवा करो और जैसी-तैसी शरण लेकर राधास्वमी दयाल की दया का भरोसा, वास्ते अपने जीव के उद्धार के, मन में रक्खो और जहाँ तक बन सके जीवों को मन, बचन और कर्म करके सुख पहुँचाओ, और नहीं तो अपने मतलब के वास्ते किसी को दुख मत दो। जो इस हुक्म के मुआफ़िक़ कार्रवाई करेगा तो राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से उस के जीव का कारज आप बनावेंगे और तीन या चार जन्म में उसको दयाल देश में पहुँचा देंगे और उसकी भूल-चूक और कसरों को दया करके पिता की तरह माफ़ करेंगे और उस के पिछले-अगले कर्मों को सहज २ काट कर, काल और कर्म के घेरे से निकाल लेवेंगे। और कर्मों के काटते वक़्त भी दया और सहायता बराबर जारी रहती है।

१६—इस ज़माने के जीवों से, सिवाय उत्तम अधिकारी यानी अव्वल दर्जे के भक्तों के, भक्ति के क़ायदे के मुवाफ़िक़ बर्ताव करना और रहनी दुरुस्ती के साथ रहना, मुश्किल है। इस वास्ते राधास्वामी दयाल, जहाँ तक मुमकिन होता है, बहुत सख़्त तकलीफ़ या मुसीबत अपने सच्चे और प्रेमी भक्तों पर नहीं आने देते हैं, और जो उनके कर्म या करनी ज़्यादा नाक़िस हैं और उनके फल का भोग भी ज़्यादा सख़्त है, तो भी थोड़ी-बहुत ख़ास दया और सहायता फ़रमाते हैं यानी या तो किसी न किसी तरह उस कर्म भोग की सख़्ती कम कर देते हैं या ताक़त और सामान उसके बरदाश्त का बख़्शते हैं, और जब २ जो कोई दर्द की हालत में सच्ची पुकार करे, उसकी थोड़ी-बहुत सुनवाई भी होती है। ख़ुलासा यह है कि इस समय में हर तरह से दया और प्यार करना जीवों पर मंज़ूर है, बशर्ते कि वे चरणों में थोड़ी-बहुत प्रीति व प्रतीत लावें और दिन २ अपने परमार्थ के बढ़ाने की थोड़ी-बहुत चाह रखते होवें और दुनिया के लोगों की निंदा-स्तुति पर ख़्याल न करके, अपना रिश्ता राधास्वामी दयाल और उनको संगत से जोड़े रहें, और चाहे कभी रूखे-फीके या ढीले हो जावें, लेकिन अपना नाता न तोड़ें यानी परमार्थी कार्रवाई, मिस्ल अभ्यास वग़ैरा के, छोड़ न देवें और सतसंग से मेल ब-दस्तूर जारी

रक्खें। ऐसे जीवों का जो पूरा २ बर्ताव मुआफ़िक़ भक्ति के क़ायदों के नहीं भी होगा यानी उसमें कुछ २ कसर रहेगी तो भी राधास्वामी दयाल उनकी सहायता करेंगे और अपनी दया का बल देकर जिस क़दर कार्रवाई ज़रूरी और मुनासिब होगी, उन से करावेंगे और भूल-चूक और कसरों पर नज़र नहीं करेंगे।

२०—अब कुल्ल जीवों को चाहिए कि ऐसी दया और मेहर का शुकराना अपने मन में लाकर, जैसे बने तैसे, राधास्वामी दयाल की शरण में आवें और सुरत-शब्द मार्ग का उपदेश लेकर और राधास्वामी मत के उसूल और क़ायदों को अच्छी तरह समझ कर, जिस क़दर बन सके, अभ्यास नियम से हर रोज़ करें, तो चन्द रोज़ में दया और मेहर की परख उनको आती जावेगी और अपने सच्चे उद्धार का सबूत अपने अन्तर में उनको इसी ज़िन्दगी में थोड़ा-बहुत मिलता जावेगा कि जिससे उनकी प्रीति और प्रतीत चरणों में दिन २ बढ़ती जावेगी और रफ़्ता २ एक दिन उनके जीव का पूरा कारज बन जावेगा।

बचन १७

वर्णन सच्चे प्रेमी और परमार्थियों की हालत और रहनी और पकड़ और व्यवहार का, और यह कि ऐसी हालत और रहनी कैसे आवे।

पहला भाग

वर्णन हाल और रहनी वग़ैरा सच्चे प्रेमियों की

१—जो सच्चे प्रेमी राधास्वामी मत में शामिल हैं, उनकी हालत ऐसी होनी चाहिए कि हमेशा चित्त में अपने प्रीयतम राधास्वामी दयाल के चरणों का, और भी सतगुरु के स्वरूप का, ख़्याल बना रहे और मन में उमंग, वास्ते दर्शनों के, अकसर उठती रहे और दर्शनों के न मिलने से किसी क़दर बे-कली रहे।

२—जब मौज से दर्शन प्राप्त होवें तो सर्व-अंग कर के मन और चित्त मगन हो जावें और किसी दूसरे काम और बात की उस वक़्त सुध न रहे, और यही चित्त चाहता रहे कि बराबर दर्शन करते रहें और बचन सुन कर खिलते रहें और उस वक़्त देही के कारज का भी ख़्याल बहुत कम, बल्कि बिल्कुल न रहे और प्यार और भाव चरणों में बढ़ता रहे।

३—ऐसे प्रेमी दूसरे सच्चे प्रेमियों को देख कर और उनसे मिल कर बहुत खुश होंगे और आपस में उन के प्यार भाव ऐसा ही होगा कि जैसे निज कुटुम्बियों में होता है।

४—और कुल्ल परमार्थी जो सतसंत और अभ्यास में शामिल होवें, उन प्रेमियों को प्यारे लगेंगे और उन सब के साथ उनका बर्तावा ऐसा होगा, जैसे कि कोई अपने बिरादरी के लोगों के साथ बर्तता है।

५—और जो लोग कि थोड़ी बहुत परमार्थ की चाह लेकर या खोज की नज़र से सतसंग में आवें, उनको भी देख कर सच्चे प्रेमी खुश होंगे और जिस क़दर मुमकिन होगा, उनको उनकी परमार्थी कार्रवाई में मदद देने को तैयार रहेंगे।

६—लेकिन जो कोई चतुराई या कपट की बातें सतसंग में आकर बनावेंगे या परख और जाँच सतगुरु और उनके मार्ग की करेंगे या अपनी समझ या अपना जुदा मत समझाने और पेश करने की नज़र से चर्चा करेंगे, या संत मत को ओछा साबित करने के इरादे से वाद-विवाद करेंगे, वे लोग सच्चे प्रेमियों को प्यारे नहीं लगेंगे, क्योंकि वे सच्चे ग्राहक परमार्थ के नहीं हैं, बल्कि वे सच्चे और पूरे परमार्थ के निन्दक और विरोधी हैं, और बजाय

सतसंग में प्रेम की चर्चा करने और सुनने के, अपनी ओछी समझ और चतुरई की बातें पक्षपात की नज़र से पेश करके सतसंग में विघ्न डालेंगे। सच्चे प्रेमी ऐसे लोगों को अभागी समझ कर उनसे मेल नहीं करेंगे और न उनका सतसंग में बार २ आना पसन्द करेंगे।

७—सच्चे प्रेमी आम तौर पर कुल्ल जीवों से दीनता और दया भाव के साथ बर्ताव करेंगे, लेकिन उन लोगों से जो कि निपट संसारी हैं या सच्चे परमार्थ के निन्दक और विरोधी हैं, दिल से मेल नहीं करेंगे, बल्कि उनसे दूर रहना चाहेंगे।

८—सच्चे प्रेमी ज़रूरी कारोबार अपने ग्रहस्थ और रोज़गार के करके, बाक़ी वक़्त अपना परमार्थी कार्रवाई यानी सतसंग और अभ्यास वग़ैरा में लगावेंगे और अपने प्रीयतम की याद और चिंतवन में लौलीन और मगन रहेंगे और जो किसी से बात-चीत भी करेंगे तो ख़ास कर परमार्थी, या उसमें परमार्थ की तरफ़ को झुकाव रहेगा।

९—संसारी व्यवहार में भी परमार्थी क़ायदे का उन को ख़्याल ज़्यादा रहेगा यानी जहाँ तक मुमकिन होगा, अपने मतलब के वास्ते किसी को तकलीफ़ या नुक़सान नहीं पहुँचावेंगे और जहाँ तक मुमकिन होगा, आप दूसरे के हाथ से थोड़े नुकसान की बरदाश्त करने को तैयार रहेंगे।

१०—सच्चे प्रेमी जहाँ तक मुमकित होगा, किसी को तान या तंज़ का बचन नहीं कहेंगे, बल्कि आप ऐसे बचन दूसरों की ज़बान से सुन कर चुप्प हो रहेंगे।

११—निन्दकों की मलामत और बुराइयों पर उन को अजान और मूर्ख समझ कर नाराज़ नहीं होंगे और न उनको किसी किस्म की तकलीफ़ पहुँचाने का, निंदा को एवज़ में, इरादा करेंगे, बल्कि जो मुमकिन होगा, उनको सच्ची समझौती देकर निंदा करने से बचावेंगे, और जो वे बचन नहीं मानेंगे तो उनके साथ हठ नहीं करेंगे।

१२—सच्चे प्रेमी हमेशा दीनता और ग़रीबी के साथ गुज़रान करेंगे और किसी के झगड़े और बखेड़े के कामों में, बे-ज़रूरत ख़ास, नहीं शामिल होंगे और न किसी की बे-सबब और बिला ज़रूरत बुराई-भलाई करेंगे और जो किसी दो शख़्सों में तकरार या झगड़ा होगा तो जहाँ तक बनेगा, उनका आपस में तसफ़िया और मेल करावेंगे, और न तो किसी दो आदमियों को लड़ावेंगे और न उनकी लड़ाई में दख़ल और मदद देंगे।

१३—सच्चे प्रेमी, ग़रीब और मुहताज और दुखिया जीवों पर रहम करेंगे और जो मुमकिन होगा, तो उनकी थोड़ी-बहुत मदद करेंगे।

१४—दुनिया के व्यवहार और कामों में मन से लिप्त नहीं होंगे और न बहुत उनकी अपने मन में गुनावन करेंगे, बल्कि अपने मालिक की मौज और दया के आसरे, जैसा मुनासिब नज़र आवेगा, उस मुआफ़िक़ उन कामों को जल्द कर के फ़ारिग़ होने का इरादा रक्खेंगे।

१५—खान-पान और पहनने-ओढ़ने वग़ैरा में जहाँ तक मुमकिन होगा, अपनी इच्छा और पसन्द को दख़ल नहीं देंगे, बल्कि औरों की पसन्द और इच्छा के मुआफ़िक़ जो सामान बन जावेगा, उसी में राज़ी रहेंगे।

१६—अपने दिल से दुनिया की तरक़्क़ी और नामवरी और मान-बड़ाई की चाह नहीं उठावेंगे, लेकिन जो मालिक अपनी मौज से उन को सामान बख़्शेगा, उस में दीनता और डर के साथ, कि कहीं उन के परमार्थ में ख़लल न पड़े, बर्ताव करेंगे।

१७—उनके दिल में मज़बूत बन्धन किसी के साथ नहीं होगा, सिर्फ़ अपने प्रीयतम मालिक के चरणों की गहरी और मज़बूत पकड़ होगी, और भक्ति की रीति और क़ायदों की सम्हाल हर वक़्त तहे-दिल से करते रहेंगे, और आस और विश्वास अपने मालिक के चरणों में दृढ़ और मज़बूत रक्खेंगे।

१८—जहाँ तक मुमकिन होगा, किसी मुआमले में अपनी चाह को मुक़द्दम नहीं रक्खेंगे, बल्कि अपने प्रीयतम

कुल्ल-मालिक की मौज और दया को हर काम में ज़बर और अगुवा रक्खेंगे।

१६—परमार्थ की तरक़्क़ी और और दर्शनों की प्राप्ति के वास्ते अलबत्ता बारम्बार बिन्ती और प्रार्थना करेंगे, पर इस में भी मौज और दया का आसरा मुक़द्दम रक्खेंगे और चाहे जैसी हालत बेकली और घबराहट और तड़प की, कभी २ उस पर गुज़रे, पर धीरज और विश्वास दृढ़ रख कर अपने प्रीयतम से कभी रूखे-फीके या आज़ुर्दा-ख़ातिर नहीं होंगे, और देर-अबेर में उसकी मौज की मसहलत को समझ कर, ज़्यादा और फ़िज़ूल घबराहट और जल्दी नहीं मचावेंगे।

२०—सरूती और सुस्ती और संसारी रंज और दुख की, जहाँ तक बनेगा, अपने प्रीयतम की मौज और दया के आसरे बरदाश्त करेंगे, और हमेशा शुक्र के घाट पर क़ायम रहेंगे, और रज़ा के दर्जे के मुआफ़िक़ बर्तने के वास्ते कोशिश करते रहेंगे।

२१—ऐसे सच्चे प्रमियों की कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल, और भी सतगुरु को, ज़्यादा ख़ातिरदारी मंज़ूर रहती है, और सिवाय ऐसी हालत के, कि जिसमें उन का कोई ख़ास और भारी फ़ायदा परमार्थी मुतसव्वर होवे, वह कुल्ल-मालिक दयाल उनकी तकलीफ़ या दुख या रंज की बरदाश्त नहीं कर सकता है, और ऐसी ख़ास हालत में

भी फ़ौरन अन्तरी दया और सहायता उन पर फ़रमाता है कि जिससे वह दुख और तकलीफ़ उनको ज़्यादा न व्यापे, यानी हर तरह से उनकी दिलदारी, हर वक़्त, उनके सच्चे पिता कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल को मंज़ूर रहती है, जैसा कि इन कड़ियों में कहा है :—

दोहा

जीवत मितंक हो रहो, तजो खलक़ की आस।
रक्षक सम्रथ सतगुरू, मत दुख पावे दास ॥ १ ॥

मैं सेवक समरत्थ का, कभी न होय अकाज।
पतिवर्ता नाँगी रहे, तो वाही पति को लाज ॥ २ ॥

२२—जिस किसी की ऐसी सच्ची और पूरी भक्ति है, उसको कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सतगुरु का ख़ास प्यारा समझना चाहिये, क्योंकि मालिक को भक्ति प्यारी है और सिवाय निज भक्तों के, और कोई उसके महल में दख़ल नहीं पा सकता।

२३—परमेश्वर यानी त्रिलोकी नाथ ने भी औतार स्वरूप से भक्ति और भक्त की निसबत अपना गहरा प्यार ज़ाहिर किया है, जैसा कि इन कड़ियों में लिखा है :—

चौपाई

भक्ति हीन बिरंच क्यों न होई।
सब जीवन सम प्रिय मम सोई॥
भक्तिवंत जो नीचहु प्राणी।
प्राण से अधिक सो प्रिय मम जानी॥

इसका अर्थ यह है कि जो ब्रह्मा भी है और उस में भक्ति यानी चरणों का प्रेम नहीं है, तो सब जीवों के समान मुझको प्यारा है, लेकिन जो कोई कैसा ही नीच हो और उसके मन में भक्ति यानी चरणों का प्रेम है, वह मुझ को अपने प्राणों से भी ज़्यादा प्यारा है।

२४—जो ग़ौर की नज़र से देखा जावे तो भक्ति (यानी दीनता, प्यार और सेवा) रचना में कुल्ल जीवों को, बल्कि जानवरों को भी और उन में खूख़्वार जानवरों तक, निहायत प्यारी है, और इन सब में वही सुरत कुल्ल-मालिक की अंश मौजूद है, तो फिर कुल्ल-मालिक को भी भक्ति प्यारी है। और हरचन्द वह किसी की दीनता और सेवाका मुहताज नहीं है, पर कोई जीव, बिना भक्ति यानी प्रेम के, उसके पास नहीं पहुँच सकता है और न बग़ैर प्रेम के उससे अभ्यास, रास्ता तै करने का, बन सकता है। इस वास्ते सिर्फ़ जीवों के कल्यान और फ़ायदे के लिये, भक्ति और प्रेम मार्ग, उस सच्चे कुल्ल-मालिक ने, निहायत दया

और प्यार से जारी फ़रमाया, कि जिस से जीव आसानी के साथ माया और काल के जाल से निकल कर, उसके निज धाम और चरणों में बासा पावें, और काल-क्लेश और जन्म-मरन के दुक्खों से बच कर, अमर और परम आनन्द को प्राप्त होवें।

२५—अब कुल्ल जीवों को जो कि सच्चा कल्याण और आनन्द चाहते हैं, लाज़िम है कि सच्चे कुल्ल-मालिक के चरणों में प्रेम प्रीति करें और सच्ची दीनता, वास्ते प्राप्ति उस के दर्शन के, चित्त में धारण करें, तो उन के जीव का कारज बनना मुमकिन है। किसी और तरह से हरगिज़ २ वे सच्चे मालिक के दरबार में नहीं पहुँच सक्ते।

२६—और भक्ति कुल्ल-मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के चरणों में करना चाहिये, तब पूरा काम बनेगा। और जो और किसी की भक्ति करेंगे तो भी कार्रवाई वैसी ही करनी पड़ेगी, लेकिन सच्चा और पूरा कारज नहीं बनेगा, यानी काल और माया के घेरे से बाहर नहीं जावेंगे और इस वास्ते जन्म-मरन की फाँसी नहीं कटेगी, और बारम्बार देह धारण करके, दुख-सुख सहना पड़ेगा।

भाग दूसरा

वर्णन उस जुगत का कि जिससे ऊपर की लिखी हुई हालत और रहनी वग़ैरा हासिल होवे

२७—जो कोई दरियाफ़्त करे कि ऐसी हालत और रहनी जिसका ऊपर ज़िक्र हुआ, कैसे आवे, तो कहा जाता है कि पहिले तो जौहर यानी सच्चा शौक़ कुल्ल-मालिक से मिलने का जीव के दिल में पैदा होना चाहिये। और यह शौक़, सच्चे प्रेमी और सतगुरु के संग से पैदा हो सकता है। और इसी शौक़ की तरक़्क़ी जतन करके पूरा होने का नाम, सच्चा और पूरा परमार्थ है।

२८—अब मालूम होवे कि कुल्ल जीव भक्ति और प्रेम के क़ायदे और बर्तावे से बे-ख़बर हैं, यानी बालकपन से संसारी और ख़ुद-मतलबी यानी स्वार्थी लोगों का संग करके, उनकी तबिअत और स्वभाव और रहनी दुनियादारों के मुवाफिक होती है, और मालिक का भाव और प्यार और डर, और भी जीवों का हित, उनके मन में बहुत कम होता है। और जो कि परमार्थी रहनी और स्वभाव दुनियादारों के चाल-चलन के बर-ख़िलाफ़ है, इस वास्ते सच्चे परमार्थी का कुछ अर्सा चाहिये कि सतगुरु और प्रेमियों का संग और अंतर अभ्यास करके, अपनी

पुरानी आदत यानी संसारी स्वाभाव और चाल-चलन को बदले। और इसके वास्ते जो जतन कि संतों ने दया करके फ़रमाये हैं, वे आगे लिखे जाते हैं :—

(१) सतगुरु और प्रेमी जन का संग और उनके बचनों को होशियारी से सुनना और समझना, और जो २ अपने लायक़ होवें, उनकी कार्रवाई शुरू करना।

(२) कुल्ल-मालिक और सतगुरु और प्रेमियों में सच्चा प्यार मन में पैदा होना, और उनका सतसंग करके कुल्ल-मालिक के दर्शनों का शौक़, दिल में बढ़ते जाना।

(३) उपदेश लेकर अंतर में शौक़ के साथ स्वरूप का ध्यान और भजन यानी शब्द का अभ्यास करना और उसका थोड़ा-बहुत रस और आनन्द लेना।

(४) सतसंग के वचन सुन कर और बानी का पाठ करके, अपने मन की हालत और कसरों को जाँचना, और शरमाना और उनकी दुरस्ती और सम्हाल के वास्ते सच्चा इरादा और कोशिश करना।

(५) सच्चे प्रेमियों की रहनी और उनका हाल सुन कर और पढ़ कर और सतसंग में अपनी आँख से देख कर अपनी हालत और रहनी को, उसी के मुआफ़िक़, बदलने का सच्चा इरादा और कोशिश करना।

(६) जो २ नाक़िस और संसारी समझ और पकड़, अपने मन में, संसारियों के संग से बस गई हैं, उसको सतसंग के बचन विचार कर छोड़ना, और परमार्थी रीति और व्यवहार की समझ दृढ़ करना और उसके मुआफ़िक़ अपना बर्ताव दुरुस्त करना।

(७) जो २ आदत और स्वभाव, संसारियों के संग से, मन और इन्द्रियों के, पड़ गये हैं, उनको आहिस्ता आहिस्ता छोड़ना।

(८) जो २ फ़िजूल ख़्वाहिशें और तरंगें, दुनिया की तरक़्क़ी और ऐश और आराम की, मन में समा रही हैं, उनको सतसंग के बचन सुन कर और समझ कर मन से निकालना और आइन्दा वैसी तरंगों को न उठने देना।

(९) दूसरों के स्वभाव और बर्ताव और चाल, जो अपने तईं परमार्थी समझ लेकर बुरे और नाक़िस मालूम होवें, उनको अपने मन में परखना, और जो वैसी ही हालत या उसका बीजा अपने में मालूम पड़े तो उसको वैसा ही बुरा और नाक़िस समझ कर शरमाना और उसके दूर करने की कोशिश करना।

(१०) जब किसी से व्यवहार या काम पड़े तो पहिले मन में सोचना कि ऐसे काम में अपना मन दूसरे की तरफ़

से कैसा बर्ताव चाहता है और फिर जहाँ तक बने, दूसरों के साथ वैसा ही बर्ताव करना।

(११) जो बचन कि अपने तईं कड़वे और कठोर और तान और ईर्षा वग़ैरा के मालूम पड़ें, तो अहतियात करना कि उस क़िस्म के बचन आप दूसरे से न बोले, क्योंकि उसको भी, वे बचन वैसे ही कड़वे और कठोर और तान के मालूम होकर, उसका भी चित्त दुखी करेंगे।

(१२) किसी की ग़ीबत में यानी पीठ पीछे, बुराई न करना और न किसी दूसरे से सुनना और जो किसी अपने प्यारे को समझाना या सम्हालना मंजूर है, तो उसके सामने जो सच्चा हाल किसी की बुराई-भलाई का होवे (और उस शख़्स से अपने प्यारे को बचाना मुनासिब है) तो ऐसे हाल के कहने में दोष नहीं है।

(१३) किसी से ईर्षा या विरोध मन में न लाना, और जो कोई अपने साथ कुछ सख़्ती भी करे, तो उसको मालिक की मौज समझ कर, जहाँ तक बने, बरदाश्त करना, और उससे एवज़ लेने का इरादा न करना।

(१४) अपने मन और इन्द्रियों की, जहाँ तक बने, ऐसी सम्हाल रखने की कोशिश करना कि फ़िज़ूल जगह और भोगों और पदार्थों में न दौड़ें, और न पीछे उनकी गुनावन और ख़्याल उठाना, नहीं तो अभ्यास में ख़लल पड़ेगा।

(१५) खान-पान वग़ैरा में अहतियात मुनासिब रखनी, और जहाँ तक मुमकिन होवे, भोगों की इच्छा न उठानी। अनिच्छित और मौज से जो प्राप्त होवे, उस में भी ना-मुनासिब और ना-जायज़ का विचार करके बर्तना।

(१६) दुनिया और उसके कुल्ल सामान को नाश्मान और सच्चा संगी न समझ कर उसकी फ़िज़ूल चाह न उठानी, और जो सामान मौज से मुयस्सर आवे, उसका अपने मन में अहंकार न लाना, और दीनता और ग़रीबी हमेशा चित्त में रखनी।

(१७) दुनिया के अमीर और बड़े आदमियों से बे-ज़रूरत मिलने की आदत न करे।

(१८) ख़ुशामदी और स्तुति करने वालों की बातें चित्त देकर न सुने, और उनकी झूठी तारीफ़ पर अपने मन में न फूले, बल्कि उनको फौरन ख़ुशामद और तारीफ़ की बातें बनाने से मना कर दे।

(१९) दुनियादारों और कपटी भक्तों से मेल कम करना, नहीं तो ये धोखा देकर भक्ति की रीति और उसके कामों में बर्ताव करने में कुछ न कुछ विघ्न डालेंगे।

(२०) भक्ति की कार्रवाई में नुमायश और दिखावे और अपनी तारीफ़ कराने की नज़र से कोई काम न करना, क्योंकि उसका फल बहुत ओछा है। मुनासिब यह

है कि जो काम करे, वह मालिक और सतगुरु की प्रसन्नता के लिये करे, कि उसमें भक्ति और प्रेम की तरक़्क़ी होगी।

(२१) मन और माया के छल और लुभाव से राधास्वामी दयाल और सतगुरु का बल लेकर, जहाँ तक बने, होशियार रहना, क्योंकि साधना की अवस्था में यह अकसर विघ्न डालते हैं और कनक-कामिनी की चाट दिखा कर सच्चे अभ्यासी को रास्ते में रोकते हैं।

(२२) जिस क़दर अपने से, बिला दिक़्क़त, बन सके, जीवों के हित और उपकार में मदद देना, लेकिन सतगुरु और प्रेमी जन की सेवा मुक़द्दम समझना यानी उसकी मुख्यता चित्त में रखना।

(२३) प्रेमी और भक्त जन का, भक्ति के क़ायदों के मुआफ़िक़, कार्रवाई और सेवा वग़ैरा में, उमंग के साथ, संग देना और आप भी भक्ति की रीति में बर्तना।

(२४) संसारी लोगों का डर और शर्म करके भक्ति की कार्रवाई नहीं छोड़ना।

(२५) सतगुरु और प्रेमियों से, अन्तर और बाहर, सफ़ाई से बर्तना और कपट न करना।

(२६) अपने परमार्थी की तरक़्क़ी की चिन्ता और फ़िक्र दिल में हमेशा रखना, और जिस कार्रवाई में फ़ायदा मालूम होवे, वही काम करना।

(२७) मालिक की याद दिल में, जिस क़दर बन सके, बढ़ाना।

(२८) कुल्ल-मालिक और सतगुरु की प्रसन्नता, जैसे मुमकिन होवे, हासिल करना और इस बात का दिल में खौफ़ और ख़्याल रखना कि कोई काम ऐसा न बने कि जो उनकी मौज और मरज़ी और पसन्द के बर-ख़िलाफ़ होवे।

(२९) अभ्यास के वक़्त, जहाँ तक बने, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सतगुरु की दया का बल लेकर संसारी ख़्यालों को मन में न आने देना, और जो आवें तो उन को हटाना।

(३०) बक़्तन-फ़वक़्तन, चरण-रस लेते रहना और अभ्यास, जितनी दफ़े (चाहे थोड़ी देर हो) दिन-रात में बन सके, दुरुस्ती से करते रहना, यहाँ तक कि उसका किसी क़दर आधार हो जावे।

२९—इस दुनिया में भूल और भ्रम और ग़फ़लत का बड़ा ज़ोर है। इस सबब से ये जितने अंग कि ऊपर वर्णन किये गये, पढ़ कर या सुन कर किसी शख़्स में आसानी से नहीं आ सकते हैं, जब तक कि (१) चेत कर, अन्तर और बाहर, सतसंग न किया जावेगा और (२) जन्म-मरन और देहियों के साथ दुख-सुख भोगने का ख़ौफ़

मन में न आवेगा और (३) दुनिया और उसके सामान को नाशमान और मालिक यानी कुल्ल करतार की क़ुदरत और कारीगरी को प्रगट देख कर, उसका खोज और उसके धाम में पहुँच कर उसके दर्शनों का शौक़ पैदा न होवेगा।

३०—जब ऐसा ख़ौफ़ और शौक़ पैदा होगा, तब सतगुरु और सतसंग की तलाश करके उसमें शामिल होगा, और बचनों को, चित्त से सुन कर और विचार कर, उनके मुआफ़िक़ कार्रवाई करने की हिम्मत और इरादा मज़बूत करेगा, तब अलबत्ता ये शुभ अंग आहिस्ता २ आते जावेंगे और विकारी और नाक़िस अंग, जो सच्चे परमार्थ के हासिल होने में विघ्न-कारक हैं, दूर होते जावेंगे।

३१—अब मालूम करना चाहिये कि बिन मेहर और दया कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के, ऐसा ख़ौफ़ और शौक़, जिसका ऊपर ज़िक्र लिखा गया, और खोज सतगुरु और सतसंग का, किसी के दिल में पैदा नहीं हो सकता। और जिसके दिल में ऐसा खौफ़ और शौक और खोज, दुनिया के हालात और कारोबार पर नज़र करके और मौत का ख़्याल लाकर पैदा हुआ उसी को मेहरी और संस्कारी और अधिकारी समझना चाहिये, और उसी से सच्चे परमार्थ की कार्रवाई दुरुस्ती से बन पड़ेगी, और वही शख़्स दुनिया के रस्मी और झूठे परमार्थ से सच्ची नफ़रत करेगा।

३२—जिस मेहर और दया का ज़िक्र ऊपर हुआ, यह प्रथम दर्जे यानी शुरू की समझना चाहिये। और वही मेहर और दया ऐसे शौक़ीन जीव को सतगुरु और सतसंग से मिला देगी, और वही मेहर और दया उसकी परमार्थी कार्रवाई के साथ दिन २ बढ़ती जावेगी, यानी वह शख़्स दया के बल से शुभ अंगों को ग्रहण करता जावेगा और नाक़िस और विकारी अंगों को आहिस्ता २ छोड़ता जावेगा, और अन्तर में अभ्यास करके उसको रस और आनन्द मिलता जावेगा, और इस तरह उसकी ताक़त और परमार्थी शौक़ और भक्ति की कार्रवाई दिन २ बढ़ती जावेगी, और फिर उसी का नाम सच्चा प्रेमी समझना चाहिये।

३३—ऐसे पूरे अधिकारी और प्रेमी जीव के दिल में, तेज़ खटक, अपने सच्चे उद्धार और प्राप्ति दर्शन कुल्ल-मालिक की, पैदा होगी और दिन २ ज़्यादा तेज़ होती जावेगी। और उसके साथ वैराग और अनुराग भी उसके चित्त में बढ़ते और पकते जावेंगे और राधास्वामी दयाल के चरणों की शरण भी गहरी और मज़बूत होती जावेगी। और फिर ऐसे प्रेमी पर राधास्वामी दयाल ख़ास दया फ़रमा कर उसकी सुरत को अन्तर में चढ़ावेंगे और माया और काल के घेर से निकाल कर, रफ़्ता २ एक दिन धुर मक़ाम में पहुँचा कर, उसका कारज पूरा कर

देंगे यानी अपने दर्शनों का परम आनन्द और विलास बख़्शेंगे।

३४—मालूम होवे कि जो कोई इस बचन को पढ़ कर या सुन कर ऐसा ख़्याल करेगा कि बग़ैर दया के कुछ नहीं हो सकता है और इस वास्ते मुझ को कुछ करना ज़रूर नहीं है, जो कुछ करनी दरकार होगी वह दया आप करा लेगी, तो ऐसी समझ धारण करने वाले पर, दया किसी तरह से नहीं आवेगी, और वह आलसियों और काहिलों में शुमार किया जावेगा।

३५—इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि दुनिया का हाल ग़ौर से देख कर, थोड़ा-बहुत ख़ौफ़ और शौक़ मन में लाकर, तलाश सतगुरु और सतसंग की, इस नज़र से कि उनको पता और भेद कुल्ल-मालिक और उसके निज धाम का, जहाँ हमेशा का सुख और आनन्द प्राप्त होवे और दुक्खों से क़तई बचाव हो जावे, करें। और जब वे मिल जावें तब उन के बचन सुनकर और उपदेश लेकर, उनकी हिदायत के मुआफ़िक़, शौक़ और मेहनत के साथ कार्रवाई शुरू करें, और विकारी अंगों से डर कर और शुभ अंगों की प्राप्ति की चाह उठा कर, जो जतन कि बताया जावे, उस की कार्रवाई, जहाँ तक मुमकिन होवे, दुरुस्ती से करने का सच्चा इरादा और

कोशिश करें। तब राधास्वामी दयाल अपनी दया का बल देकर, जिस क़दर कार्रवाई ज़रूरी और मुनासिब है, कराते जावेंगे और आहिस्ता २ एक दिन उसका पूरा काम बनावेंगे, जैसा कि इन कड़ियों में लिखा है :—

॥ कड़ी ॥

मेहर दया करनी करवाई।
करनी कर बहु मेहर बढ़ाई॥
करनी मेहर संग दोउ चलते।
तब फल पूरा चढ़ चढ़ लेते॥

३६—और जो कोई ऊपर के लिखे के मुआफ़िक, हिम्मत और इरादा मज़बूत करके, कार्रवाई परमार्थ की, अपने जीव के कल्याण के वास्ते शुरू नहीं करेंगे, वे ख़ास मेहर और दया से ख़ाली रहेंगे, और फिर उनका काम भी जैसा कि चाहिये, दुरुस्ती से पूरा नहीं बनेगा।

बचन १८

राधास्वामी मत और सुरत-शब्द अभ्यास की महिमा, और वर्णन बड़-भागता उन जीवों की, जो प्रीति और प्रतीत सहित अभ्यास कर रहे हैं॥

१—राधास्वामी मत सब से ऊँचा और गहरा है, और उसका अभ्यास सुरत-शब्द योग का, सीधा और

सहज और धुर पहुँचाने वाला है। इससे बढ़ कर कोई जुगत और अभ्यास रचना भर में नहीं है, और इस को कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल ने इस समय में जीवों पर अति दया कर के आप प्रकट किया।

२—राधास्वामी मत में सच्चे कुल्ल-मालिक राधास्वामी का भेद वर्णन किया है। और उनका निज धाम ऊँचे से ऊँचे देश में समझाया है। और अपनी धारों यानी किरनियों के द्वारे या वसीले से वे सब जगह मौजूद हैं, पर उनका सिंहासन यानी तख़्त ऊँचे से ऊँचे धाम में है, जो कि अपार और अनन्त और अगाध और अथाह और अकह है।

३—रचना में सामान्य और विशेष चैतन्य का भेद, ब-सबब हायल होने माया के पर्दों के साफ़ नज़र आता है। फिर राधास्वामी धाम तो महा विशेष चैतन्य का मक़ाम है, जो कि महा निर्मल और महा आनन्द और महा प्रेम स्वरूप है जहाँ माया का नाम और निशान भी नहीं है, क्योंकि यह वहाँ से नीचे के देश में प्रगट हुई और उस देश में रचना के होने से पहिले चैतन्य का ग़िलाफ़ हो रही थी, यानी बतौर तह के उसको ढके हुई थी।

४—जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, वे माया के घेर यानी हद्द में ख़तम हो गये, मगर राधास्वामी मत

का सिद्धान्त निर्मल-चैतन्य यानी दयाल देश में जाता है, जो कि सच्चे कुल्ल-मालिक का निज धाम है, और वहीं पहुँच कर सुरत का सच्चा और पूरा उद्धार यानी माया के जाल से निरवार और जन्म-मरण से छुटकारा हो सकता है। और बाक़ी माया के देश में चाहे जैसे बढ़ से बढ़ कर सुख प्राप्त हो जावें, पर जन्म-मरण का चक्कर हमेशा जारी रहेगा।

५—सुरत-शब्द मार्ग से मतलब यह है, कि सुरत यानी रूह को, जो कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की अंश है और जो प्रथम धार और धुन रूप हो कर राधास्वामी धाम से निकली, और जगह २ मंडल बाँध कर रचना करती हुई पिंड में उतर कर ठहरी है, शब्द यानी धुन की धार के साथ मिला कर उलटाना, और कुल्ल मंडलों के पार निज धाम में पहुँचा कर विश्राम देना।

६—शब्द या धुन से मतलब चैतन्य की धार से है जो असल में कुल्ल रचना की कर्ता है और वही धार जब पिंड में आकर ठहरी, उस का नाम सुरत हुआ, और बसबब उलट जाने इस की तवज्जह के, बाहर की तरफ़ भोगों और पदार्थों में, और नीचे की तरफ़ पिंड में, इसका बंधन देह और दुनिया में हो गया है। जो कोई भेद समझ कर और जुक्ति का उपदेश लेकर, सुरत का रुख़ इन तरफ़ों से मोड़ कर ऊपर यानी इसके निज घर की तरफ़, धुन की

डोर पकड़ कर यानी शब्द को चित्त लगा कर सुनते हुए, प्रेम और शौक़ के साथ चलाना शुरू करे, तो वह राधास्वामी दयाल की दया और सतगुरु की मदद और कृपा से आहिस्ता २ एक दिन माया की हद्द के पार, अपने निज घर में पहुँच सकता है, और जन्म-मरण और देहियों के दुख-सुख से बच कर परम और अमर आनन्द को प्राप्त हो सकता है। यह फल सुरत-शब्द योग के अभ्यास का है।

७—और कोई जुगत या अभ्यास कर के सुरत, निज घर यानी धुर धाम में नहीं पहुँच सकती, क्योंकि आदि ज़हूर चैतन्य का, शब्द है और यही कुल्ल रचना का कर्ता और उसकी जान है। फिर इस धार को पकड़ के धुर धाम में पहुँचना मुमकिन है। और जितनी धारें हैं, वे माया के घेर से निकलीं और वहीं ख़त्म हो गईं। उन में से कोई माया की हद्द के पार नहीं जा सकती है। और जो कि शब्द ही की धार चैतन्य और जान की धार और कुल्ल रचना की कर्तार है, इस वास्ते सुरत-शब्द मार्ग से बढ़ कर कोई अभ्यास रचना भर में नहीं है।

८—और जो कि सुरत-शब्द अभ्यास में प्राणों के रोकने या खींचने की कुछ ज़रूरत नहीं है, इस सबब से वह अब ऐसा आसान कर दिया गया है कि जो सच्चा शौक़ होवे तो स्त्री और पुरुष लड़का और जवान और

बूढ़ा सब उसको, जो थोड़ा-बहुत शौक़ और प्रेम होवे, तो बग़ैर तकलीफ़ और ख़तरे के, कमा सकते हैं और थोड़े दिनों में उसका फल और फ़ायदा देख कर और नित अभ्यास जारी रख कर, अपना परमार्थी भाग जगा और बढ़ा सकते हैं।

६—जो भेद कुल्ल-मालिक और रास्ते के मक़ामों के मालिकों का, और भी सुरत यानी जीव का, और तरीक़ा उस को उल्टा कर फिर निज धाम में पहुँचाने का, शब्द को सुन कर, राधास्वामी मत में खोल कर कहा है, वह किसी मत में जो कि आज-कल जारी हैं, पाया नहीं जाता, और न बहुत से सवालों के जवाब जिन से पूरी तसल्ली हो जावे, सिवाय राधास्वामी मत के, और किसी मत में मिल सकते हैं। इस वास्ते जो कोई कि इस मत के भेद और हाल को अच्छी तरह निर्णय करके समझ लेवे, उसकी गति कुल्ल जीवों से बढ़ कर हो जावेगी, यानी कुल्ल विद्यावान और चतुरे और सर्व मतों के आचार्य्य और पेशवा, उसको असल परमार्थ से बे-ख़बर और नादान नज़र आवेंगे। और जबकि वह, अभ्यास सुरत-शब्द योग का, प्रेम और शौक़ के साथ शुरू करेगा, तो उसके फ़ायदे का कुछ बयान नहीं हो सकता है यानी वह राधास्वामी दयाल की मेहर से एक दिन कुल्ल रचना को पार करके, महा प्रेम और महा आनन्द के धाम में पहुँच कर, जन्म-मरण के कष्ट और क्लेश से रहित हो जावेगा।

१०—बड़ी ख़ूबी और बड़ाई राधास्वामी मत और उसके अभ्यास की यह है कि इस में सब जीव किसी देश और किसी हालत और किसी पेशे और किसी मज़हब में होवें और चाहे गृहस्थ में रह कर रोज़गार करते होवें या विरक्त या आज़ाद होवें, इस मत में शामिल होकर उसका अभ्यास, जो थोड़ा भी शौक़ और प्रेम रखते हैं, आसानी के साथ कर सकते हैं, और कोई दिन में थोड़ा-बहुत उसका रस और आनन्द अपने अन्तर में हासिल कर सकते हैं।

११—यह मत और इसका अभ्यास, अन्तरी और रूहानी है। अभ्यासी को इख़्तियार है कि चाहे जिस वक़्त और चाहे जहाँ, एकान्त में आराम के साथ बैठ कर, और जो बैठा न जावे तो लेट कर, (बग़ैर दूसरे शख़्स के जानने के) अभ्यास कर सकता है और यह भी बहुत ज़रूर नहीं है कि वह अपनी कोई ज़ाहिरी रस्म या क़ायदे या व्यवहार को बदले, बशर्ते कि उस कार्रवाई से उसके ज़ाती फ़ायदे के मतबल से, किसी को किसी क़िस्म का दुख या नुक़सान न पहुँचता होवे।

१२—राधास्वामी मत और उसके अभ्यास के रक्षक और निगहबान, आप कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु हैं, यानी जो कोई सच्चे मन से थोड़ा शौक़ लेकर, थोड़ी-बहुत प्रतीत के साथ इस मत को क़ुबूल करके

सुरत-शब्द के अभ्यास में लगेगा, उस पर राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु आप दया फ़रमाते हैं और अन्तर में पर्चे और मदद देते हैं कि जिस को परख कर अभ्यासी का शौक़ आहिस्ता २ बढ़ता जाता है और प्रीति और प्रतीत चरणों में और भी अभ्यास की जुगत में बढ़ती जाती है।

१३—और जो कि मतलब और मक़सद राधास्वामी मत और उसके अभ्यास का यह है कि मन और सुरत दिन-दिन अपने पिंड में बैठक के स्थान से ऊँचे की तरफ़ सिमटते और सरकते जावें और ऊँचे देश के शब्द और स्वरूप से मिल कर, दिन २ रस और आनन्द ज़्यादा से ज़्यादा पाते जावें, तो जिस क़दर अपनी बैठक के मक़ाम से हटते जावेंगे उसी क़दर दुनिया और उसके सामान की तरफ़ से चित्त उपराम होता जावेगा, और राधास्वामी दयाल और सतगुरु के चरणों में प्रीति और प्रतीत बढ़ती और पकती जावेगी। यही निशान सच्चे अभ्यास और सबूत सच्चे उद्धार का है।

१४—यह बात अच्छी तरह से हर एक जीव को जो राधास्वामी मत में शामिल होवे, समझना चाहिए कि इस मत के अभ्यासी पर ज्यों २ वह अभ्यास करता जावेगा, वही हालत गुज़रती जावेगी जो कि मरने के वक़्त जीवों पर, जब कि रूह का खिंचाव दिमाग़ की तरफ़ होता है, गुज़रती

है, यानी सहज २ आँखों की पुतली को कि जिस में रूह की धार ठहर कर देह और दुनिया का काम कर रही है, अन्दर और ऊपर की तरफ़ उलटाया जाता है। और जिस क़दर यह काम दुरुस्ती से बनता जाता है, उसी क़दर सुरत, देह और दुनिया से न्यारी होती जाती है और इधर के बंधन ढीले होते जाते हैं। जब ऐसी हालत इसी ज़िन्दगी में होने लगी, और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की दया और उनका जलवा अन्तर में मालूम होने लगा और संसार के भोग-बिलास और मान-बड़ाई से चित्त थोड़ा-बहुत हट कर अंतर अभ्यास यानी चरणों में ज़्यादा शौक़ और प्रेम के साथ लगने लगा, तो इस से ज़्यादा और क्या सबूत सच्चे उद्धार का दरकार है ?

१५—सच्चे प्रेमी अभ्यासी को ऊपर की लिखी हुई हालत और कैफ़ियत से साफ यक़ीन होता जावेगा कि इसी सुरत-शब्द मार्ग की कमाई से एक दिन पूरा काम बन जावेगा और यह कि इस मार्ग का सूत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरणों से लगा हुआ है और इस मार्ग की कमाई करने वाले की, वे आप रक्षा फ़रमाते हैं और ख़ास दया उस पर फ़रमा कर दिन २ उसकी तरक़्क़ी में मदद देते हैं। फिर उसकी प्रीति और प्रतीत चरणों में ज़रूर बढ़ेगी और पुख़्ता होती जावेगी और दुनिया और उसके

सामान से, जो कि नाशमान है और उसमें रस और आनन्द बहुत थोड़ा, और दुख के साथ मिला हुआ है, ज़रूर अभावता और उदासीनता होती जावेगी।

१६—सच्चे प्रेमी अभ्यासी को राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से जब-तब शब्द की असली धुन सुना कर, और अपना प्रकाश स्वरूप दिखा कर या सतगुरु रूप में दर्शन देकर, सुरत-शब्द मार्ग की बड़ाई और अपनी दया की जाँच और यक़ीन कराते हैं कि जिससे उसको साफ़ मालूम हो जावे कि वे हर दम उसके अंग-संग हैं। और जब जब ज़रूरत होवेगी, वे उसकी मदद फ़रमावेंगे और उसकी सुरत को, सब बंधन ढीले कर के, और अपनी गोद में बैठा कर यानी अपने संग लेकर, और ऊँचे देश में चढ़ा कर, एक दिन निज घर में पहुँचा देंगे।

१७—सुरत की चढ़ाई पिंड के परे यकायक और जल्दी नहीं हो सकती, क्योंकि इसमें बहुत हर्ज और नुक़सान और तकलीफ पैदा होने का ख़ौफ़ है। लेकिन आहिस्ता २ कार्रवाई जारी रहने से अभ्यासी का बहुत फ़ायदा है यानी उसको आनन्द और सरूर हज़्म होता जावेगा और मस्ती, और इधर से बेहोशी नहीं होवेगी और दोनों काम, दुनिया और परमार्थ के, किसी दर्जे तक जारी रहेंगे और अभ्यास की तरक़्क़ी भी बराबर होती जावेगी।

१८—इस वास्ते सुरत-शब्द मार्ग के अभ्यासी को मुनासिब और लाज़िम है कि अपना अभ्यास प्रीति और प्रतीत के साथ बराबर जारी रक्खे और जल्दी और शिताबी न करे, और न बहुत घबराहट और बेकली, जिससे कि ना-उम्मेदी और निराशता पैदा होवे, मन में आने देवे, बल्कि दया का हाल दिन २ मुलाहिज़ा करके चित्त में दृढ़ विश्वास रक्खे कि राधास्वामी दयाल उसको, किसी भी हालत में नहीं छोड़ेंगे और उसकी ख़बरगीरी और सम्हाल करते हुए एक दिन ज़रूर धुर घर में पहुँचा देंगे।

१९—अब ख़्याल करना चाहिये कि जिस शख़्स का सच्चा और पक्का इरादा, दयाल देश में पहुँचने का है और दुनिया और उसके सामान से चित्त किसी क़दर उपराम हो गया है और माया की हद्द में जिस क़दर कि रचना है, उसमें वह चित्त से ठहरना नहीं चाहता है, और राधास्वामी दयाल के शब्द स्वरूप, और भी सतगुरु रूप में, जिसका प्यार है, और ऊँचे देश और धुर धाम में पहुँच कर इन स्वरूपों के दर्शन का आनन्द और बिलास लेने को जिसके दिल में चाह और तड़प लग रही है, और माया के मसाले की देहियों से जिसको किसी क़दर नफ़रत हो गई है, तो ऐसा प्रेमी अभ्यासी किस तरह माया की हद्द में ठहर सकता है? वह तो ज़रूर ही सतगुरु स्वरूप और शब्द के साथ लिपट कर, और दयाल देश में

पहुँच कर विश्राम करेगा, चाहे यह काम एक जन्म में पूरा होवे या दो में। और उस सूरत में वह, कुछ अरसा, संतों के दसवें द्वार यानी सुन्न में जो कि माया को हद्द के पार है, क़याम करेगा, और दूसरे जन्म में सतगुरु के संग आकर और उत्तम कुल में जन्म ले कर फिर वही सुरत-शब्द मार्ग का अभ्यास, जहाँ से छोड़ा है, शुरू करके अपना काम पूरा बनावेगा यानी संत गति को प्राप्त होकर राधास्वामी के चरणों में बासा पावेगा।

२०—और जो शौक़ और प्रेम किसी क़दर हलका रहा और करनी भी उसी मुआफ़िक़ बनती रही, तो तीन जन्म में कारज बनेगा। और इस सूरत में पहिले जन्म में सहसदलकँवल के ऊपर, और फिर दूसरे जनम में दसवें द्वार में कोई दिन ठहर कर, तीसरे जन्म में दयाल देश में पहुँचेगा। और हर जन्म में उत्तम कुल में पैदा होकर और सतगुरु से मिल कर ब-दस्तूर अपना अभ्यास सुरत-शब्द मार्ग का, जारी रक्खेगा और प्रीति-प्रतीत और शौक़ हर जन्म में बढ़ता जावेगा।

२१—ऊपर के बयान से मालूम होगा कि किस क़दर महिमा और भारी गति राधास्वामी मत के अभ्यासी की है, यानी वह एक दिन आत्मा और परमात्मा और ईश्वर और परमेश्वर और ब्रह्म और पारब्रह्म के धाम के

ऊपर चढ़ कर और दयाल देश में पहुँच कर संत और परम संत गति को प्राप्त हो सकता है और तब उसकी गति इन सब से ज़्यादा और भारी हो जावेगी। अब जीवों को इख़्तियार है कि राधास्वामी मत के भेद को सुन कर और ऐसे भारी दर्जे के हासिल करने के वास्ते सतगुरु और राधास्वामी दयाल की सच्ची शरण लेकर सुरत-शब्द मार्ग के अभ्यास में, दिल-ओ-जान से कोशिश करें और चाहे किसी मक़ाम का, माया की हद्द में इष्ट बाँध कर और वहाँ की जैसी-कुछ कार्रवाई है, उसके मुआफ़िक़ अमल-दरामद करके, त्रिलोकी के ऊँचे देश में रहें और चाहे दुनिया और उसके भोग-विलास में अटक कर स्वर्ग और मृत्युलोक की ऊँची-नीची योनियों में भरमते रहें ॥

बचन १९

वर्णन हाल मन की तरंगों और ख़्यालों का, जो कि कर्म-भर्म के सूक्ष्म रूप हैं, और यह कि जब तक इनकी कमी और सफ़ाई न होगी, तब तक मन और सुरत, दुरुस्ती से अभ्यास में नहीं लगेंगे और प्रेम की तरक़्क़ी नहीं होगी, और जतन काटने उन ख़्यालों और तरंगों और कर्मों का ॥

हाल पैदा होने और विस्तार पाने मन के ख़्यालों और तरंगों का

१—मन का क़ायदा है कि जब इस में किसी तरंग की हिलोर उठती है, तब धार खड़ी होकर उस इन्द्रिय की तरफ़ कि जिसके भोग की तरंग उठी है, रवाँ होती है और जो वह भोग बाहर मौजूद होवे तो उस से मिल कर जैसा कुछ कि उसका रस है, मन को पहुँचाती है। और जो वह भोग इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त मौजूद नहीं है तो मन उसका अनुमान करके अपनी धार के वसीले से जो इन्द्रिय घाट तक आई है, ख़्याली रस लेता है और उस वक़्त उस भोग के रस का रूप हो जाता है और कोई दूसरा ख़्याल उस वक़्त नहीं रहता है और फिर उस भोग के हासिल करने के निमित्त अनेक तरह के जतन सोचता है और किसी क़दर वक़्त अपना, इसी गुनावन में ख़र्च करके और इरादा उस जतन के करने का बाँध कर उस ख़्याल को छोड़ देता है।

२—जिस क़दर अर्से तक कि मन इसी गुनावन और ख़्याल में लगा रहा, उस ख़्याल और इरादे का कि जो उसने वास्ते जतन करने के किया, मनाकाश में गहरा नक़्श पड़ जाता है और फिर वही नक़्श उस इरादे के मुआफ़िक़ मन से बाहर कार्रवाई, वास्ते प्राप्ति उस भोग के, करावेगा और जब वह भोग प्राप्त होगा, तब निहायत हर्ष और ख़ुशी

के साथ उस भोग में लिपट कर उसका रस लेगा। और फिर इस कार्रवाई का भी नक़्श मनाकाश में ब-दस्तूर पड़ेगा। और वह बार २ उस भोग के रस की याद दिला कर और हिलोर उठा कर ब-दस्तूर कार्रवाई और जतन, यानी अंतरी और बाहरी कर्म करावेगा और इसी तरह कर्मों का सिल-सिला बढ़ता जावेगा।

३—कुल इन्द्रियों के भोगों की चाह का पैदा होना और उनकी प्राप्ति के लिए इरादा और फिर जतन का करना और उसके सुफल होने पर भोगों का रस लेना और फिर बारम्बार उसी क़िस्म की तरंगें उठाना और उनके पूरे होने के वास्ते तदबीर और जतन करना—यही सिल-सिला कर्म पैदा करता है, और इसी कार्रवाई के नक़्श पर नक़्श अंतर में जमा होते जाते हैं और इसी का नाम कर्मों का दफ़्तर है।

४—यह तरंगें और उनके पूरे करने के वास्ते जो कुछ कि कार्रवाई की जावे, वह औरों के भोग-विलास देख कर या सुन कर या उनका हाल पढ़ कर पैदा होती हैं या अपने मन में नई उचंग उठा कर ज़ाहिर होती हैं। और इनके सिल-सिले की कोई हद्द नहीं है यानी जिस क़दर सामान मुयस्सर आवे और जैसा संग मिल जावे तो इस क़िस्म की तरंगें, मिस्ल आरायश मकान व सवारी और लिबास और ज़ेवर और ज़मा करने धन और माल और बढ़ाने अनेक तरह

के सामान वग़ैरा के और लगाने बाग़ात और बढ़ाने सामान ऐश-ओ-आराम और करना अनेक तरह के काम नाम-वरी और यादगार के, बे-शुमार पैदा होती हैं और इस तरह कर्मों का दफ़्तर भी बहुत भारी हो जाता है।

५—यही सब नक़्श जिनको कर्मों का दफ़्तर कहा गया है, बराबर जीव से कर्म के बाद कर्म बे-तादाद कराते हैं। और हर एक कर्म के सुख और दुख का भोग थोड़ा-बहुत, वक़्त तरंग उठाने और उसका ख़्याल करने और फिर उसका भोग करने के, मन को, अंतर और बाहर मिलता है। और जिस क़दर कि शौक और ज़ोर के साथ कोई कर्म किया गया है, चाहे वह आप को या दूसरों को सुखदाई है या दुखदाई, उसी क़दर मज़बूत नक़्श उसका दिल में पड़ेगा और आइन्दा वह उसी तरह का एवज़ यानी फल, अन्तर और बाहर, देवेगा। यानी अंतर में तो वक़्त सख़्त तकलीफ़ और मौत के, जब कि सुरत यानी रूह की धार का खिंचाव ऊपर की तरफ़ होवेगा और वह उन नक़्शों के मक़ाम से गुज़र करेगी, तब वे नक़्श ज़िन्दा होकर उसको कुछ देर अटकावेंगे और जैसा कुछ कि उनका भोग है (सुख या दुख और रस या तकलीफ़) उसी मुआफ़िक़ फल देवेंगे। और उस वक़्त सुरत यानी जीव जो कि संसारी है, कोई जतन उस दुख के हटाने का नहीं कर सकेगा, और इसी तरह जब बाहर दुख-

दाई कर्मों का एवज़ मिलेगा, चाहे वह बतौर रोग या सोग के होवे या दूसरे के हाथ से (जिसको इस शख़्स ने साबिक़ में दुख दिया है) तकलीफ़ पहुँचे, उसका पूरा फल भोगना पड़ेगा और चाहे जिस क़दर जतन और तदबीर की जावे, वह तकलीफ़ और दुक्ख, बग़ैर पूरा भोग दिये, नहीं हटेगा।

६—और इसी तरह सुखदाई कर्मों का भोग अन्तर और बाहर मिलेगा। और जो वे कर्म पूरे हैं तो बाहर बग़ैर जतन या तदबीर करने के, उनका फल सुख रूप सहज में प्राप्त होगा, और जो अधूरे हैं तो थोड़ा जतन और मेहनत करके हासिल होगा।

७—यह थोड़ा-सा हाल, शुरूआत और तरक़्क़ी-ए-सिल-सिला कर्मों का बयान किया गया है। इसको विस्तार करके कुल्ल कर्मों का हाल वक़्त उनके बीजा पड़ने से और फिर ज़हूर करने और तरक़्क़ी पाने तक समझ लेना चाहिये। यही माया का जंजाल है कि अनेक तरह के भोग और पदार्थ पेश करके और उनमें जीव को लुभा कर कर्मों के चक्कर में डालती है कि फिर जिसका सिलसिला दूर तक जारी रहे और उससे निकलना मुशकिल हो जावे और माया के घेर में बारम्बार देह धारण करके अपनी करनी और इरादे का फल भोगता रहे।

८—एक मिसाल दी जाती है कि जिससे ऊपर का लिखा हुआ हाल आसानी से समझ में आजावे। जैसे कोई शख़्स किसी की शादी की महफ़िल में गया और वहाँ रोशनी और फ़र्श वग़ैरा और फुलवार की आरायश और आतिश-बाज़ी वग़ैरा देख कर मन में खुश हुआ और इरादा किया कि अपने लड़के की शादी में जो सामान मुयस्सर आवे तो उसी मुआफ़िक महफ़िल आरास्ता करे, और फिर इस इरादे के पूरा करने के वास्ते अनेक जतन और मेहनत करके धन का पैदा करना और जोड़ना शुरू किया और जब वक़्त आया, तब जिस क़दर कि सामान मुयस्सर हो सका, थोड़ी-बहुत, उसी के मुआफ़िक़ जैसा कि देखा था, महफ़िल तैयार की, और जब उसकी तारीफ़ हुई, तब फिर इरादा किया कि आइन्दा उससे भी बढ़ कर काम करे। इसी तरह सिलसिला इस कर्म का बढ़ता चला और फिर मालूम नहीं कि कब तक उसकी ज़िन्दगी में जारी रहे और जो सामान कि मुयस्सर आने में कमी रही तो रंज और अफ़सोस भोगना पड़ा और फिर भी उस इरादे को और उसके पूरा करने के वास्ते जतन और मेहनत को न छोड़ा, यानी जो इस जन्म में ख़ातिर-ख़्वाह काम न बना, तो उस की आशा दूसरे जन्म में बाक़ी रही और फिर वही जतन और मेहनत करने लगा। इस तरह वह

सिलसिला ब-दस्तूर जारी रहा। यह मिसाल बहुत थोड़े से हाल की है, लेकिन जीवों के मन में बे-शुमार तरंगें दुनिया के भोग-विलास और नामवरी की उठती रहती हैं। और जो एक पूरी यानी ख़त्म हो गई, तो फिर दूसरी और तीसरी पैदा हो गई। इस तरह कर्मों का चक्कर कभी ख़त्म नहीं होता।

६—जो कोई कहे कि कर्मों का नक़्श कैसे पड़ता है, तो उसका हाल यह है कि जैसे अक्सी तसवीर खींचने वाला यानी फोटोग्राफ़र जब तसवीर खींचता है, तब सूरज की किरण की मदद से अक्स शीशे पर पड़ता है, इसी तरह, सुरत-चैतन्य की रोशनी की मदद से मनाकाश में, जो कि मुआफ़िक़ शीशे के है, जीव के ख़्याल और कर्मों का नक़्श पड़ता है, बल्कि बाहर के आकाश में भी अक्सर तसवीर खिंच जाती है। चुनांचे समुद्र के किनारे के रहने वाले, वक़्त सुबह या क़रीब शाम के आने वाले जहाज़ का अक्स आकाश में देख कर मालूम कर लेते हैं कि फ़लाँ जहाज़ थोड़े अर्से में आने वाला है।

१०—सिवाय इसके, यह भी क़ैफ़ियत रोज़मर्रा जीवों पर गुज़र रही है कि जब कोई कुछ मज़मून या कलाम लिखना चाहता है या मकान बनाना चाहता है या मुसव्विर कोई तसवीर खींचना चाहता है या और कोई

कारीगर कोई चीज़ बनाना चाहता है, तो वह पहिले उस को अपने मन में सोचता है। और उस सोचने के वक़्त नक़्श या ख़ाका उस मज़मून या मकान या तसवीर या चीज़ वग़ैरा का, मनाकाश में लिख जाता है। पीछे, उस का नमूना वह बाहर लिखता है या बनाता है। ऐसे ही सब काम और ख़्यालों का हाल समझ लेना चाहिए कि पहिले उनका नक़्श मनाकाश में पड़ता है और फिर इन्द्रियों के वसीले से उन की सूरत बाहर ज़ाहिर होती है।

जतन छुटकारा पाने का, कर्मों के चक्र से

११—अब ग़ौर करने की बात है कि ऐसे कर्म के चक्र और जंजाल से जीव का छुटकारा कैसा मुश्किल है। सो सच्चा और पूरा निरवार, बग़ैर राधास्वामी दयाल की शरण लेने और उनकी जुगत के अभ्यास करने के, और किसी तरह मुमकिन नहीं है। और वह जुगत सुरत-शब्द योग है जिस की कमाई करने से तीनों क़िस्म के कर्म यानी संचित, प्रारब्ध और क्रियमान का सिलसिला सहज में कट सकता है। और कुल्ल कर्मों का हिसाब कोई दिन में बेबाक हो सकता है।

१२—जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, वे अक्सर तो कर्म का उपदेश करते हैं और आशा सुख की इस लोक में या स्वर्ग वग़ैरा में बँधवा कर, ब-दस्तूर माया के जाल और कर्म के चक्र में फँसाते हैं। कोई २ बाहरमुख भक्ति,

मूर्तों या निशानों की (जो कि जड़ हैं) कराते हैं और असल का भेद नहीं बताते। इस सबब से वे उपासक स्थूल और सूक्ष्म शरीर में चक्कर खाते रहते हैं और कर्म के जाल से निकलने नहीं पाते। कोई २ ग्रन्थ और पोथी पढ़ने और पढ़ाने में अटकाते हैं और कोई ईश्वर या ब्रह्म या ख़ुदा का चिन्तवन और ध्यान कराते हैं। लेकिन वह ध्यान बे-ठिकाने और ना-दुरुस्त रहता है क्योंकि वह ईश्वर या ब्रह्म या ख़ुदा को अरूप क़रार देकर आकाश-वत सर्व-व्यापक बताते हैं, और ध्यानी, आकाश का तसव्वुर बाँध कर, इसी चैतन्य के मंडल में रहता है यानी माया के घेर के पार नहीं जा सकता। और वाज़े बाचक ज्ञान समझाते हैं यानी ख़ुद जीव को सर्व-व्यापक ब्रह्म क़रार देते हैं और माया और उसके सामान को मिथ्या समझ कर कहते हैं कि जाना-आना कुछ नहीं है, सिर्फ़ इतना चाहिए कि अपने तईं ब्रह्म स्वरूप मानने का विर्द[1] करें। इतनी ही कार्रवाई से जन्म-मरण से छुटकारा हो जाना मानते हैं। इन्होंने भी धोखा खाया और उस चैतन्य के मंडल से जो कि माया के संग रचना में फँसा हुआ है, बाहर नहीं गये।

१३—ख़ुलासा यह कि यह सब मत वाले और ख़ुद इनका ब्रह्म या ईश्वर या ख़ुदा (जो उनका सिद्धान्त पद है) माया के घेर और चक्र में फँसा हुआ है। फिर इन लोगों

१—अभ्यास।

का सच्चा निरवार काल और कर्म के घेर से किस तरह हो सकता है ? अलबत्ता यह बात सिर्फ़ राधास्वामी मत के मानने और उसकी जुगत के कमाने से हासिल हो सकती है और इसका बयान शरह के साथ आगे लिखा जाता है।

राधास्वामी मत के अभ्यास की कमाई से तीनों क़िस्म के कर्मों का असर घटना और दूर होना मुमकिन है

१४—मालूम होवे कि राधास्वामी मत का अभ्यास शब्द और स्वरूप के आसरे सुरत (रूह) की धार के अंतर में उलटाने और चढ़ाने का है और उस धार का स्थान, वक़्त जाग्रत के, आँखों की पुतली में है। सो उस धार के साथ पुतली भी उलटती है। और जिस वक़्त कि पुतली और वह धार थोड़ी भी उलटती और खिंचती है, तो उसी वक़्त देह और दुनिया का होश कम हो जाता है या उसकी बिलकुल सुध नहीं रहती है और हाथ पैर ऐंठने लगते हैं और दाँती भी बंद हो जाती है और इन्द्रियाँ बल्कि मन भी शिथिल और बेकार हो जाते हैं।

१५—जब ऐसी हालत अभ्यास कर के थोड़ी-बहुत पैदा होनी शुरू हुई, तो स्थूल और सूक्ष्म यानी अंतर और बाहर कर्मों की कार्रवाई आप ही हलकी होती जावेगी और अन्तर में कुछ रस और आनन्द पाकर, और मालिक की

क़ुदरत और दया का मुलाहिज़ा कर के, अभ्यासी का चित्त संसार और उसके भोगों की तरफ़ से आप ढीला होता और हटता जावेगा, और दुनिया के रस फीके पड़ते जावेंगे और शौक़ तरक़्क़ी अभ्यास और हासिल करने विशेष रस का, अन्तर में बढ़ता जावेगा, और संसारी ख़्वाहिशें घटती जावेंगी और जो ज़रूरी सामान के वास्ते यह अभ्यासी कुछ कार्रवाई, मिस्ल रोज़गार और पेशा वग़ैरा के, करेगा या चाह उठावेगा, तो उसमें हमेशा मालिक की मौज और दया की मुख्यता रक्खेगा और अपनी चाह को मालिक की मरज़ी के आधीन रक्खेगा। इस तरह क्रियमान कर्मों में अभ्यासी का बंधन बहुत कम या बिल्कुल नहीं होवेगा यानी सिलसिला कर्मों का आइन्दा के वास्ते बंद हो जावेगा।

१६—प्रारब्ध कर्म उनको कहते हैं कि जिन का फल इस ज़िंदगी में भोगना होगा। सो उनका असर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया से बहुत हलका हो जावेगा, यानी जिस क़दर अभ्यासी को अपनी सुरत को आँख के मक़ाम से हटाने की ताक़त हासिल हुई है, उसी क़दर, वह देह और दुनिया से न्यारा होता जाता है। और जो कि जाग्रत में आँखों का स्थान सुरत की बैठक का है और वही सुख-दुख के भोग और कर्म करने का स्थान है, इस वास्ते जिस क़दर कि रूह की धार इस मक़ाम से

अभ्यास की मदद से हटती जावेगी, उसी क़दर दुख-सुख कम व्यापेगा। इस तरह प्रारब्ध कर्म का भोग हलका और कम होता जावेगा।

१७—अब बाक़ी रहे संचित कर्म, जो कि अभी नक़्श यानी बीज रूप मनाकाश में धरे हैं और कर्म कराने या फल देने को आइन्दा तैयार होंगे। सो यह कर्म जैसा कि अभ्यासी की सुरत मनाकाश को छेद कर ऊँचे को चढ़ती जावेगी, रास्ते में गुनावन और ख़्याल रूप पेश होकर, थोड़ी देर में अपना भोग और फल देकर नष्ट होते जावेंगे। यानी अगर अभ्यास शौक़ के साथ दुरुस्त बन पड़ा तो अभ्यासी की सुरत कुछ अर्से में मनाकाश के पार हो जावेगी और संचित कर्मों का दफ़्तर साफ़ हो जावेगा।

१८—इस तरह राधास्वामी मत के अभ्यासी के कुल्ल कर्म, एक या दो जन्म में कट सक्ते हैं। और जो ज़रा शौक़ और अभ्यास सुस्त रहा और संसार के भोगों की वासना थोड़ी मन में धरी रही, तो तीन जन्म में ज़रूर सफ़ाई हो जावेगी और सुरत, घट में ऊँचे देश में चढ़ कर शब्द और स्वरूप का रस और आनन्द लेवेगी और तब निर्मल प्रेम और उसके साथ अभ्यास भी दिन २ बढ़ता जावेगा।

दुनिया के ख़्यालों और तरंगों को परमार्थी चिन्तवन और उमंग के साथ बदलना चाहिये, तब थोड़ा-बहुत रस और आनन्द अन्तर में मिलेगा।

१६—अब समझना चाहिये कि जितने कर्म आदमी बाहर करता है, प्रथम वह अंतर में ख़्याल रूप में पैदा होते हैं, और वही ख़्याल, तरंग या धार रूप होकर इन्द्रिय के मक़ाम पर अपने भोग का रस मन को देते हैं। और मन, वक़्त उठने ख़्याल या तरंग के, उसी तरंग और उसके भोग और रस का थोड़ा-बहुत रूप हो जाता है और, दूसरी बात या काम की उस वक़्त उसको कुछ सुध नहीं रहती। और जब कोई उसकी तरंग के विस्तार और उसके भोग के रस लेने में विघ्न डाले, तो उस वक़्त वह बहुत बुरा और दुश्मन नज़राई देता है और जो मदद देवे, वह प्यारा और मित्र ख़्याल किया जाता है। यह हालत कुल्ल जीवों पर दुनिया में रोज़मर्रा बर्त रही है, लेकिन इसकी कार्रवाई अन्तर में इस तरह जल्द और सिलसिलेवार होती है कि किसी को उसकी ख़बर भी नहीं पड़ती है।

२०—दुनिया में जीव को जब किसी भोग का रस मिलता है तो फिर बार-बार उसी रस की प्राप्ति की चाह उठा कर जतन करता है और जो इत्तिफ़ाक़ से जतन करके

भी वह भोग प्राप्त न होवे, तो उसका ख़्याल उठा कर और गुनावन करके थोड़ा-बहुत रस, धार के उठ कर इन्द्रिय घाट तन आने का लेता है।

२१—अब जो कोई सच्चा शौक़ीन परमार्थ का है उसको चाहिये कि अपने मन और सुरत की धार को नौ द्वार यानी इन्द्रियों के मक़ाम से हटा कर दसवें द्वार की तरफ़ जो मस्तक में है (और जिस द्वारे से सुरत की धार पिंड में आकर नेत्रों में ठहरी है) संतों की जुगत के मुआफ़िक़ शब्द और स्वरूप के आसरे उलटाना शुरू करे। यानी पहिले परमार्थी रस लेने का ख़्याल मन में उठा कर जो जुगत कि बताई गई है उसके मुआफ़िक़ अभ्यास में बैठे। तब उसके ख़्याल के मुआफ़िक़, जैसा वह तेज़ और मज़बूत होगा, मन के स्थान से धार उठ कर ऊँचे की तरफ़ रवाँ होगी और जिस क़दर कि वह चल कर रास्ते के स्थान पर ठहरेगी या उसी तरफ़ की गुनावन करती रहेगी, उसी क़दर उस धार के ऊँचे देश के चैतन्य से मिलने का रस आवेगा।

२२—यह रस बहुत निर्मल और साफ़ है और थोड़ी सी तवज्जह अंतर में करने से मिल सकता है। जब इसकी थोड़ी-बहुत कैफ़ियत मालूम होगी यानी मन को कुछ मज़ा आवेगा और उसके नशे और सरूर का रस मालूम पड़ेगा, तब बार-बार उसी रस के लेने के इरादे से अभ्यास करेगा

और फिर यही हालत बढ़ती जावेगी यानी शौक़ और प्रेम दिन २ तरक़्क़ी करता जावेगा।

२३—इस वास्ते, हर एक सच्चे परमार्थी को मुनासिब है कि जब-जब फुरसत और मौक़ा मिले, तब-तब सच्ची तरंग अंतर में परमार्थी रस लेने की उठा कर अभ्यास शुरू करे और जैसे दुनिया के कामों में जब किसी काम का ख़्याल करता है, तो उस वक़्त उसी का रूप हो जाता और दूसरी बात की सुध नहीं रहती है, इसी तरह अभ्यास के वक़्त भी सिर्फ़ परमार्थी ख़्याल को पक्का करके भजन या ध्यान करे और किसी दूसरे काम या बात का, जहाँ तक मुमकिन हो, ख़्याल न लावे, तो ज़रूर थोड़ा-बहुत रस अभ्यास में मिलेगा और फिर उसका शौक़ आहिस्ता २ बढ़ता जावेगा।

२४—सिवाय अभ्यास के वक़्त के, और वक़्तों में भी चार-पाँच मिनट या ज़्यादा अपने चित्त को मक़ाम और स्वरूप या शब्द का अंतर में ख़्याल करके वहाँ जोड़ता रहे, तो इतनी ही देर में कुछ रस मिलेगा। और यही कार्रवाई जब-जब ख़्याल आ जावे कई बार दिन और रात में करे और उससे फ़ायदा उठावे यानी रस लेवे, तब थोड़ी-बहुत ख़बर अंतर में आनन्द की, पड़ेगी और उसका शौक़ बढ़ेगा।

२५—जब ऊपर कही हुई कार्रवाई और मामूली अभ्यास से कुछ-कुछ रस मिलेगा और राधास्वामी दयाल की दया और क़ुदरत थोड़ी-बहुत नज़र आवेगी, तब किसी क़दर प्रेम उनके चरणों में पैदा होगा और दर्शनों का शौक़ बढ़ेगा। और फिर अभ्यास भी ज़्यादा दुरुस्ती से बन पड़ेगा। और रफ़्ता २ उसके रस और आनन्द का इस क़दर आधार हो जावेगा कि दिन-रात में बग़ैर दो-चार बार अभ्यास का रस लेने के, चैन नहीं आवेगा और विरह और शौक़ ज़्यादा होता जावेगा।

२६—ऐसी करनी से दिन २ मेहर और दया भी बढ़ती जावेगी और उसके साथ प्रेम और करनी भी बढ़ती जावेगी और रफ़्ता २ एक दिन काम पूरा बन जावेगा।

दुनियावी ख़्यालों की क़िस्में और उनके हटाने की ज़रूरत, वास्ते सफ़ाई अंतर और दूर करने दुई और कपट के, कि जो परमार्थ में ज़्यादा विघ्न-कारक है।

२७—अब मालूम करना चाहिये कि ऐसी करनी या अभ्यास कि जिसका ज़िक्र ऊपर हुआ, दुरुस्ती से कैसे बन सकता है। यानी जिस वक़्त कि परमार्थी कार्रवाई का ख़्याल उठे, उस वक़्त किसी और ख़्याल या बात की तरंग

मन में नहीं उठाना चाहिये। तब उस परमार्थी ख़्याल का रूप दुरुस्त बनेगा यानी धार दसवें द्वार की तरफ़ उठ कर रवाँ होगी। और जो दूसरी क़िस्म की तरंगें उस वक़्त पैदा होवेंगी तो अनेक धारें पैदा होकर बाहर या नीचे की तरफ़ जारी हो जावेंगी और उस परमार्थी धार का रूप बिगड़ जावेगा। और इस सबब से उस का कुछ रस नहीं आवेगा क्योंकि मन दूसरी धारों में लिपट कर उन्हीं का रूप बन जावेगा और उन्हीं का रस लेवेगा।

२८—इस वास्ते सच्चे परमार्थी को चाहिये कि जितने ख़्यालात ग़ैरों के ताल्लुक़ के हैं, या अपनी पिछली ज़िन्दगी के कामों से ताल्लुक रखते हैं, जहाँ तक मुमकिन होवे, बिल्कुल अपने मन से भुला देवे, और वक़्त अभ्यास के खास कर, और दूसरे वक़्तों में भी, ऐसी अहतियात की आदत डाले कि उस क़िस्म के ख़्यालों को अपने मन में न उठने देवे और जो पैदा होवें तो उनको जल्द हटावे।

२९—दूसरी क़िस्म के ख़्याल जो मन में पैदा होते हैं, वे मन और इन्द्रियों के भोगों और दुनिया की मान-बड़ाई और नामवरी के हैं। इनकी निसबत भी वक़्त भजन के ख़ास कर, और दूसरे वक़्तों में भी वैसी ही अहतियात ज़रूर है कि फ़िज़ूल तरंगें न उठने पावें। जिस क़दर कि इस शख़्स के घर-गृहस्थ और देह के कारोबार और रोज़गार के

ताल्लुक़ ज़रूरी ख़्याल हैं, उनके उठाने और उनकी कार्रवाई जारी करने में मुक़र्ररा वक़्तों पर कुछ हर्ज नहीं होगा। लेकिन इस क़िस्म की तरंगें फ़िज़ूल और बे-ज़रूर और बे-वक़्त उठाना मुनासिब नहीं है। और जब वे ज़ाहिर होवें, बल्कि जब उनकी हिलोर उठे, उसी वक़्त से उनके रोकने और हटाने की मन को आदत डालना चाहिये, ताकि भजन और ध्यान और बानी के पाठ के वक़्त, वे ज़ोर न करने पावें।

३०—तीसरी क़िस्म के ख़्याल वे हैं कि जो ब-सबब ईर्षा या बैर और विरोध या लड़ाई और झगड़े या अपनी या दूसरे की हक़-तल्फ़ी की वजह से पैदा होवें। यह ख़्याल अक्सर झूंझल और ग़ुस्से और गरमी के भरे हुए होते हैं और जिस वक़्त कि यह उठते हैं, निहायत तकलीफ़ ख़्याल करने वाले को देते हैं और उस के सुरत और मन को बिखेर देते हैं और फैला देते हैं कि फिर वह उस वक़्त क़ाबिल परमार्थी बल्कि दुनिया की कार्रवाई के भी (जब तक कि ठंडा न होवे) नहीं रहता। परमार्थी शख़्स को इस क़िस्म के ख़्यालों से बचना बहुत ज़रूर है, नहीं तो उसका नुक़सान होगा। और जहाँ तक बने, किसी से झगड़ा या तकरार न करना और थोड़ी तकलीफ़ और नुक़सान की एवज़ में बदला लेने का इरादा न करना और हर एक की दुनिया की तरक़्क़ी को मालिक की मौज से होना

समझ कर ईर्षा और विरोध न करना चाहिये, और जिस किसी से पुरानी ना-मुआफ़क़त या अदावत चली आती है, उसका ख़्याल अपने दिल से निकाल कर, जो मुमकिन होवे और मुनासिब मालूम पड़े तो आपस में मेल कर लेना बेहतर होगा।

३१—चौथी क़िस्म के ख़यालात वे हैं कि जो एक तरंग के अंग २ से अनेक और बे-सिलसिले ख़ुद-ब-ख़ुद और बग़ैर इरादे इस शख़्स के, पैदा हो कर अर्से तक मन को अपने चक्र में डालकर घुमाते हैं। इनका कोई ख़ास स्वरूप नहीं है और न उन से कोई ख़ास मतलब निकलता है और न किसी तरह का रस मिलता है, मुफ़्त वक़्त बरबाद जाता है और मन की ऐसी कार्रवाई बिल्कुल बे-फ़ायदा होती है। ऐसी तरंगों के उठते ही रोकने और हटाने की आदत डालना बहुत ज़रूर है, नहीं तो जो उन की धार एक बार जारी होगई, तो फिर ख़बर नहीं कि कितनी देर तक मन उनमें भरमाता रहेगा और उस वक़्त इस शख़्स को होश भी नहीं रहता कि मैं क्या कर रहा हूँ।

३२—इस चौथी क़िस्म की तरंगों का हाल ख़्याल करने वाले को भी बहुत कम मालूम पड़ता है। जैसे जब पाँच-चार आदमी एक जगह बैठ कर बात-चीत करने लगे, तो उस वक़्त एक शख़्स की बात के अंग २ यानी लफ़्ज़

लफ़्ज़ से हर एक शख़्स अपने-अपने हाल और तबीअत और तजरुबे के मुआफ़िक़ एक-एक नई बात याद करके कहना शुरू कर देता है, और फिर इसी तरह उसकी बात के लफ़्ज़ों से और नई-नई बातें पैदा होती चली जाती हैं, यहाँ तक कि घंटे गुज़र जावें और बातें ख़त्म न होवें। और कोई भी यह नहीं कह सकता कि कौन-सी बात पहिले शुरू हुई थी और कैसे २ उससे नई बातें पैदा होकर सिल-सिला बढ़ता चला गया। ऐसे ही मन, अंतर में, एक ख़्याल के अंग से अनेक ख़्याल और बातें पैदा करके, उनके सिलसिले को बे-इरादा और बे-मतलब बेहोश आदमी की तरह से (जो कि बे-सर-ओ-पा गुफ़्तगू करता है) बढ़ाता चला जाता है और आप इससे कि मैं क्या कर रहा हूँ, बे-ख़बर रहता है।

३३—पाँचवीं क़िस्म की तरंगें वे हैं कि जिनको मनो-राज कहते हैं, यानी उसमें मन, अनेक तरह की ख़्वाहिशें मान और बड़ाई और हुकूमत और भोग और विलास और जमा करने अनेक तरह के सामान और तरक़्क़ी कुटुम्ब और परिवार वग़ैरा २ के उठा कर, अपनी चाह के मुआफ़िक़ उनको अपने ख़्याल ही में पूरा करके उनका रस लेता है। और उस वक़्त हर एक क़िस्म की हालत, जो कि उस सामान वग़ैरा के हासिल होने पर पैदा होती, उस

ख़्याल करने वाले शख़्स पर ज्यों की त्यों गुज़रती है और ऐसी कैफ़ियत ज़ाहिर होती है कि ख़्याल करने वाले का ज्यों का त्यों रूप उसके ख़्याल के मुआफ़िक़ बन जाता है और मन उस ख़यालो सामान का भोग पूरा करके रस लेता है और मग्न होता है। यह एक अजीब हालत नशे और सरूर की है कि जब-तब हर एक शख़्स के अंतर में पैदा होती रहती है। और जब यह भजन के वक़्त पैदा होवेगी, तो बिल्कुल अभ्यास का होश भी नहीं रहेगा और जब घंटे-दो-घंटे बाद होश आवेगा, तब यह भी ख़बर न होगी कि इस वक़्त मैंने भजन किया कि मनोराज करता रहा।

३४—प्रेमी अभ्यासी को मुनासिब और लाज़िम है कि पहली और तीसरी और चौथी और पाँचवीं क़िस्म की तरंगों को, जहाँ तक मुमकिन होवे, बिल्कुल न उठने देवे, बल्कि उनका बीजा भी अपने मन से आहिस्ता २ निकाल देवे। और दूसरी क़िस्म की तरंगें ज़रूरत के मुवाफ़िक़ और मुनासिब तौर पर उठावे और जिस क़दर बने, जल्द उनकी कार्रवाई करके फ़ारिग़ हो जावे। तब मन और सुरत निर्बन्ध और हलके होकर अभ्यास में दुरुस्ती के साथ लगेंगे और अंतर में रस और आनन्द भी मिलेगा। और जब तक कि फ़िज़ूल और बे-फ़ायदा तरंगें नहीं हटाई जावेंगी, तब

तक मन और उसके साथ सुरत, नीचे और बाहरमुखी धारों के साथ लिपटे और अटके रहेंगे, और न तो सिमटेंगे और न दसवें द्वार की तरफ़ सरकेंगे, और जो हिदायत कि अभ्यास की निसबत की गई है, उसकी कार्रवाई, जैसा कि चाहिये, दुरुस्त नहीं बन पड़ेगी और न उसमें जल्द तरक़्क़ी होगी।

३५—सच्चे परमार्थी को इस बात की भी अहतियास रखनी चाहिये कि बे-मतलब और बे-ज़रूरत बात-चीत में किसी की बुराई-भलाई यानी निंदा-स्तुति न करे और न दूसरे की ज़बान से, जहाँ तक मुमकिन होवे, सुने। बल्कि जब-कभी ऐसा इत्तिफ़ाक़ पेश आवे तो दूसरों की बुराई-भलाई देख कर या सुन कर अपने मन को नसीहत करे कि उसी क़िस्म की बुराई की बातों से बचना इख़्तियार करे और भलाई की बातों को अपने वास्ते नमूना समझ कर उनके मुआफ़िक़ आप भी कार्रवाई करे।

३६—ऐसे ख़्यालों का जिनका ज़िक्र ऊपर लिखा गया, मन में जमा होने और दौरा करने का नाम मलीनता और चंचलता है और जब तक यह विकार दूर न होंगे या कम न होते जावेंगे, तब तक सफ़ाई का आना और भजन का दुरुस्ती से बनना मुश्किल है।

३७—जो जो ख़्याल कि मन में ऊपर की क़िस्मों के पैदा होते हैं, असल में यही सूक्षम कर्म और भर्म हैं। जब उनकी कार्रवाई बाहर की जाती है, तब उन कर्मों और भर्मों का रूप बाहर बनता है और हर एक शख़्स उनको देखता है। लेकिन जब तक कि वे ख़्याल और रूप मन में धरे हैं, चाहे वे शुभ या नेक हैं और चाहे अशुभ या बद हैं, दूसरा कोई उनसे वाक़िफ़ नहीं हो सकता, अलबत्ता मालिक अंतरयामी उनको देखता है और जो शख़्स ख़्याल करने वाला होशियार है, तो वह अपने मन की हालत को आप जान सकता है।

३८—इससे ज़ाहिर है कि किसी आदमी के असली ख़वास और चाल-चलन और मन की हालत से कोई शख़्स वाक़िफ़ नहीं हो सकता, जब तक कि उसके ख़्यालों का स्वरूप बाहर प्रगट न होवे। यह हाल सही सही उस वक़्त मालूम हो सकता है कि जब उससे किसी को काम पड़े या किसी क़िस्म के व्यवहार का बर्ताव पेश आवे। उस वक़्त ख़बर पड़ती है कि फ़लाँ आदमी असल में सच्चा है या झूठा और नेक है या बद।

३९—ज़ाहिरी कार्रवाई और चाल-चलन और व्यवहार वग़ैरा से किसी शख़्स का असली हाल पूरा २ सही नहीं मालूम हो सकता, क्योंकि ब-सबब ख़ौफ़ हाकिम और

उसके क़ानून के, और भी ख़ौफ़ और शरम बिरादरी और दोस्त आशनाओं और पड़ोसियों के, और ख़ौफ़ नुक़सान रोज़गार और पेशे के, आदमी के बहुत से असली ख़वास और ख़सलत छिपे रहते हैं। लेकिन जब उसको मौक़ा मिले और किसी क़िस्म का ख़ौफ़ ज़्यादा न मालूम पड़े, तब वह अपनी ज़ाहिरी कार्रवाई के बिल्कुल बर-ख़िलाफ़ बर्तने को तैयार हो जाता है या बर्तावा करने लगता है। तब ख़बर पड़ती है कि अंदरूना उसका कैसा है।

४०—इस वास्ते पूरा २ एतबार, सब तरह की कार्र-वाई और व्यवहार में, उस शख़्स का हो सकता है कि जिसके दिल में ख़ौफ़ अपने सच्चे कुल्ल मालिक का, यानी उसकी अप्रसन्नता और अपने परमार्थी नुक़सान का बसा हुआ है। वह हर वक़्त और हर हालत में और हर एक से सच्चा बर्तेगा और उसका अंतर और बाहर यकसाँ होगा। और जो कि दुनिया के ख़ौफ़ों के सबब से, थोड़ी-बहुत दुरुस्ती के साथ अपना ज़ाहिर बनाये हुये रखते हैं, उनका, वक़्त कम होने उन ख़ौफ़ों के, पूरा ऐतबार और भरोसा नहीं किया जा सकता है, क्योंकि वे, उस वक़्त के अपने अंदरूनी ख़्यालात के ब-मूजिब, बे-धड़क और बे-ख़ौफ़ बर्तने को तैयार हो जावेंगे।

४१—सच्चे परमार्थी को अपने मन के चाल-चलन और उसके ख़वासों को अपने अंतरी ख़्यालात और तरंगों से जाँचना चाहिये। और जब तक कि अंतर में सफ़ाई न होवे और सच्चे मालिक और सतगुरु का ख़ौफ़ दिल में पैदा न होवे और परमार्थी नुक़सान के बचाने की पक्ष मन में न आवे, तब तक अपने तईं गुनहगार और विकारों से भरा हुआ समझ कर जतन उनके दूर करने का, जैसा कि संतों ने फ़रमाया है, करता रहे और जब-तब चरणों में राधास्वामी दयाल और सतगुरु के प्रार्थना और फ़रियाद भी करता रहे। उनकी मेहर और दया से आहिस्ता आहिस्ता सफ़ाई होती जावेगी और उसी क़दर भजन का रस भी मिलता जावेगा कि जिससे शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा।

४२—इसमें कुछ शक नहीं कि बग़ैर राधास्वामी दयाल की दया के, जीव की ताक़त नहीं है कि अपने बल से यह काम कर सके। लेकिन जो वह बचन सुन कर और समझ कर सच्चा इरादा इस बात का करेगा कि विकारों को दूर करके और प्रेम की दौलत हासिल करके एक दिन राधास्वामी दयाल के चरणों में पहुँच कर, अमर और परम आनन्द को प्राप्त होऊँ, और जो जुगत कि राधास्वामी दयाल ने फ़रमाई है, उसको कर्रवाई और अभ्यास थोड़ी-बहुत प्रीति और प्रतीत के साथ शुरू करेगा और अपने

मन और इन्द्रियों की थोड़ी-बहुत सम्हाल और निगहबानी शुरू कर देगा, तो कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल अपनी दया से उसको मदद देते जावेंगे, यानी आहिस्ता २ उसका प्रेम बढ़ाते जावेंगे और एक दिन निर्मल करके अपने चरणों में बासा देवेंगे।

४३—जिस क़दर कि प्रेम राधास्वामी दयाल के चरणों का बढ़ता जावेगा, उसी क़दर मन और सुरत सिमट कर अंतर में चढ़ते जावेंगे और विकारी अंग और जितने कि फ़िज़ूल ख़्याल और तरंगें हैं, वे सहज में आप ही झड़ते जवेंगे और दिन २ सफ़ाई होती जावेगी और एक दिन काम पूरा बन जावेगा।

॥ बचन २० ॥

वर्णन भूल और भरम और निर्बलता जीव का और यह कि बिना मेहर और दया कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु के, और अभ्यास उस करनी के कि जो वे बतावें, इसका उलट कर निज घर में पहुँचना यानी सच्चा उद्धार मुमकिन नहीं है।

१—जीव को इस देश में आये हुए बहुत अर्सा गुज़र गया और बहुत से जन्म इसने धारण किये और

अनेक क़िस्मों के संग और सोहबत में रह कर, तरह २ के ख़वास और स्वभाव इसके मन में पैदा हो गए। यहाँ तक कि यह अपने निज मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल को, जिनकी यह अंश है, और निज धाम को, जहाँ का यह असल में बासी है, बिलकुल भूल गया और इसी देश को अपना वतन और इसी देह को अपना स्वरूप और यहाँ के संग-सोहबत को अपना प्यारा संग समझ कर इन्हीं में बर्तने लगा, और यहाँ ही के भोग-बिलास को अपने आनन्द और सरूर का वसीला जान कर उनके हासिल करने के लिये मेहनत और कोशिश करता है और जब वे प्राप्त होवें तो उन में मग्न होकर बर्तता है और आम तौर पर सिवाय दुनिया और उसके सामान के विस्तार और तरक़्क़ी के, और कोई ज़बर ख़्वाहिश दिल में नहीं लाता है।

२—इस क़दर उतार सुरत का पिंड में नीचे की तरफ़ हो गया है, और इस क़दर तमोगुण यानी ग़फ़लत, भूल और भर्म ने इसको घेर लिया है कि जो कोई इसको निज घर का पता जनावे या उसकी महिमा सुनावे, तो इसकी तव-ज्जह ऐसे बचनों की तरफ़ बहुत कम आती है और मन में शक और शुभे इस कसरत से भरे हुए हैं कि जब तक कोई अर्सा यह सच्चे भेदी और निज घर के पहुँचे हुए या पहुँचने

के जतन करने वालों का संग न करे, तब तक, वे भर्म और संदेह दूर नहीं हो सकते, और सच्चों के बचन की प्रतीत नहींआ सकती है।

३—एक भारी सबब प्रतीत न आने का यह भी है कि इस दुनिया में बहुत से पाखंडी और रोज़गारी लोगों ने सच्चों की नक़ल करके, अपने तईं पुजवाने या अपनी मान-बड़ाई और धन पैदा करने के लिये दुकान खोल कर, जीवों को अनेक तरह के धोखे दिये, और उनका धन जिस क़दर बन सका, खींचा, और तरह २ के बचन परमार्थी अपनी बुद्धि और चतुराई से गढ़ कर और कुछ इशारा सच्चों के बचनों का लेकर, अनेक तरह की पूजा जारी करी, और अनेक इष्ट जीवों को बँधवाये कि जिसके सबब से परमार्थ में अनेक गिरोह और फ़िरक़े हो गये और उनका आपस में मेल और इत्तिफ़ाक़ न रहा, बल्कि लड़ाई और झगड़े और दुश्मनी आपस में इस क़दर बढ़ गई कि एक दूसरे का खंडन करने लगा और हर एक गिरोह अपने तईं सच्चा और पूरा और दूसरों को झूठा और ओछा समझने और कहने लगा।

४—प्रथम तो जीवों को दुनिया के देह और रोज़-गार के कारोबार से फ़ुर्सत बहुत कम मिलती है। और जो थोड़ा वक़्त फ़ुर्सत का मिलता भी है तो वह भोग-विलास और

बे-फ़ायदा बात-चीत और कामों और सैर और तमाशे वग़ैरा में ख़र्च किया जाता है। इस वजह से किसी की तवज़्जह परमार्थ और उसकी तहक़ीक़ात की तरफ़ नहीं आती है। और जो किसी को थोड़ा-बहुत शौक़ परमार्थ और उसके खोज का पैदा भी हुआ, तो उसको बड़ी हैरानी और परेशानी होती है कि क्या करूँ और किसके बचन मानूं, क्योंकि हर एक जुदे-जुदे तौर और तरीके से परमार्थ का हाल बयान करता है और जुदी तरकीब वास्ते हासिल करने मोक्ष या उद्धार के बताता है और अपना इष्ट भी जुदा-जुदा मुक़र्रर किया है।

५—ज़ाहिर है कि जो कुल्ल परमार्थ के खोज करने वालों को सच्चे मालिक का पता और भेद मिला होता, तो सब उसी एक का इष्ट बाँधते और उससे मिलने का एक ही रास्ता और एक ही जुगत बयान करते और उन में आपस में मेल और इत्तिफ़ाक़ रहता और बर-ख़िलाफ़ी और ईर्षा और विरोध न होता। लेकिन जब कि वे जुदा २ इष्ट क़रार देते हैं और तरीक़े भी जुदा २ बयान करते हैं ओर कोई मालिक की मौजूदगी का यक़ीन करते हैं और कोई इनकार करते हैं, तो इससे साफ़ साबित है कि यह सब सच्चे कुल्ल-मालिक से बे-ख़बर हैं और जो कुछ कि ये बातें कहते हैं, वे या तो झूंठी और बनावट की हैं या

ओछी और अधूरी हैं। फिर, ऐसी सूरत में, सच्चे खोजी को सच्ची और पूरी बात का दरियाफ़्त करना निहायत मुश्किल बल्कि ना-मुमकिन हो गया।

६—मालूम होवे कि सच्चे कुल्ल-मालिक का भेद और पता और मिलने की जुगत, सिवाय उसके निज भेदी के, और कोई नहीं जान सकता। या तो वह अपना भेद आप नर स्वरूप धर कर कहे या अपने निज भेदी,को जो संत सत-गुरु हैं, हुक्म देवे कि वे जगत में प्रगट होकर वर्णन करें। इस सबब से यह भेद अब तक गुप्त रहा।

७—जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, वे या तो ब्रह्म अथवा परमेश्वर ने आप जगत में औतार लेकर प्रगट किए और हद्द उनकी ब्रह्म पद तक रही और या उसकी (परमेश्वर की) अंश और कलाओं ने, जैसे ऋषीश्वर और मुनीश्वर और जोगी और जोगेश्वर और पीर, पैग़म्बर और औलिया वग़ैरा ने जारी किये, पर सच्चे कुल्ल-मालिक का भेद और पते का ज़िक्र भी इन मतों में नहीं हैं।

८—सिवाय इसके, जो जुगती कि इन मतों में वास्ते उद्धार जीव के, मिस्ल प्राणायाम वग़ैरा, बयान की है, वह और उसके संयम निहायत कठिन और ख़तरनाक हैं, और हर एक से, ख़ास कर ग्रहस्थियों से, उनकी कर्रवाई मुश्किल और ना-मुमकिन है।

९—और जोकि इन सब मतों में वैराग और पुरुषार्थ पर ज़्यादा ज़ोर दिया है और सहारा और आसरा किसी का नहीं रक्खा है, इस सबब से जीव, जो कि इस ज़माने में ख़ास कर, निहायत दुखी और निबल हो रहे हैं और अनेक तरह की चिन्ता और रोग-सोग वग़ैरा में गिरफ़्तार रहते हैं, ताक़त उस कार्रवाई की नहीं रखते यानी न तो उनसे वैराग की धारणा दुरुस्ती से हो सकती है और न वह मेहनत और मशक़्क़त अभ्यास और उसके संयमों की सम्हाल वग़ैरा में, जैसा कि चाहिये, बन पड़ती है। इस सबब से क्या गृहस्थ और क्या विरक्त, थोड़ा-बहुत मामूली साधन दृष्टि या नाम के सुमिरन या ध्यान वग़ैरा का (और वह भी बे-ठिकाने) करके रह जाते हैं। और बाक़ी पोथियाँ पढ़ते या सुनाते हैं और ज़बानी महात्माओं के बचनों का अपनी बुद्धि और समझ के अनुसार, निर्णय और विचार करते रहते हैं।

१०—और बहुत से जीव तो ज़ाहिरी पूजा और पाठ और संयम वग़ैरा में, मिस्ल तीर्थ, ब्रत, मूर्त और मंदिर और नाम के ज़बानी सुमिरन, और पोथियों के पाठ वग़ैरा में लग गये। उनको उस नक़ल के असल की भी, जिसकी पूजा कि उन्होंने इख़्तियार की है, ख़बर नहीं है और इस पूजा से मुराद, औतार और देवताओं के स्वरूप से है जो कि पाषाण और धात के बना कर, मंदिरों में स्थापित किये हैं

या और कोई निशान पिछले महात्माओं का, किसी ख़ास जगह रक्खा है और उसका दर्शन, साथ ताज़ीम और अदब और भाव और प्यार के, करते हैं।

११—मालूम होवे कि इस कलियुग में, मुआफ़िक़ हुक्म कुल्ल-मालिक के, संत भी नर रूप धर कर इस दुनिया में प्रकट हुये और उन्होंने सत्तपुरुष का भेद, जो ब्रह्म और पारब्रह्म के परे है, सुनाया, और जुगत उसके धाम यानी सत्य लोक में पहुँचने की, सुरत-शब्द मार्ग की कमाई से समझाई। लेकिन जोकि कुल्ल जीव परमेश्वर या देवताओं या महात्माओं के इष्ट में बँधे हुये थे और बाहरमुखी पूजा, मूर्त और तीर्थ और निशान वग़ैरा की आम तौर पर जारी थी, इस सबब से संतों के बचन को बहुत कम जीवों के माना। और जब संत और उनके जाँ-नशीन गुप्त हो गए, तब वह भेद और तरीक़ा अभ्यास का भी गुप्त हो गया।

१२—इस तरह जब २ और जहाँ २ संत या उनके साथ प्रगट हुये, तो उनके और उनके अभ्यासी जाँ-नशीनों के वक़्त में, कार्रवाई सतसंग और अभ्यास वग़ैरा की जारी रही। लेकिन जब अभ्यासी गुप्त हो गये, तब वह भेद भी गुप्त हो गया। और जो लोग कि पीछे उस मत में शामिल हुये, वे कोई न कोई बाहरमुखी पूजा या कार्रवाई और पोथियों के पढ़ने-पढ़ाने में, मिस्ल और मतों के जीवों के, अटक रहे।

१३—जबकि ऐसी हालत जगत की देखी कि कोई भी सच्चे मालिक के भेद से वाक़िफ़ नहीं रहा और न उसके धाम में पहुँचने का रास्ता और जुगत चलने की जानता है और सच्चे उद्धार का रास्ता बिल्कुल बंद पाया, तब कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल, आप संत सतगुरु रूप धर कर जगत में प्रकट हुये अपना निज भेद और निज धाम का हाल, जो कि ब्रह्म, पार-ब्रह्म और सत्तनाम सत्तपुरुष के परे है, और तरीक़ा अभ्यास सुरत-शब्द योग का आप बयान फरमाया और अभ्यास में ऐसी आसानी कर दी कि हर कोई गृहस्थ और विरक्त और मर्द और औरत उस को सहज तौर से कर सक्ता है।

१४—और उनहोंने दूसरे मतों का हाल भी बयान किया कि जिससे मालूम होवे कि कौन मत कहाँ तक पहुँचा है और उनके आचार्य कहाँ और किसका इष्ट बाँध कर ठहर गये और क्या तरीक़ा अभ्यास का उन्होंने जारी किया।

१५—और एक ख़ास और भारी दया जीवों पर यह फ़रमाई कि जो जीव राधास्वामी मत को क़ुबूल करके और उनके चरणों का इष्ट बाँध कर, जिस क़दर हो सके, अभ्यास सुरत-शब्द योग का शुरू करेगा, तो वे आप उसके सहाई होवेंगे और अपनी दया का बल देकर जिस क़दर करनी मुनासिब है, उससे करा कर, आप उसकी सुरत

को चढ़ा कर धुर मक़ाम में पहुँचावेंगे, और जो मुनासिब होगा तो दो या तीन या चार जन्म में उसका काम पूरा बना देंगे, क्योंकि जीव निहायत निबल और बारम्बार भूलनहार है और अपने बल से कोई कार्रवाई, जैसे संसार से वैराग और चरणों में अनुराग, नहीं कर सकता ।

१५—दूसरी ख़ास और गहरी दया यह फ़रमाई कि अभ्यास को ऐसा आसान कर दिया कि औरतें और मर्द, बग़ैर छोड़ने घर-बार और रोज़गार के, आसानी के साथ थोड़ा-बहुत कर सकते हैं और गृहस्थ में बैठे हुए अपनी सच्ची मुक्ति होती हुई आहिस्ता-आहिस्ता, इसी ज़िन्दगी में देख कर, चरणों में प्रीति और प्रतीत बढ़ा सकते हैं कि जो एक दिन निज धाम में पहुँचा कर छोड़ेगी ।

१७—ऐसी भारी दया और मेहर का कौन शुक्र अदा कर सकता है ? और असल में सच्ची और पूरी दया इसी को कहते हैं कि ग़रीब और लाचार दुखियाओं की, घर बैठे, ख़बर ली जावे यानी कुल्ल-मालिक आप इस लोक में आकर या अपने निज भेदी और प्रेमी को भेज कर और अपनी दया का बल देकर जीवों से थोड़ी-सी मुनासिब और ज़रूरी करनी करावें, और फिर पूरा फल बतौर दान और इनाम के बख़्शें, यानी सहज २ भक्ति और अभ्यास करा कर अपने लोक में बासा देकर जन्म-

मरण और काल और कर्म के कष्ट और क्लेश से बचा लेवें।

१८—ऐसी दया अब तक किसी ने नहीं करी और न कर सकता है और यह सच भी है कि सिवाय कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के ऐसी दया कौन कर सकता है कि थोड़ी सी प्रीति और प्रतीत और सेवा के एवज़ में, जीव के पूरे उद्धार का सिलसिला जारी कर देवे ? यह काम कुल्ल-मालिक आप कर सकता है या उसकी निज अंश, जिसको वह इख़्तियार देवे, कर सकती है। और दूसरे की ताक़त नहीं कि जीवों को काल और कर्म और माया के जाल से निकाल कर, उसके घेर के पार, निज देश में, पहुँचावे।

१९—काल पुरुष यानी ब्रह्म और परमेश्वर और ख़ुदा, माया देश को कुल्ल रचना का मालिक है और उस को मंज़ूर भी यही है कि जीवां को अपनी हद्द के पार न जाने देवे। कुल्ल देवता और माया की शक्तियाँ उसके इख़्तियार में हैं और सब रचना उससे डरती है और उसके हुक्म में चल रही है।

२०—यह काल पुरुष सिर्फ़ सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल और उनकी अंश, संत सतगुरु से डरता है, और उन के हुक्म में दख़ल नहीं दे सकता। यानी जिन जीवां पर कि उन्होंने अपनी दया की मुहर लगा दी, उन को वह रोक

नहीं सकता, बल्कि उनको रास्ता तै करने में अपनी हद के अंदर मदद देता है।

२१—अब विचारो कि जिस किसी को कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल आप मिले या उनकी अंश से मेला हुआ, वह किस क़दर बड़भागी है? और जो २ उनकी जैसी-तैसी शरण लेकर, सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास में लग गये, वे भी बड़भागी हैं, क्योंकि राधास्वामी मत और उसके अभ्यास के रखवार राधास्वामी दयाल आप हैं, और शरण वालों और जैसी-तैसी करनी वालों की रक्षा और ख़बर-गीरी अपनी दया से आप करते हैं। और इस दया और रक्षा का हाल राधास्वामी मत वालों को चंद रोज़ के अभ्यास के बाद आप मालूम हो सकता है और अपना उद्धार होता हुआ इसी ज़िन्दगी में आप देख सकते हैं।

२२—असल हाल यह है कि बाहरमुखी पूजा और परमार्थी कार्रवाई, जैसे तीर्थ और व्रत और नाम का सुमिरन और ध्यान और पोथियों का पाठ वग़ैरा, हर कोई कर सकता है, लेकिन घट में मन और सुरत का ऊँचे देश में, आकाश के परे चढ़ाना, यह काम मुशकिल है और किसी की ताक़त नहीं कि इसको दुरुस्ती के साथ निर्विघ्न कर सके, जब तक कि कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु या साधगुरु अपनी दया का बल साथ न देवें और रास्ते में काल

और कर्म और माया ओर मन के विघ्नों से अपनी रक्षा करके न बचावें ।

२३—यही सबब है कि ऐसे कुल्ल मतों के लोग जो कि दुनिया में जारी हैं, बाहरमुखी कामां में लग रहे हैं और बाज़े नाभि या हिरदे या छठे चक्र में ध्यान भी करते हैं, लेकिन उनको चढ़ाई का फ़ायदा पिंड में भी जैसा कि चाहिये, हासिल नहीं होता । और जो किसी ख़ास मत का सिद्धान्त पद ब्रह्मान्ड में भी है, तो उस के मानने वाले लोग उसके हाल से बे-ख़बर हैं और रास्ते के भेद और चलने की जुगत का तो कुछ ज़िक्र ही नहीं, बल्कि सिद्धान्त पद को सर्व व्यापक मान कर चलना-चढ़ना फ़िज़ूल बताते हैं । इस वजह से इनमें से किसी का भी सच्चा और पूरा उद्धार यानी जन्म-मरण से क़तई छुटकारा नहीं होता ।

२४—यह बात सिर्फ़ राधास्वामी मत में जहाँ कि कुल्ल मालिक आप मददगार हैं, हासिल हो सकती है, क्योंकि जब तक कुल्ल-मालिक आप या संत सतगुरु या साध गुरु उसके भेजे हुये, इस लोक में, जीवों के लेने के वास्ते न आवें, तब तक कोई जीव पिंड के ऊँचे देश और ब्रह्मांड में, और इन दोनों के परे राधास्वामी पद अथवा निर्मल चैतन्य देश में जा नहीं सकता, और न देह और मन और माया और इच्छा और इन्द्रियों और भोगों वग़ैरा से पीछा

छूट सकता है, क्योंकि जब संत सतगुरु या साध गुरू प्रगट होंगे, तब वे जीवों की प्रीति और सब तरफ़ से हटा कर, पहिले अपने चरणों में जोड़ेंगे, और फिर अपने निज रूप यानी चैतन्य शब्द स्वरूप में लगा कर, निज धाम में पहुँचा देंगे।

२५—बग़ैर प्रेम के यह रास्ता तै नहीं हो सक्ता है और वह प्रेम राधास्वामी दयाल के चरणों में बग़ैर संत सतगुरु या साध गुरू और उनके प्रेमियों के संग-सोहबत के हासिल नहीं हो सकता है और न सच्ची दीनता कुल्ल मालिक और सतगुरु के चरणों में आ सकती है

२३—ऊपर के बयान से ज़ाहिर है कि जीव का सच्चा उद्धार बग़ैर कुल्ल-मालिक यानी धुर की दया के, मुमकिन नहीं है, यानी जब तक कि संत सतगुरु या साध गुरू (जो कि होनहार संत हैं) नहीं मिलेंगे, तब तक भेद कुल्ल-मालिक और रास्ता उस के निज धाम का और तरीक़ा चलने का मालूम न होगा और रास्ता तै करने में मदद नहीं मिलेगी। और यह संत सतगुरु और साधगुरू कुल्ल-मालिक के हुक्म से संसार में आते हैं और सच्चा उपदेश जीवों को देकर उनको निज घर की तरफ़ चलाते हैं। इस वास्ते जब तक कोई जीव कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की शरण न लेवेगा और उनके भेजे हुये संत सतगुरु या साधगुरू से

प्रीति नहीं करेगा, तब तक उसके उद्धार की कार्रवाई शुरू न होवेगी। और जो सच्चे मन से शरण लेकर जैसी-तैसी कार्रवाई यानी अभ्यास सुरत-शब्द मार्ग का शुरू कर देगा और जहाँ तक बन सके, हुकुम और आज्ञा के मुआफ़िक़ अपना चाल-चलन दुरुस्त करता जावेगा, उसको बराबर मदद मिलती जावेगी और कुल्ल-मालिक की मेहर और दया उसको एक दिन दयाल देश में पहुँचा कर छोड़ेगा, चाहे यह काम एक जन्म में बने या दो, तीन या चार जन्म में। हर जन्म में भक्ति और भजन बढ़ते जावेंगे।

२७—जो कोई कहे कि जब संत सतगुरु या साध गुरू प्रगट होवें, तब कुल्ल जीवों का उद्धार होना चाहिये, सो यह बात इस तौर पर दुरुस्त है कि जो जीव उनके सनमुख आवेंगे, उन पर ज़रूर उनकी दया होगी और उनके उद्धार का सिलसिला आगे-पीछे और अबेर-सबेर जारी हो जावेगा यानी जो अधिकारी जीव हैं, वे ब-हिसाब उत्तम, मध्यम, निकृष्ट और नीचे के, एक, दो, तीन या चार जन्मों में अपना काम बनवा लेंगे और बाक़ी जीवों के घट में दया का बीजा बो दिया जावेगा और वह उनके पिछले कर्मों को काट कर आहिस्ता २ अंकुर पैदा करेगा। और फिर वही जीव, अधिकारियों के शुमार में आजावेंगे और उनके पूरे उद्धार का सिलसिला जारी हो जावेगा,

यानी उनको हर जन्म में संत सतगुरु मिलेंगे और उनकी भक्ति और भजन बढ़ा कर, एक दिन निज धाम में पहुँचा देंगे

२८—संत सतगुरु सब एक हैं, उन में आपस में कुछ भेद नहीं है। जब हुकुम होता है, तब वे जीवों को आम तौर पर उपदेश फ़रमाते हैं और जब तक ऐसी मौज है, सिलसिला सतसंग और उद्धार का जारी रहता है।

२९—इस वास्ते, कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने वक़्त के संत सतगुरु या साधगुरू का खोज करते रहें और जब वे भाग से मिल जावें, तो उन से उपदेश लेकर अभ्यास जारी कर दें, और उनके और कुल्ल-मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के चरणों में प्रीति और प्रतीत बढ़ाते रहें, तो एक दिन उनका काम पूरा बन जावेगा।

३०—संत सतगुरु और साधगुरू का निशान यह है कि वे सुरत-शब्द मार्ग का उपदेश करेंगे, और आप भी शब्द अभ्यासी होंगे और कुल्ल-मालिक सत्तपुरुष राधा-स्वामी दयाल का इष्ट बँधवावेंगे, और अपने बचन सुना कर,कर्म, भर्म और संशय दूर करावेंगे और बाक़ी पहिचान उनकी सतसंग और उनके मार्ग के अभ्यास से आवेगी।

३१—ख़ुलासा यह कि बग़ैर कुल्ल-मालिक की दया के, संत सतगुरु से मेला नहीं होगा, और न उन में भाव

आवेगा और जब विशेष दया होगी, तब जीव से सुरत-शब्द मार्ग का अभ्यास बन पड़ेगा और वह, संत सतगुरु की आज्ञा अनुसार, बर्ताव शुरू करेगा। और जब और ज़्यादा दया होगी, तब अंतर में उस को रस और आनन्द मिलना शुरू होगा और प्रीति और प्रतीत दिन २ बढ़ती जावेगी और इस तरह रोज़-ब-रोज़ तरक़्क़ी होती जावेगी और एक दिन काम पूरा बन जावेगा।

३२—लेकिन जो कोई इस बात को सुन कर यह कहे कि अब हम को कुछ करना ज़रूर नहीं है, जब दया होगी, वह आप करालेगी, सो यह कहन और समझ इस क़दर ना-दुरुस्त है कि उस को तलाश करना, संत सतगुरु और उनके सतसंग का बहुत ज़रूर है। और जब वे मिल जावें, तब उनके चरणों में प्रेम-प्रीति करना और उनसे उपदेश लेकर अभ्यास शुरू कर देना मुनासिब है। मेहर और दया, इस कार्रवाई में भी संग होगी और बाक़ी जो कुछ करनी दरकार और ज़रूर होगी, वह भी मेहर और दया करावेगी। क्योंकि दुनिया के कामों में भी आदमी तलाश और मेहनत से बाज़ नहीं आते और जो कुछ नतीजा उनकी मेहनत का होता है, वह प्रारब्ध अनुसार मिलता है, फिर परमार्थ में काहिली और सुस्ती और बे-परवाही किसी सूरत में जायज़ और दुरुस्त नहीं हो सकती और जो ऐसा करेगा, वह ख़ास दया से महरूम रहेगा।

३३—अब समझना चाहिये कि करनी और दया संग २ चलेंगी, तब काम पूरा बनेगा, और ज्यों २ करनी बढ़ती जावेगी, उसी क़दर मेहर और दया भी बढ़ती जावेगी। बिना कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु की दया के, जो करनी की जावेगी, वह सच्चे उद्धार का फल नहीं देगी, बल्कि अहंकार पैदा करेगी और अभ्यासी को काल और माया के जाल में अटकावेगी और फिर आइंदा की तरक़्क़ी का रास्ता बंद हो जावेगा। और यह हाल उन लोगों का है कि जो, जुगती दरियाफ़्त करके, स्वतन्त्र यानी अपने बल से करनी करना चाहते हैं और सतगुरु से कुछ ताल्लुक़ रखने की ज़रूरत नहीं समझते।

बचन २१

वर्णन इस बात का कि सच्ची मुक्ति क्या है, और कौन जगत से और कहाँ पहुँचने पर हासिल हो सकती है।

१—मुक्ति रूह की रुस्तगारी या नजात या छूटने और बंधन टूटने का नाम है।

२—बंधन दो क़िस्म के हैं—पहिला, तन, मन और इन्द्रियों का, और दूसरा, स्त्री, पुत्र, कुटुम्ब-परिवार और बिरादरी और धन और माल और भोग-बिलास और हुकूमत और नामवरी वग़ैरा का।

३—पहली क़िस्म का बंधन, जो तन, मन और इन्द्रियों के साथ कहा गया, उसमें स्थूल, सूक्ष्म और कारण और उससे ऊँचे के दर्जे की देह और मन और इन्द्रियाँ शामिल हैं, यानी हर एक दर्जे में रूह का बंधन उस दर्जे के मसाले की बनी हुई देह के साथ होता चला आया है और इसी तरह हर एक दर्जे यानी मंडल के भोग-बिलास और सामान वग़ैरा दूसरी क़िस्म के बंधनों में शामिल हैं।

४—इन बंधनों से अंतर और बाहर छूटने का नाम मुक्ति कहना चाहिये। जो ऐसी हालत जीते-जी न होवे तो इन बंधनों का ढीले होते जाना, वास्ते हासिल होने सच्ची और पूरी मुक्ति के, इसी ज़िन्दगी में ज़रूर चाहिये।

५—जिस तरकीब से कि अंतरी और बाहरी बंधन कम होते जावें, उसी का नाम सच्ची और पूरी जुगत, वास्ते हासिल होने सच्चे उद्धार के, समझना चाहिये और वह सुरत-शब्द मार्ग है। और इस समय में सिर्फ़ राधास्वामी मत में उसका अभ्यास जारी है। और किसी मत में उसका भेद और तरीक़ा अभ्यास का पूरा २ और साफ़ तौर पर बिल्कुल नहीं पाया जाता है।

६—अब मालूम होवे कि जहाँ तक माया की हद्द है, वहाँ तक माया के मसाले के ग़िलाफ़ दर्जे-ब-दर्जे रूह पर चढ़ते चले आये हैं, और जिस ग़िलाफ़ में बैठ कर रूह इस

लोक में ब-ज़रिये मन और इन्द्रियों के कार्रवाई करती है, वह स्थूल देह कहलाती है। और इसी देह के साथ कुल्ल बाहर के बंधन इस दुनिया में ताल्लुक़ रखते हैं। सो इनकी मुहब्बत कम होना, पहिले दर्जे की मुक्ति का शुरू होना है।

७—अब ग़ौर का मक़ाम है कि राधास्वामी मत के मुआफ़िक़ सच्ची और पूरी मुक्ति, पिंड और ब्रह्मांड के परे, यानी माया देश के पार, संतों के निर्मल-चैतन्य देश में पहुँच कर हासिल होगी। और वहीं पहुँच कर सुरत विदेह और बे-ग़िलाफ़ हो जावेगी। और नीचे के देश में किसी न किसी क़िस्म के ग़िलाफ़ और उसी दर्जे के मंडल की रचना और भोग-बिलास वग़ैरा में सुरत का बंधन रहा आवेगा और उस बंधन के सबब से दुख-सुख और जन्म-मरण का चक्कर भी जारी रहेगा। इस वास्ते, और किसी नीचे के दर्जे में, चाहे पिंड में होवे या ब्रह्मांड में, सच्ची मुक्ति प्राप्त नहीं हो सक्ती है। और जिस किसी ने कि उन दर्जों में मुक्ति का होना माना है, उन्होंने धोखा खाया। जो उन को संतों के देश की ख़बर होती तो वे रास्ते में न ठहर जाते।

८—ऊपर लिखा गया है कि सच्ची मुक्ति के हासिल करने की जुगत सिर्फ़ राधास्वामी मत में जारी है, सो इसका भेद समझना चाहिये कि कुल्ल रचना धारों की है

और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरणों से जो आदि-धार प्रगट हुई, वही आदि-सुरत यानी रूह की धार है। यह धार रास्ते में किसी क़दर फ़ासले पर ठहरती हुई और मंडल बाँध कर रचना करती हुई, पिंड में उतर कर, दोनों आँखों के पीछे मध्य में ठहरी है और वहाँ से बाक़ी के चक्रों में ठेका लेती हुई, गुदा चक्र तक पहुँची है। और इधर, वही सुरत ब-ज़रिये दो धारों के जो कि दोनों आँखों में तिल के मक़ाम पर उतर कर बैठी है, देह और दुनिया की कार्रवाई करती है। अब, जब तक कि यह दोनों धारें उलट कर तीसरे तिल में न पहुंचें, और वहाँ से एक धार होकर सुरत दर्जे-ब-दर्जे उन ठेकों को जहाँ कि उतार के वक़्त ठहरती आई है, पार कर के अपने निज धाम यानी भंडार में न पहुँचे, तब तक सच्चा और पूरा उद्धार या मुक्ति नहीं हो सक्ती है।

९—यह चढ़ाई सुरत की, मक़ाम २ पर शब्द के वसीले से हो सक्ती है। और राधास्वामी मत में हर एक मक़ाम के शब्द का पता और भेद जुदा २ बयान किया है। सो सुरत उस शब्द को सुनती हुई एक मक़ाम से दूसरे और दूसरे से तीसरे और इसी तरह धुर मक़ाम तक चढ़ती चली जावेगी और वहाँ पहुँच कर विश्राम करेगी। वही मक़ाम कुल्ल-मालिक का धाम है और वही निर्मल-चैतन्य देश कहलाता है।

१०—यह काम बग़ैर कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया के, नहीं बन सकता है। इस वास्ते, हर एक सच्चे परमार्थी जीव को चाहिये कि प्रथम खोज संत सतगुरु और उनके सतसंग का करे, और जब वे मिल जावें तो उनके चरणों में गहरी प्रीति करे, और अंतर और बाहर सतसंग और सेवा तवज्जह के साथ करके, उनको अपने ऊपर मेहरवान और मुतवज्जह करले। तब, उनकी मेहर और दया से अंतर में रास्ता काटना यानी मन और सुरत की चढ़ाई शुरू होगी और दिन २ रस और आनन्द प्राप्त होकर शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा।

११—मालूम होवे कि निर्मल-चैतन्य देश में माया नहीं है और वहाँ कुल्ल रचना रूहाना है यानी आनन्द और प्रेम स्वरूप है। और जो कि इस लोक और देह में भी जिस क़दर रस और आनन्द और ज्ञान है, वह सुरत-चैतन्य की धार के सबब से है, और सुरत उसका ख़ज़ाना है, इस वास्ते जो सुरत-चैतन्य का भंडार है, वही प्रेम और आनन्द और ज्ञान का भंडार है। वहाँ दुख-सुख और कष्ट और क्लेश नहीं है, हमेशा आनन्द ही आनन्द एक-रस, रहता है।

१२—पिंड और ब्रह्मांड में भी, जैसे कि माया ऊँचे देश में शुद्ध और लतीफ़ होती गई है, आनन्द और प्रेम

और ज्ञान, दर्जे-ब-दर्जे ज़्यादा होता गया है, लेकिन ब-सबब मिलौनी माया के, थोड़ी-बहुत मलीनता और माया के मसाले की बनी हुई किसी न किसी क़िस्म की देह का संग रहता है। और इसी सबब से थोड़ा-बहुत दुख और जन्म-मरण का कष्ट भी, चाहे ब-देर होवे, जारी रहता है। और यही वजह है कि संत फ़रमाते हैं कि इस देश में यानी पिंड और ब्रह्मांड की हद्द में, सच्चा और पूरा उद्धार और सच्ची मुक्ति नहीं हो सकती।

१३—और यही सबब है कि वेद मत वाले कहते हैं कि हमेशा की मुक्ति होना मुमकिन नहीं है और अबेर-सबेर और बाद प्रलय या महा प्रलय के तो ज़रूर आवागवन की कार्रवाई जारी रहेगी।

१४—भक्ति मार्ग वालों ने चार क़िस्मां की मुक्ति बयान की है—यानी सालोक, सामीप, सारूप और सायुज्ज। पहिली क़िस्म में भगवंत के लोक में बासा मिलता है, दूसरी क़िस्म में भगवंत के निकट विश्राम पाता है, तीसरी क़िस्म में भगवंत का रूप हो जाता है, और चौथी क़िस्म में अपने भगवंत में समा जाता है।

१५—लेकिन ज्ञानियों ने भगवंत का अभाव यानी उसके लोक की प्रलय होती हुई देख कर, बजाय भक्ति के ज्ञान की मुख्यता रक्खी। और ज्ञान से मतलब यह है कि

अपने उपास्य के लक्ष स्वरूप का, जो कि अनाम और अरूप है, दर्शन करके अंत को उस में समा जाना, और स्वरूप के स्थान में, ब-सबब उसके हमेशा क़ायम न रहने के, न ठहरना।

१६—इसी लक्ष्य चैतन्य को ज्ञानियों ने शुद्ध ब्रह्म माना। पर, संत फ़रमाते हैं कि उसके पेट में माया, बीज रूप में मौजूद थी, लेकिन इन ज्ञानियां को ब-सबब न मिलने भेद संतों के देश के, नज़र न आई और इस वास्ते इन का आवागमन भी क़तई नहीं छूटा।

१७—वेद में जो उपासना वर्णन करी है, वह ब्रह्म-पद यानी परमेश्वर की है, और पीछे करके, ब्रह्म के औतार स्वरूप और देवताओं वग़ैरा की जारी हुई, और उसके पीछे, सिर्फ़ नक़ल यानी मूर्तों की भक्ति जारी हो गई और असल का भेद और उसके प्राप्ति की जुगत यानी अंतर-अभ्यास बिल्कुल गुप्त हो गया।

१८—अब जो कोई उन को असल का भेद और उसके प्राप्ति की जुगत बतावे, तो उससे लड़ने और झगड़ने को तैयार होते हैं और सिर्फ़ मूर्ति पूजा ही में मग्न और तृप्त हुए नज़र आते हैं। अब ख़्याल करो कि इस मूर्खता और ग़फ़लत से किस क़दर परमार्थी नुक़सान जीवों का हो रहा है, यानी जड़ की पूजा करके सब

जीव जड़ हो रहे हैं, यानी नीचे की जोनों में उतरते चले जाते हैं।

१९—जो ब्रह्म-पद या उसके औतार स्वरूप की भक्ति, अंतर-अभ्यास के संग जारी रहती, तो भी किसी क़दर फ़ायदा जीवों को हासिल होता, यानी ऊँचे देश (ब्रह्मांड की हद्द में) बासा पाते और बहुत काल वहाँ सुख भोगते। लेकिन सिर्फ़ मूर्ति और तत्वों की पूजा से, बग़ैर भेद उनके असली स्वरूप और स्थान के, जीवों की करनी मुफ़्त बरबाद जाती है यानी सिर्फ़ शुभ कर्म का फल मिलता है और भगवंत के लोक में रसाई नहीं होती है।

२०—जो भक्ति कि संतों ने जारी फ़रमाई, वह कुल्ल-मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल की है, जिसका धाम ऊँचे से ऊँचा, पिंड और ब्रह्मांड और माया के घेर के पार, निर्मल-चैतन्य देश कहलाता है। वहाँ माया की मिलौनी बिलकुल नहीं है। इसी सबब से वह देश महा आनन्द और महा प्रेम और महा ज्ञान का भंडार है, और अनन्त और अपार और अगाध और अरूप और अनाम उसकी सिफ़त है। वहाँ पहुँच कर सुरत, अपने सच्चे माता-पिता राधास्वामी दयाल के दर्शनों का बिलास देखती है। वह देश अजर और अमर है और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल भी अजर और अमर हैं, और वहाँ का सुख और

आनंद भी अजर और अमर है, और यह सुरत भी वहाँ पहुँच कर अमर हो जावेगी।

२१—इस वास्ते, संतों ने भक्ति और दीनता और प्रेम की मुख्यता रक्खी है, क्योंकि उनका भगवंत कुल्ल-मालिक और उसका धाम और उसकी भक्ति और सेवक—सब अमर और अजर हैं, और धुर मक़ाम में पहुँचने पर सेवक यानी सुरत को इख़्तियार रहता है कि जब चाहे तब अपने स्वामी से मिल जावे, और जब चाहे तब अलेहदा होकर और सन्मुख रह कर दर्शनों का आनन्द और बिलास करे। इन दोनों हालतों को भेद-भक्ति और अभेद-भक्ति कहते हैं। बग़ैर कुल्ल-मालिक की भक्ति के, किसी सूरत में किसी का पूरा उद्धार नहीं हो सकता।

२२—पूर्ण भक्ति से मतलब यह है कि भक्त, संतों की जुगत के मुआफ़िक़ अभ्यास करके अपने भगवंत के निज धाम में पहुँच कर चरणों में बासा पावे और दर्शन का रस और आनन्द लेवे। और वह निज धाम पिंड और ब्रह्मांड के परे है। इसी पूर्ण भक्ति का नाम पूरी मुक्ति और सच्चा और पूरा उद्धार है। इस सच्चे उद्धार और सच्ची मुक्ति की प्राप्ति के वास्ते, कुल्ल जीवों को थोड़ा-बहुत जतन करना (संतों की जुगत के मुआफ़िक़, मुनासिब और लाज़िम है।

बचन २२

सच्चा मत और सच्चा पंथ क्या है, और सकी कार्रवाई क्या है, और किस तौर से होती है, और उससे क्या फ़ायदा हासिल होगा ?

१—सच्चा मत उसको कहते हैं कि जो सच्चे की ख़बर और भेद और समझौती देवे, और सच्चा वह है कि जो हमेशा एक-रस क़ायम रहे और जिसमें कभी तग़ैयुर और तबद्दुल वाक़ै न होवे ।

२—सच्चा पंथ उसको कहते हैं कि जो ऐसे सच्चे से (कि जिसकी तारीफ़ ऊपर की गई) मिलने का रास्ता और जुगत चलने की बतावे । सो जहाँ सच्चा मत है, वहीं सच्चे पंथ का भी भेद होगा, यानी ये दोनों, सच्चा मत और सच्चा पंथ बतौर जोड़े के हैं कि जहाँ एक होगा, वहाँ दूसरी भी ज़रूर होगा ।

३—सच्चे में बड़े भेद हैं यानी एक की निसबत दूसरे को, जो ज़्यादा देर ठहरे, लोग सच्चा कहते और मानते हैं । लेकिन यह कथन और मानन दोनों ग़लत हैं ।

४—असल सच्चा वही है कि जो ब-मुक़ाबले कुल्ल रचना के, हमेशा एक-रस क़ायम है और जो रचना नहीं भी होवे तो भी ब-दस्तूर क़ायम और मौजूद रहता है।

५—इस असली सच्चे का पता और भेद, सिवाय संतों के, जो कि उसके हमेशा संग रहते हैं, और किसी को नहीं मालूम हुआ।

६—इस दुनिया में उसका भेद या तो उसने आप सतगुरु रूप धर कर प्रगट किया या उसकी आज्ञा से संतों ने, जब २ वे उसके हुक्म के मुआफ़िक़ इस लोक में आये, ज़ाहिर किया।

७—ऊपर जो लिखा गया है कि लोगों ने एक के मुक़ाबले में दूसरे को सत्त माना है और ऐसे सत्त कितने हो हैं, इसका मुफ़स्सिल बयान इस तौर पर है कि परमार्थ में जो कोई खोज लगाता हुआ चला और उसको एक पद ऐसा मिला या नज़र आया कि जिससे कुल्ल नीचे की रचना पैदा या ज़ाहिर होती हुई और जिसके आसरे वह ठहरी हुई मालूम पड़ी, और उस पद का उस खोजी को पूरा २ भेद न मालूम पड़ा और न उसको वह पद जैसा कि असल में था, दिखलाई दिया यानी वह उसका अंत और पार न पा सका, तो उसने उसी को, मालिक उस रचना का, क़रार देकर सत्तपद माना। जैसे मसलन यह सूरज

अपने मंडल की रचना का मालिक और कर्ता क़रार दिया जावे या इसके ऊपर का सूरज, जो दूरबीन से भी नज़र नहीं आता है, मालिक और सत्त माना जावे या यह कि उसके पूरे का सूरज जो पार-ब्रह्म स्वरूप है, कुल्ल-मालिक गरदान कर उसी पर ख़ातमा किया जावे और वही सत्त और शुद्ध माना जावे।

८—ऊपर जो तीन सूरज बयान किये गये, उनमें से पहिला तो निपट संसारी और नादानों का ख़ुदा और मालिक हो सकता है, और दूसरा, योगियों का, और तीसरा, योगेश्वरों का मालिक है। उसके पार का भेद किसी जीव या महात्मा को नहीं मालूम पड़ा, बल्कि ख़ुद उसके भी स्वरूप का वार और पार न पाया। इस सबब से, इन तीनों सूरजों को कुल्ल मत वालों ने जो कि अनजान हैं या योगी या योगेश्वरों या औतारों और पैग़म्बरों के मौतक़िद और पैरो हैं, सत्त और मालिक माना। लेकिन असल में इनमें से कोई भी कुल्ल-मालिक या असली सत्त नहीं है, क्योंकि पार-ब्रह्म रूपी सूरज के परे सत्तनाम सत्तपुरुष रूपी सूरज है और वह सच्चे कुल्ल-मालिक और असल सत्तपद राधास्वामी दयाल के आसरे क़ायम है।

९—यह सूरज जिनका ऊपर ज़िक्र हुआ, एक की ब-निस्बत दूसरा, ज़्यादा ताक़त वाला और बहुत बड़ा और

ज़्यादा देर ठहरने वाला है, यहाँ तक कि दूसरे और तीसरे सूरज की प्रलय होती हुई, किसी बिरले योगेश्वर ही ने देखी, और तीसरे यानी पार-ब्रह्म रूपी सूरज का आदि और अंत और उसका वार-पार किसी को भी नहीं मालूम हुआ, लेकिन इनको सत्त कहना ब-मुक़ाबले सत्तनाम सत्त पुरुष राधास्वामी पद के, जो कि अमर और अजर और सदा एक-रस क़ायम रहते हैं और ब्रह्मांड के परे हैं, दुरुस्त नहीं है। और राधास्वामी पद तो अनंत और अपार और अकह और अगाध है और असली सत्त वही है और उसका देश भी (यानी राधास्वामी पद से सत्तलोक तक) अजर और अमर है यानी हमेशा एक-रस क़ायम रहता है।

१०—इस असली सत्तपद यानी राधास्वामी धाम का जो कोई भेद बतावे और वहाँ पहुँचने का रास्ता लखावे, उनको संत या साध कहते हैं और उनके भेद को सत्त मत और सत्त पंथ कहना चाहिये। और यह भेद और लखाव सिर्फ़ राधास्वामी मत में जो कि कुल्ल-मालिक ने आप प्रगट किया, मौजूद है। और किसी मत में इसका ज़िक्र भी नहीं है।

११—अब समझना चाहिये कि राधास्वामी दयाल ने कुल्ल रचना के तीन दर्जे मुक़र्रर किये हैं। पहिला, निर्मल-चैतन्य यानी रूहानी देश है, जहाँ माया की मिलौनी

नहीं है और यही सच्चे मालिक का निज धाम और देश है। और दूसरा निर्मल-चैतन्य और शुद्ध-माया देश है जिसको ब्रह्मांड कहते हैं। इस दर्जे के शुरू में माया प्रगट हुई और पुरुष-प्रकृति और माया-ब्रह्म का स्थान इसी दर्जे में है और वहां सरगुण और निरगुण ब्रह्म का मक़ाम है। तीसरा दर्जा, निर्मल-चैतन्य और मलीन माया देश है। सुरत-चैतन्य और मन का बासा इसी दर्जे में है और वही आत्मा-परमात्मा और वैराट स्वरूप का स्थान है।

१२—जो कि पहिले दर्जे में सिर्फ़ निर्मल-चैतन्य है और रचना भी वहाँ की ऐन रूहानी है यानी सुरत-चैतन्य की चैतन्य रूपी देह या ग़िलाफ़ है, इस वास्ते इसी देश में पहुँच कर सच्ची मुक्ति हासिल होगी यानी मन और माया के मसाले की बनी हुई देह से आज़ादगी हो जायगी।

१३—और उस पहिले दर्जे में संतों की जुगत की कमाई करने से पहुँचना होगा, और वह कमाई कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरू की दया से बन पड़ेगी।

१४—और वह जुगत यह है कि जिस धार पर कि सुरत पहिले दर्जे से उतर कर तीसरे दर्जे यानी पिण्ड में, आँखों के मक़ाम पर बैठी है, वहाँ से उसको, उसी धार को पकड़ के, उलटे चढ़ा कर, उसके निज धाम में पहुँचाना।

और वही धार शब्द और प्रकाश और नूर और जान की धार है। सो शब्द की धुन को सुनते हुये और प्रकाश को देखते हुये मन और सुरत घट से चढ़ेंगे।

१५—यह भेद और जुगत संत सतगुरु या साधगुरु या उनके सच्चे और प्रेमी मेली से मालूम होगी। और उन्हीं के सतसंग और बानी और बचन के पढ़ने और सुनने से जीव के भर्म और संशय और असत्य पद और पदार्थ में पकड़ और झुकाव दूर हो सकते हैं। और दूसरे के सतसंग या बानी और किताबें पढ़ने और सुनने से यह बात हरगिज़ हासिल नहीं हो सकती है, और न कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरणों में गहरी प्रीति और प्रतीत पैदा होगी। और इस सबब से चाहे कोई जिस क़दर मेहनत करे, सुरत और मन की चढ़ाई, घट में ऊँचे देश की तरफ़ नहीं हो सकेगी।

१६—ऊपर बयान हुआ है कि बिना दया कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के, राधास्वामी मत का अभ्यास दुरुस्ती से नहीं बन पड़ेगा। इस वास्ते लाज़िम और ज़रूर है कि सच्चा परमार्थी पहिले खोज कर के, संत सतगुरु या साधगुरु या उनके सच्चे प्रेमी से मिले, और भेद-भाव समझ कर उपदेश घट में चढ़ाई की जुगत का लेवे। तब उसका सूत यानी सिलसिला कुल्ल-मालिक

के चरणों से लगेगा। और जिस क़दर वह अभ्यास करता जावेगा, उसी क़दर उसको अपने अंतर में दया भी मालूम पड़ती जावेगी और तब उसका रास्ता सुखाला तै होवेगा।

१७—जिस किसी के हृदय में सच्ची लाग परमार्थ की है और संसार की तरफ़ से किसी क़दर चित्त में वैराग और उदासीनता भी है और संत सतगुरु या साधगुरू और उनके सतसंग की सच्चे मन से शरण ली है, तो उसी को राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु अपनावेंगे, और फिर उसकी सब तरह से सम्हाल, अंतर और, बाहर आप करेंगे। और जब तक कि उसको निज धाम में नहीं पहुँचावेंगे तब तक उसकी बराबर सम्हाल और तरक़्क़ी फ़रमाते रहेंगे, यानी उसके हृदय में प्रीति और प्रतीत बढ़ा कर करनी करावेंगे, चाहे यह काम एक जन्म में बने या दो या तीन या चार जन्मों में।

१८—जो दर्जे कि ऊपर बयान किये गये, उन में से हर एक दर्जे में कई मंज़िलें या मक़ाम हैं। उनका भेद, तफ़सील के साथ, उपदेश के वक़्त समझाया जाता है और उसी का नाम सत्त मत है और इसी रास्ते का नाम सत्त पंथ है। जिस को यह भेद और रास्ता और चलने की जुगत मालूम नहीं है, वह हरगिज़ निज धाम में नहीं पहुँचेगा, और इस वास्ते उसका सच्चा उद्धार भी नहीं होगा, यानी

वह, असत्य देश में रह कर, हमेशा ऊँचे-नीचे लोकों में, देहियों के साथ दुख-सुख और जन्म-मरण का कष्ट भोगता रहेगा।

१६—इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब है कि इस दुनिया की कार्रवाई और इसकी रचना की हालत देख कर, अमर देश और अमर सुख और आनन्द का खोज करें। और जोकि उसका पता संत सतगुरु या साध गुरू या राधास्वामी मत की संगत से मिल सकता है, तो चाहिये कि इन्हीं को तलाश कर के और उन से उपदेश लेकर, सुरत-शब्द मार्ग का अभ्यास शुरू कर दें। फिर जो कुछ कि फ़ायदा उस अभ्यास से हासिल होगा, वह उनको अपने अंतर में और अपनी हालत से आप ही ज़ाहिर होता जावेगा और फिर प्रीति और प्रतीत राधास्वामी दयाल के चरणों में बढ़ती जावेगी, और अभ्यास का शौक़ भी तेज़ होता जावेगा और इस तौर से एक दिन सब काम दुरुस्त बन जावेगा।

बचन २३

असली सत्त में, जो अमर, अजर और परम आनन्द स्वरूप है, पता और भेद लेकर, प्यार और भाव लाना और बढ़ाना चाहिये, तब असत्य यानी माया के देश और जन्म-मरण से छुटकारा होगा।

१—जहाँ जिस को भाव और चाव या प्रीति है, वहीं उसकी तवज्जह या ख़्याल जाता है और जिस क़दर ज़्यादा दर्जे के प्रीति है, उसी क़दर उसका चित्त या ख़्याल, बार बार प्रीयतम की तरफ़ जाता है। और जो बहुत ज़्यादा दर्जे को प्रीति है, तो वे दोनों अक्सर एक ही जगह यानी संग रहते हैं, ताकि हर वक़्त एक की नज़र दूसरे पर पड़े और जब चाहें जब बात-चीत करें, और संग उठें-बैठें।

२—जिस क़दर जिसको जिस किसी में भाव और प्यार है, उसी क़दर उसको अपने प्रीयतम से मिलने या उसका ख़्याल करने में रस आता है और ख़ुशी होती है और उसी क़दर प्रीयतम की तरफ़ से भी खैंच और मेल और तवज्जह होती है और उसको भी मिलने और ख़्याल करने में वैसा ही रस मिलता है और तबियत ख़ुश होती है। और यही प्रीति ज़्यादा तवज्जह और ख़्याल करने और अक्सर मिलने से बढ़ती जाती है और दोनों की आपस में मुआफ़िक़त और मुहब्बत भी ज़्यादा होती जाती है, यहाँ तक कि एक दूसरे के हृदय में बस जाता है।

३—और जब यही प्रीति ज़्यादा से ज़्यादा हो जाती है, तब दोनों शख़्सों के मन और उनकी समझ-बूझ और चाह और पकड़ वग़ैरा भी एक हो जाती हैं और एक का कहन, दूसरा, बे-उज़्र, और ख़ुशी के साथ मानता है और जो

काम एक करता है, वह दूसरे को पसंद आता है और दोनों को आपस में एक दूसरे की ख़ुशी और रज़ामंदी का ख़्याल हमेशा पेश-ए-नज़र रहता है और एक दूसरे की सेवा और ख़िदमत करने और हर काम में मदद देने को, उमंग के साथ, तैयार रहता है।

४—जहाँ इस क़िस्म की प्रीति दो शख़्सों की आपस में है, वहाँ एक के सुख में दूसरा भी सुखी और दुख और तकलीफ़ में दूसरा भी दुखी रहता है। अगर किसी वक़्त में दूर भी होवें तो अक्सर ऐसा इत्तिफ़ाक़ होता है कि सख़्त तकलीफ़ के वक़्त एक की तबियत का असर, थोड़ा-बहुत, दूसरे की तबियत पर रूहानी और क़ुदरती तौर पर फ़ौरन पहुँच जाता है।

५—अब ख़्याल करना चाहिए कि जब एक शख़्स का एक दूसरे शख़्स के साथ मोहब्बत करने का यह नतीजा होता है तो जब कि किसी की बहुत से आदमियों और जानवरों में, और माल और असबाब और मकानात वग़ैरा में, अपने २ दर्जे के मुआफ़िक़ प्रीति, और बन्धन मन का हुआ, तब उस शख़्स की क्या हालत होगी? यानी वह कभी दुख, कभी सुख और कभी चिन्ता और फ़िक्र के चक्र में हमेशा गिरफ़्तार रहेगा और उसको दवा-दिवश यानी दौड़-धूप भी अपने प्रीतिवान और मित्रों से मिलने की, और उनके

कामों में मदद देने को हमेशा लगी रहेगी और बहुत कम वक़्त फ़ुर्सत का मिलेगा।

६—ज़ाहिर है कि यह प्रीति और मोहब्बत दुनियावी कहलाती है और इस में ब-सबब नाशमान होने इस लोक की रचना के, वियोग यानी जुदाई भी ज़रूर होवेगी, और फिर उसका दुख भी जिस क़दर गहरी प्रीति होगी, उसी क़दर सहना पड़ेगा। ख़ुलासा यह कि यहाँ सुख थोड़ा और चन्द-रोज़ा होता है और दुख घनेरा और बाज़ी हालतों में उम्र भर सहना पड़ता है।

७—अब जानना चाहिये कि जहाँ जिसकी प्रीति है और वहीं उसका ख़्याल दौड़ २ कर जाता है, तो उसके साथ सुरत यानी चैतन्य की धार भी बराबर जाती है और जिस क़दर जिसकी जहाँ प्रीति है, उसी क़दर उसके चैतन्य और सुरत और मन की धार उसके प्रीयतम में समाई रहती है और दोनों तरफ़ से धार की आमद-ओ-रफ़्त ख़्याल के साथ जारी रहती है।

८—यह हाल हर एक शख़्स पर उसके रोज़मर्रा के व्यवहार और बर्ताव में गुज़रता रहता है यानी जिस वक़्त वह किसी शख़्स या मक़ाम या चीज़ का, जिसमें उसके मन की प्रीति या बंधन है, ख़्याल करता है, उस वक़्त और जितनी देर कि उसका ख़्याल उधर लगा रहता है, वह उतनी देर

वहीं यानी अपने प्रीतिवान शख़्स वग़ैरा के पास ठहरता है और उस वक़्त जहाँ वह बैठ कर ख़्याल कर रहा है, मौजूद नहीं है। जैसे जब कोई किसी काम में गहरी तवज्जह के साथ मशग़ूल होता है या कोई सोच और विचार कर रहा है या किसी अपने प्यारे का चिन्तवन कर रहा है, उस वक़्त जो कोई उसके सामने आवे या बैठ या बात-चीत करे, तो वह बिल्कुल नहीं देखता है और न सुनता है और, जब उससे ताकीद के साथ कोई पूछे तो जवाब देता है कि मेरा ख़्याल या चित्त इस वक़्त और तरफ़ था। इससे ज़ाहिर है कि वह शख़्स उस वक़्त, बा-वजूद बैठे होने और आँख, कान खुले होने के, उस चिन्ता और ख़्याल की हालत में वहाँ मौजूद न था, क्योंकि उसके मन और सुरत की धार उस वक़्त उस तरफ़ को रवाँ हो गई थी कि जिस तरफ़ का वह चिन्तवन और ख़्याल कर रहा था।

६—इस तरह से हर एक शख़्स के मन और सुरत की धारें अनेक जीवों और पदार्थों में, दिन और रात, बाहर की तरफ़ बहती रहती हैं और चैतन्यता का घाटा होता रहता है, जैसा कि देखने में आता है कि जिस आदमी को कारोबार और चिन्ता और फ़िक्र ज़्यादा रहता है, उसी क़दर उसका जिस्म नाज़ुक और कम ताक़त वाला होता है और खाने की मिक़दार भी उसकी किसी क़दर कम हो जाती है।

लेकिन जो किसी को दिल-पसंद कारोबार ज़्यादा करने पड़ें और किसी तरह की चिन्ता और फ़िक्र न होवे यानी उसका मन बहुत जगह बँधा न होवे, तो वह, ब-सबब ख़ुशी के, फूलता रहता है और कम ताक़ती उसको नहीं सताती है। सबब इसका यह है कि पहली सूरत में उसकी धारें बहुत फैलती रहती हैं, और दूसरी हालत में, ब-सबब मन के ख़ुश होने और किसी क़दर बे-परवाह हो जाने औरों की तरफ़ से, धारों का फैलाव कम होता है।

१०—जहाँ जिसकी बहुत ज़्यादा प्रीति है तो उसका असर इसी ज़िन्दगी में नहीं, बल्कि आइन्दा की ज़िंदगी यानी जन्म में भी पहुँचता है, और उसी के मुआफ़िक़, दूसरे जन्म में संयोग जीवों के साथ होता है, या उन्हीं शौक़ों में, जो एक जन्म में बहुत ज़बर रहे, दूसरे जन्म में भी बर्तावा करता है।

११—ऐसी हालत जगत के जीवों की प्रीति की और उनके भर्मने की देहियों और पदार्थों में, और मेल होने अनेक क़िस्म के जीवों और सामान के साथ, मुवाफ़िक़ हर एक के ज़बर बंधन और शौक़ के, देख कर, संत सतगुरु अति दया करके, जीवों को सच्ची समझौती और सच्चे मालिक से मिलने की जुगत फ़रमाते हैं कि जिससे जन्म मरण का चक्कर जल्दी छूट जावे, और जीव, नाशमान रचना

के देश से न्यारे हो कर, अमर देश और अमर आनन्द के स्थान पर पहुँच कर, और अपने सच्चे मालिक का दर्शन पाकर, हमेशा को सुखी हो जावें।

१२—जो कोई बड़ा आदमी है यानी धनवान और हुकूमतवान या गुणवान या रूपवान या कोई ख़ास हुनर वाला है, या जो कोई अपने साथ किसी क़िस्म की भलाई और सलूक करे या किसी तकलीफ़ और मुसीबत के वक़्त मदद देवे, तो ऐसे शख़्स में बहुत जल्द हर किसी को भाव और प्यार आता है, और उसकी सेवा और ख़िदमत करने को दिल-ओ-जान से तैयार हो जाता है और जो वह हुक्म और आज्ञा करे या कोई बचन कहे, उसको खुशी-दिल के साथ मानता है।

१३—अब ख़्याल करो कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके ख़ास पुत्र या मुसाहिब संत सतगुरु रचना भर में सब से बड़े और सर्व-समर्थ और सर्व-गुण निधान हैं, और जीवों का हित और आराम सदा उनके पेश-ए-नज़र रहता है और सख़्ती और नरमी और खुशी और ग़म के वक़्त वे हमेशा जीव के संग रहते हैं और जिस क़दर मुनासिब होता है, उसकी सम्हाल और रक्षा हर तरह से फ़रमाते हैं और हरचन्द ज़ाहिरी तौर से उनका दर्शन कठिन मालूम होता है, पर संत सतगुरु रूप में, जिस पर मेहर होवे, उसको सहज दर्शन प्राप्त हो सकते हैं।

१४—सब कहते हैं कि कुल्ल-मालिक सब जगह मौजूद है। और जो ऐसा है तो वह हर एक के अंग-संग रहता है। लेकिन परख और पहिचान उसकी किसी को नहीं हो सकती है, जब तक कि राधास्वामी मत में शामिल होकर उसकी जुगत का कोई दिन अभ्यास न करे।

१५—अब ख़्याल करो कि ऐसे कुल्ल-मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल और उनके प्यारे संत सतगुरु के चरणों में किस क़दर भाव और प्यार जीवों को लाना चाहिये? पर शर्त यह है कि उनका या तो प्रत्यक्ष दर्शन मिले या घट में, उनके नाम, रूप, लीला और धाम का पूरा २ पता मालूम होवे, और भी जुगत उनसे मिलने की बताई जावे, तो अल्बत्ता जीवों को, थोड़ा-बहुत भाव और प्यार आवेगा। और जो संत सतगुरु रूप में दर्शन होवे तो उसकी भी थोड़ी-बहुत पहिचान आनी चाहिये, नहीं तो जैसा भाव और प्यार चाहिये, न तो कुल्ल-मालिक और न संत सतगुरु के चरणों में आ सकता है, क्योंकि रोज़-गारी और पाखंडियों ने ठगाई करके जीवों को बहुत डरा दिया है और अनेक भर्म उनके मन में पैदा कर दिये हैं कि जिससे जब-तक सच्चे और झूठे की छाँट न होवे और उनको थोड़ी-बहुत पहिचान न आवे, तब-तक, वे भाव और प्यार लाने में झिझकते और डरते हैं।

१६—जो कोई परमार्थ का बड़भागी है या जिस पर

धुर की मेहर और दया है, उसी को दर्शन करके, संत सतगुरु में थोड़ा-बहुत भाव और प्यार आवेगा और उनके बचन उसको प्यारे लगेंगे, और उनसे जुगती लेकर और थोड़ा-बहुत अभ्यास करके, उसको अंतर में रस और आनन्द मिलेगा और मेहर और दया के पर्चे भी मालूम होवेंगे। तब, दिन २ उसकी प्रीति और प्रतीत संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरणों में बढ़ती और पकती जावेगी और वही शख़्स सतगुरु के बचन को, जिस क़दर कि ज़रूरी है, मानेगा, और उसके मुआफ़िक़ कार्रवाई करके उसका फल और फ़ायदा इसी जिन्दगी में देखेगा।

१७—इसी तरह जिस किसी को संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरणों में प्रीति और प्रतीत आई है, और उनको जुगत के अभ्यास से कुछ २ रस अन्तर में मिला है, उसी के मन और सुरत की धारें वारम्बार अन्तर में ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ेंगी और दिन २ संसार के भोग और बिलास, फीके और रूखे होते जावेंगे, और उस तरफ़ को धारों का झुकाव भी कम होता जावेगा।

१८—इसी तौर से आहिस्ते २ दुनिया और उसके समान से ऐसे प्रेमियों की तबियत हटती जावेगी और उनके मन और सुरत निज-घर की तरफ़ उमंग और प्रेम के साथ रवाँ होते जावेंगे और एक दिन उसकी सुरत धुर धाम में

पहुँच कर सच्चे मालिक का दर्शन पावेगी और अमर आनन्द को प्राप्त होगी।

१६—जो कि कुल्ल-मालिक का भेद और मिलने का रास्ता और चलने की जुगत, बग़ैर संत सतगुरु या उनके सच्चे प्रेमी के, नहीं मालूम हो सकती है और न उनके और सच्चे मालिक के चरणों में, बिना उनके सतसंग और दया के, प्यार और भाव आ सकता है, इस वास्ते कुल्ल जीवों को, जो कि संसार और उसके समान की नाश-मानता देख कर सच्चे और अमर सुख का खोज लगा कर उसको प्राप्त होना चाहते हैं, मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले संत सतगुरु या उनके प्रेमी-जन का खोज करें, और जब भाग से वे मिल जावें, तब शौक़ और उमंग के साथ उनके बचन सुनें और समझें और विचारें और सुरत-शब्द का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू कर दें। तब, थोड़े दिनों में उनकी और उनकी जुगत की कुछ पहिचान आवेगी और उसी मुआफ़िक प्रीति और प्रतीत भी चरणों में पैदा होगी और फिर भक्ति और भाव बढ़ता जावेगा और दिन २ हालत भी बदलती जावेगी, यानी संसार की तरफ़ से किसी क़दर उदासीनता और चरणों में प्रेम और अनुराग बढ़ता जावेगा।

२०—जब तक, इस तौर से कार्रवाई नहीं की जावेगी, तब तक मन और सुरत की धारों का झुकाव, भोगों में, बाहर

की तरफ़ रहेगा और मालिक के चरणों में प्रेम और भाव नहीं आवेगा और इस वास्ते माया के घेर से सुरत न्यारी नहीं होगी और वे जीव बारम्बार देह धर कर दुख-सुख भोगते रहेंगे ।

२१—खुलासा यह कि जब-तक जीव को, प्रीति और प्रतीत राधास्वामी दयाल के चरणों में नहीं आवेगी, तब-तक धारों का रुख़ नहीं बदलेगा और बाहरमुख कार्रवाई कम न होवेगी, और इस सबब से असली सत्त से मेला भी नहीं होवेगा और न परम और अमर आनंद के धाम में पहुँचना होगा और जीव तुच्छ और नाशमान सुखों के वास्ते इस लोक में पचते और खपते रहेंगे और जन्म-मरण का दुख सहते रहेंगे ।

२२—ऊपर के लिखे हुए से मालूम होगा कि कुल्ल जीवों को मुनासिब और ज़रूर है कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी और संत सतगुरु के चरणों में, जैसी बने तैसी प्रीति लावें, तो जिस दर्जे की प्रीति होगी, उसी क़दर उनके मन और सुरत की धार, घट में ऊँचे देश की तरफ़ बारंबार रवाँ होकर, चरण-रस लेवेगी और बचन-बानी निहायत प्यारे लगेंगे और दर्शनों की तलब और तड़प थोड़ी-बहुत मन में लगी रहेगी, और सेवा की उमंग उठा कर तन, मन, धन भी परमार्थ में लगावेगा, और भेद और जुगत दरियाफ़्त करके,

मोहब्बत के साथ अभ्यास में भी ज़ोर देगा। यही स्वरूप सच्ची और निर्मल भक्ति का है। और जब महिमा सुन कर जीव इस काम में लगा, तब राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया आवेगी और मेहर से ऐसे भक्त का कारज वे आप बनावेंगे और मुनासिब तौर पर अंतर और बाहर के सतसंग में रस देकर उसकी भक्ति को बढ़ाते जावेंगे कि जिस से एक दिन धुर धाम में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त होगा।

२३—भक्ति और प्रेम का दर्जा बड़ा भारी है। जिस घट में ये प्रगट होवें, वही जन बड़भागी है और वही दयापाल है और वही एक दिन सच्चे मालिक के महल में दख़ल पावेगा।

२४—इस वास्ते, सब जीवों को इस बात का ख़्याल और विचार रखना चाहिये कि गहरी प्रीति सच्चे मालिक के चरणों में लावें और उसके चरणों में अपना मज़बूत नाता जोड़ें, और दुनिया और उसके सामान में मामूली प्रीति, गुज़ारे के लायक़ करें, ताकि ज़बर बन्धन न होने पावे। जैसे कोई परदेश को रोज़गार के वास्ते जावे और वहाँ के लोगों से कार्रवाई के लायक़ प्रीति-भाव करे और जब मौक़ा वतन के जाने का मिले तो फ़ौरन् अपने देश को ख़ुशी के साथ रवाना होता है और उन परदेशियों की प्रीति से ज़रा भी उसके मन को बंधन या तकलीफ़ नहीं होती।

२५—इसी तरह सुरत, यहाँ परदेशी है और उसको इस परदेश में परदेशियों के मुआफ़िक बर्ताव करना मुनासिब है, और परमार्थ की कमाई करके गहरी जमा यानी प्रेम कुल्ल-मालिक के चरणों का अपने घट में हासिल करके, जल्द २ और बारम्बार सुरत-शब्द की रेल पर सवार होकर, अपने वतन यानी कुल्ल-मालिक के चरणों में आमद-ओ-रफ़्त यानी फेरा ज़ारी करना चाहिये, और जब काम पूरा हो जावे, तब बे-तकल्लुफ अपने निज घर को, खुशी के साथ जाने को तैयार रहना चाहिये। यह काम दुरुस्ती से तब बन पड़ेगा जब कि यह दिन २ अपनी प्रीति और प्रतीत चरणों में बढ़ायेगा, और संसार में, अपना प्यार ज़रूरत के मुआफ़िक़ रक्खेगा, और अपने मन और सुरत की धारों को फ़िज़ूल इस दुनिया में नहीं ख़र्च करेगा, बल्कि दिन-दिन घट में ऊँचे देश की तरफ़ को उनका प्रवाह बढ़ाता रहेगा और संत सतगुरु और प्रेमी जन से नाता मज़बूत जोड़ेगा।

॥ बचन २४ ॥

तीन बातें हमेशा सुमिरना यानी याद रखना चाहियें, और तीन बातें बिसरना यानी भूलना चाहियें ॥

१—जो तीन बात याद रखनी चाहिये ये हैं—

पहिली यह कि राधास्वामी दयाल सर्व-समर्थ और कुल्ल-मालिक हैं। दूसरी यह कि उनके चरण यानी चैतन्य की धार जो कि शब्द की धार है, हर एक के घट में मौजूद है। तीसरी यह कि दुनिया के सब सामान और पदार्थ नाशमान हैं यानी हमेशा एक रस और एक हालत पर क़ायम नहीं रहते, और यह देह भी जिसमें सुरत उतर कर ठहरी है, नाशमान है यानी मौत हर दम सिर पर खड़ी है।

२—ये तीन बातें बिसारनी यानी भूलनी चाहियें—

पहिली—मन का मान जो कि ब-सबब धसे होने ख़्याल अपनी बड़ाई ज़ात-पाँत, धन या गुण या ख़ूबसूरती या कोई और जौहर या अक़्ल या हुकूमत और ओहदा वग़ैरा के, पैदा होता है। दूसरी—मन और इन्द्रियों के भोग और माया के रचे हुये पदार्थ। तीसरा—भोग-बिलास वग़ैरा का चिन्तवन या ख़्याल और गुनावन और उनकी प्राप्ति के लिये आशा और मन्शा और तृष्णा।

भाग पहिला

वर्णन उन तीन बातों का, जो कि याद रखनी चाहियें

३—पहिली बात यह कि परमार्थी को चाहिये कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की याद, अक्सर वक़्त, दिन-रात में, करे और राधास्वामी नाम को इस क़दर पकावे कि सोते और

जागते और अभ्यास के वक़्त, जब मुनासिब और ज़रूर होवे, फ़ौरन याद आ जावे और इस बात का जिस क़दर बन सके, मज़बूत यक़ीन दिल में होना चाहिये कि राधास्वामी दयाल सर्व-समर्थ हैं और जो आदि धार उनके चरणों से निकसी, वही कुल्ल रचना की करतार है और बिना उनकी मौज के कुछ नहीं हो सकता।

४—इस बात का बयान दूसरे बचनों में हो चुका है और यहाँ खुलासे के तौर पर लिखा जाता है कि एक स्थान की रचना दूसरे ऊपर के स्थान के आधीन है, यानी ऊपर से जो धार आती है, उसी की मदद से नीचे के स्थान की रचना ताक़त और मदद लेती है। यानी एक सूरज-मंडल, ऊँचे के सूरज-मंडल के आसरे क़ायम है और सब के परे कुल्ल-मालिक राधास्वामी धाम है और वही सब का निज कर्तार है। इससे ज़ाहिर होगा कि आदि धार की ताक़त से कुल्ल रचना हुई और उसी के आसरे ठहरी हुई है, यानी राधास्वामी धाम से धारा सत्तलोक तक आई और दयाल देश यानी पहिले दर्जे की रचना करी, और वहाँ से दो धारें प्रगट होकर सहसदल कँवल तक आईं और ब्रह्मान्डी यानी दूसरे दर्जे की रचना करी, और सहस दल कँवल से तीन धारें प्रगट हुईं और उनसे देवता और मनुष्य और चार खान की रचना, पिंड देश यानी तीसरे दर्जे में, हुई।

५—दूसरी बात यह कि परमार्थी को चरण की पहिचान और प्रतीत हासिल करनी चाहिये, यानी जो चैतन्य धार कि दयाल देश से दसवें द्वार और दसवें द्वार से पिंड में उतर कर ठहरी हुई है, वही सुरत या धुन की धार है, और वही नाम और चरण की धार है। सो, इस धार की, अभ्यास करके, थोड़ी-बहुत पहिचान हासिल करना और इस बात की दृढ़ प्रतीत मन में पैदा करना चाहिये कि यह चरण या शब्द या जान की धार घट-घट में मौजूद है और इसी को पकड़ के सुरत ऊँचे देश यानी घर की तरफ़ उलट सकती है। और कोई दूसरा सीधा और धुर पहुँचाने वाला रास्ता नहीं है।

६—यह अक्सर बचनों में बयान हो चुका है कि चैतन्य का निशान और ज़हूरा शब्द यानी आवाज़ है, और जहाँ कि धार रवाँ है, वहाँ धुन उसके साथ मौजूद है। फिर जो चैतन्य की धार कि ऊपर से आई है और उसके साथ धुन यानी आवाज़ बराबर जारी है, वही रचना की कर्ता है। इस वास्ते जो उस धार को पकड़ के चलेगा, वही उस मक़ाम तक जहाँ से कि आदि धार प्रगट हुई, पहुँच सकता है। और किसी धार को पकड़ के जो कोई चलेगा, वह माया के घेर के बाहर नहीं जावेगा, क्योंकि सिवाय शब्द-चैतन्य की धार के, और जो धारें हैं, वे माया की हद में से निकसी हैं और और वहीं उनका ख़ात्मा हो जाता है।

७—परमार्थी को मुनासिब और लाज़िम है कि इस धार की बारम्बार याद करता रहे। और याद करने से मतलब यह है कि या तो शब्द को सुने या राधास्वामी नाम का, स्थान पर ध्यान लगा कर, सुमिरन करे या स्थान पर स्वरूप का ध्यान करे। खुलासा यह कि इस धार के साथ जितनी बार बन सके, दिन-रात में मेल करता रहे। इसी को सुमिरना कहते हैं। ऐसी यादगारी से जिस क़दर ज़्यादा बन पड़ेगी, जल्द सफ़ाई होवेगी, और चरणों में प्रीति और प्रतीत बढ़ेगी और अभ्यास में आसानी के साथ तरक़्क़ी होवेगी।

८—तीसरी बात यह है कि परमार्थी को ख़्याल इस बात का हमेशा रखना चाहिये कि जिस क़दर माया के सामान और पदार्थ हैं, वे सब तुच्छ यानी थोड़ा रस देने वाले और नाशमान हैं, और यह देह भी जिसमें बैठ कर जीव उनका भोग करता है, नाशमान है, यानी एक दिन मौत ज़रूर आवेगी और उस वक़्त सब कारख़ाना और सामान दुनिया का, और यह देश एक-दम छोड़ना पड़ेगा। और कोई किसी तरह से किसी को ऐसे वक़्त पर मरने से बचा नहीं सकता।

९—इस बात का कोई सबूत ज़रूरी नहीं है, क्योंकि कुल्ल जीवों को रोज़मर्रा देखने में आता है कि बड़े और छोटे और राजा और अमीर और ग़रीब और कुल्ल पदार्थ और भोग वग़ैरा आते-जाते रहते हैं, और कोई वक़्त मुक़र्ररी से ज़्यादा

ठहर नहीं सकता। इस वास्ते हर एक को मुनासिब और लाज़िम मालूम होता है कि पेश्तर इसके कि ऐसा सख़्त वक़्त आवे, सुरत को तन-मन और इन्द्रियों से, जिस क़दर बन सके, न्यारा करके उसके घर की तरफ़ उल्टावें और अपनी मौत को याद रख कर किसी शख़्स या चीज़ में इस क़दर मन को न बाँधें कि जिससे छोड़ते वक़्त तकलीफ़ होवे। और इसी तरह सब भोगों और पदार्थों को नाशमान समझ कर उनमें गहरी और मज़बूत पकड़ नहीं करना चाहिये, नहीं तो वियोग के वक़्त बहुत दुख सहना पड़ेगा।

१०—इस बात को हमेशा याद रखने से जीव का बहुत फ़ायदा मुमकिन है, यानी उसका बंधन दुनिया और उसके सामान और कुटुम्ब-परिवार और भोगों वग़ैरा में बहुत हलका रहेगा और अख़ीर वक़्त पर उसको छोड़ने में तकलीफ़ नहीं होवेगी। और जहाँ तक मुमकिन होवे, राधास्वामी दयाल के चरणों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाना और पकाना चाहिये कि जिससे जीव के उद्धार में कोई विघ्न न पड़े।

११—बल्कि सिवाय अख़ीर वक़्त पर तकलीफ़ न होने के, जीते-जी भी राधास्वामी दयाल के चरणों में प्रीति और यादगारी करने वाले को बहुत कुछ फ़ायदा हासिल होवेगा, यानी दुनिया और उसके भोगों की तरफ़ से चित्त आहिस्ते २ हटता जावेगा, और अंतर में रस और आनन्द पाकर

चरणों में प्रीति और प्रतीत और शौक़ दर्शनों का बढ़ता जावेगा और अख़ीर वक़्त पर ज़्यादा से ज़्यादा आनन्द और दया की मदद मिलेगा, और देह और दुनिया को छोड़ने का रंज बिल्कुल नहीं व्यापेगा। और यह हालत सुरत-शब्द मार्ग के अभ्यास से, जो कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल ने बहुत आसान तौर से जारी फ़रमाया है, हासिल होवेगी।

भाग दूसरा

वर्णन उन तीन बातों का, जो कि बिसारनी चाहियें

१२—पहिली बात यह कि परमार्थी को अपने मन का मान घटाना और दूर करना चाहिये। यह सब औगुणों में बहुत भारी और ज़बर और बारीक विकार है और बहुत दिक़्क़त से और बहुत देर में घटता और दूर होता है। चाहे जिस क़दर कोशिश की जावे, थोड़ा-बहुत, झीने से झीना मान मन में धरा रहता है और वक़्त २ पर प्रगट होता रहता है।

१३—इसके दूर करने का जतन, सिवाय सुरत-शब्द मार्ग के अभ्यास के, कि जिससे सुरत और मन पिंड देशको छोड़ कर ब्रह्मान्ड में, और फिर वहाँ से मन से अलेहदा होकर सुरत, दयाल देश की तरफ़ चढ़ेगी, और कोई नहीं है। यानी जब तक कि सुरत, पिंड में रहेगी, तब तक इस विकार का क़तई

दूर होना मुमकिन नहीं है, चाहे कुछ कम हो जावे या कहीं २ और किसी किसी वक़्त बिल्कुल ज़ाहिर न होवे, क्योंकि जड़ इसकी ऊँचे देश में है। और जब तक कि यह विकार यानी मान और अहंकार मन में बसे रहेंगे, तब तक सच्ची दीनता, सतगुरु और प्रेमी जन और कुल्ल-मालिक के चरणों में, जैसा कि चाहिये, नहीं आवेगी, और न पूरा फ़ायदा परमार्थ का, यानी प्रेम हासिल होगा।

१४—इस वास्ते परमार्थी को चाहिये कि जैसे बने तैसे इस विकार को अपने मन से हटावे और घटावे और अपनी ताक़त और ज़ात और पाँत और धन और हुकुमत और गुण और जौहर की बड़ाई को भुलावे और किसी मौक़े पर और किसी काम और किसी बात में उसको पेश न करे, और न उसकी याद और ख़्याल मन में लावे, यानी न तो किसी अपनी बात में और किसी मौक़े पर बड़ाई या तारीफ़ करे और न दूसरों से कराने की चाह या आस रक्खे, और न दिल में उसका ख़्याल लावे। और जब कोई अनजानता से या जान-बूझ कर, ज़िद्द और हसद से कोई बचन ओछा या अपमान का इससे कहे, तो उस वक़्त अपनी ताक़त या बड़ाई का ख़्याल करके ग़ुस्सा और रोष न करे और न कहने वाले से और किसी वक़्त एवज़ लेने का इरादा करे और न ऐसा समझे कि मेरा अपमान हुआ या इज़्ज़त में ख़लल आया,

बल्कि अपने आपे को नीच और नाकारा समझ कर यह ख़्याल करे कि वह ऐसे ही बल्कि ज़्यादातर ओछे और अपमान के बचनों के ही लायक़ है।

१५—जहाँ किसी का स्वार्थ यानी दुनियावी मतलब अटका होवे, वहाँ हर कोई मान-बड़ाई छोड़ कर सच्ची दीनता करता है और इसी तरह अपने से ज़बर के रू-ब-रू भी दीनता से बर्तता है। फिर बड़े अफ़सोस की बात है कि यह जीव दुनिया के मतलब के वास्ते तो सब क़िस्म का मान और अहंकार छोड़ देवे और परमार्थ में कोई न कोई या किसी न किसी क़िस्म के मान के अंग को लेकर उलटा अपना मान और आदर चाहे और सच्ची दीनता न करे। लेकिन इससे यह बात ज़ाहिर होती है कि उस शख़्स ने परमार्थ की दौलत की क़दर न जानी और दुनिया की मान-बड़ाई और विद्या-बुद्धि और धन और हुकूमत और गुण वग़ैरा को बड़ा समझा। फिर ऐसे शख़्सों को सच्चे प्रेम की दात कैसे मिले ?

१६—भक्ति और प्रेम मार्ग में सच्ची दीनता एक बड़ा जौहर या ज़ेवर और भारी सिंगार समझा जाता है। जिसमें यह अंग नहीं पाया जाता या वह बे-परवाही और निडरता के साथ परमार्थियों से बर्ताव करता है तो राधास्वामी दयाल उस पर प्रेम की बख़्शिश हरगिज़ नहीं करेंगे

और वह अपने अहंकार के सबब से गहरे परमार्थ से ख़ाली रहेगा, क्योंकि राधास्वामी दयाल का यह हुकुम है कि "दीन ग़रीबी मत इस जुग का, और गुरु भक्ती कर परमाण"। सो जब तक मन में दीनता न आवेगी, तब तक गुरू और साध और कुल्ल-मालिक के चरणों में सच्चा प्रेम नहीं आवेगा और इसी सबब से दया भी नहीं आवेगी और परमार्थी तरक़्क़ी भी नहीं होवेगी।

१७—दूसरी बात यह है कि परमार्थी को मन और इन्द्रियों के भोगों और माया के रचे हुए पदार्थों को, जहाँ तक बन सके, चित्त से बिसारना चाहिये और उनमें ज़रूरत के मुआफ़िक़ बर्ताव करना मुनासिब है। लेकिन फ़िज़ूल ख़्वाहिशें, सुरत-चैतन्य की धार को नीचे और बाहर की तरफ़ बहाती हैं और इसमें अभ्यासी का किसी क़दर नुक़सान होता है।

१८—भोगों और पदार्थों में खैंच-शक्ति बहुत है और वे मन और इन्द्रियों को लुभा कर अपनी तरफ़ खैंचते हैं। लेकिन इसमें, मन की चाह और तरंग भोगों के रस लेने की, उनकी खैंच शक्ति को जगाती है, क्योंकि जो मन में तरंगें न उठें तो चाहे जैसे भोग और पदार्थ सन्मुख आवें तो वे मन और इन्द्रियों को लुभा नहीं सकते।

१९—इस वास्ते अभ्यासी को, ख़ास कर शुरू अभ्यास के समय, थोड़ी-बहुत सम्हाल अपने मन की, करना मुनासिब

है यानी किसी क़दर भोगों से, आम तौर पर, वैराग रखना चाहिए और ज़रूरत के मुआफ़िक़ उनमें बर्ताव करना चाहिये।

२०—इसमें कुछ शक नहीं है कि मन और इन्द्रियों को, भोगों की तरफ़ से रोकना निहायत मुश्किल काम है, क्योंकि वे जन्मान-जन्म और युगान-युग और सालहा-साल से उनमें बर्तते चले आये हैं और यह बर्ताव उनका पुराना स्वभाव हो गया है। और सब जीवों का इसी क़िस्म का व्यवहार देख कर शौक़ पैदा होता है और बढ़ता रहता है। और पुरानी आदतों और शौक़ का जो कि अभ्यास करके ख़ूब मज़बूत हो गये हैं, एक-दम छोड़ना निहायत मुश्किल बल्कि क़रीब २ ना-मुमकिन है, इस सबब से परमार्थी को, शुरू अभ्यास के समय, मन और इन्द्रियाँ अपनी चंचलता ज़ाहिर करके दुरुस्ती से अभ्यास में नहीं लगने देती हैं। इस वास्ते दुनिया और उसके सामान और भोगों की नाशमानता और ओछापन देख कर, थोड़ा-बहुत चित्त को उनकी तरफ़ से उदासीन रखना ज़रूर है।

२१—जीव की ताक़त नहीं है कि मन और माया से मुक़ाबला कर सके और भोगों की चाह या उनमें बर्तावा यकायक हटा देवे। इस वास्ते मुनासिब और ज़रूर है कि समर्थ पुरुष राधास्वामी दयाल की शरण और ओट लेकर परमार्थ की कार्रवाई शुरू करे और उनकी दया का बल

लेकर मन और इन्द्रियों से मुक़ाबला करता रहे, तो आहिस्ते २ वे किसी क़दर ज़ेर होते जावेंगे और अभ्यास में कुछ-कुछ रस मिलता जावेगा। और बाक़ी सम्हाल और उनके ज़ोर से बचाव, राधास्वामी दयाल अपनी दया से आप फ़रमावेंगे और एक दिन मेहर और दया से धुर घर में, इनसे जिता कर, पहुँचा देंगे।

२२—जीव को मुनासिब है कि राधास्वामी दयाल के चरणों में प्रीति और प्रतीत बढ़ाता रहे और जिस क़दर बन सके, अपना अभ्यास नियम से दुरुस्ती के साथ करता रहे। बाक़ी जो कुछ कसर होगी, वे अपनी दया से दूर करेंगे और अपना बल देकर सब विघ्न और विकार हटा देंगे।

२३—जीव को इस क़दर अहतियात करना लाज़िम और मुनासिब है कि जहाँ तक बन सके, भोगों की फ़िज़ूल चाहें और तरंगें हटाता रहे, और भोगों और पदार्थों की याद या उनका ख़्याल मन में न लावे, सिवाय इसके कि जिस क़दर वास्ते गुज़ारे के, दुनिया और देह में, ज़रूर और मुनासिब है।

२४—और यह भी मुनासिब है कि मन और माया और इन्द्रिय वग़ैरा को, जो कि परमार्थ में विघ्न कारक हैं, ज़ोरावर, बैरी और दुश्मन समझ कर, और अपने तईं निबल और कमज़ोर देख कर, अपने रक्षक कुल्ल-मालिक राधास्वामी

दयाल की याद बढ़ाता रहे और जब-जब दुश्मनों का ज़ोर ज़्यादा होवे, तब-तब उनकी दया और सहायता माँगता रहे और अपनी भूल-चूक पर शरमाता और पछताता रहे।

२५—तीसरी बात यह है कि परमार्थी को होशियारी रखनी चाहिये कि भोग-बिलास वग़ैरा की गुनावन न उठावे और न उनका चिन्तवन करे और न आशा बाँधे और न तृष्णा जगावे, क्योंकि आशा और गुनावन भोगों की, ज़्यादा नुक़सान करती है, ब-निस्बत उस भोग के एक या दो बार भोग लेने के।

२६—गुनावन और चिन्तवन जिस किसी भोग का किया जावे और उसके प्राप्ति की आशा बाँध कर जतन शुरू किया जावे, तो ज़्यादा वक़्त और ख़्याल और बुद्धि उस भोग के करने और उसकी प्राप्ति के जतन के विस्तार में लगेंगे, और शौक़ उसकी प्राप्ति का बढ़ता जावेगा। और जब वह भोग जतन करके प्राप्त होगा, तब मन और इन्द्रियाँ उसमें ज़्यादा शौक़ और ज़ोश के साथ लगेंगे और बारम्बार उसके भोगने की चाह जगा कर तृष्णा बढ़ावेंगे। और इस तरह वह तरंग मन में बहुत ज़बर होकर अभ्यास में ख़लल डालेगी। और जो कभी वह चीज़ प्राप्ति न हुई तो मन को बहुत दुख होगा।

२७—जो कोई चाह के उठने के बाद फ़ौरन उस भोग को भोग लेगा तो ज़्यादा देर वह चाह मन में नहीं बसेगी और न बार २ उसका ख़्याल उठेगा, बल्कि परमार्थी, ऐसी

चाह उठने और उसके पूरा होने के पीछे, अपने मन में थोड़ा-बहुत शरमावेगा और पछतावेगा और फिर वैसी चाह कम उठावेगा।

२८—लेकिन जिसके मन में चाह ज़बर है, वह उसके गुनावन और उसको पूरा करने के लिये जतन किये बग़ैर नहीं मानेगा, और उसके मन में पछतावा भी जल्द नहीं आवेगा, और जो कोई उसको रोकेगा या समझौती देवेगा, उससे नाराज़ होगा बल्कि दुश्मनी करेगा और जब तक कि भोग पूरा नहीं कर लेगा या उस चाह के निमित्त जतन करने में कुछ दुख नहीं पावेगा, तब तक उसको नहीं छोड़ेगा।

२९—भोग के गुनावन करने में किसी क़दर रस मिलता है और मन ऐसे ख़्यालों के विस्तार करने में मग्न होता है। इस सबब से वह तरंग पक जाती है और गुनावन का रस पाकर मन बारम्बार उसको उठाता है। इसी तरह अनेक भोगों की अनेक तरंगें मन में बस जाती हैं और वक़्त-वक़्त पर प्रगट होकर मन को अभ्यास में नहीं लगने देती हैं।

३०—और परमार्थ में यह ज़रूरी है कि मन तरंगों और उनके गुनावन से ख़ाली होवे। इस वास्ते परमार्थी को इस बात की अहतियात ज़रूर चाहिये कि जहाँ तक

मुमकिन होवे, किसी भोग की फ़िज़ूल इच्छा न उठावे और उसके गुनावन में अपना वक़्त बरबाद न करे, और जो मामूली और ज़रूरी चाहें हैं, उनमें दस्तूर के मुआफ़िक़ थोड़ी अहतियात के साथ बर्तता रहे। पर जहाँ तक बन सके, उसकी याद और गुनावन मन में कम करे और हटाता जावे, बल्कि दुनिया की तरंगों से उसको किसी क़दर ख़ाली करे। परमार्थी तरंगें और ख़्याल, जैसे सतगुरु और प्रेमी जन की सेवा और परमार्थी चर्चा वग़ैरा करना शुरू करे, और फिर उनको भी हटा कर या कम करके, सिर्फ़ राधास्वामी दयाल के चरणों का प्रेम और उनके दर्शनों के प्राप्ति की चाह बढ़ावे, और उसके पूरे होने के निमित्त, जतन मुनासिब, यानी भजन, सुमिरन और ध्यान और सतसंग, शौक़ के साथ करता रहे।

बचन २५

वर्णन उस जुगत का कि जिस से परमार्थी को संसार का दुख-सुख कम व्यापे, बल्कि बिल्कुल न व्यापे, और अभ्यास में थोड़ा-बहुत रस और आनन्द बराबर मिलता रहे और आहिस्ते २ बढ़ता जावे॥

१—संसार में सब जीव दुख-सुख भोग रहे हैं। सबब इसका यह है कि उनका बंधन और आसक्ति अपनी देह

और कुटुम्ब-परिवार और धन और माल और भोग वग़ैरा में है। जब इनमें से कोई चीज़ का हर्ज़-मर्ज़ होता है या घाटा-बाढ़ा होता है, या जब सब काम इच्छा के मुवाफ़िक़ होते जाते हैं या कोई काम बर-ख़िलाफ़ मर्ज़ी होता है, तब ही सुख-दुख या आराम और तकलीफ़ व्यापते हैं।

२—इस वास्ते संतों और सब महात्माओं ने, परमार्थ में, पहिले यह शर्त रक्खी है कि परमार्थी को तन, मन, धन अर्पण करना चाहिए यानी उनमें से अपना बंधन और आसक्ति आहिस्ते २ कम करके एक दिन अपना पूरा छुट-कारा उनसे करना मुनासिब है। तब सुख-दुख के चक्कर से सच्चा और पूरा बचाव होगा और परमार्थ के बचनों की क़दर और महिमा मालूम पड़ेगी।

३—लेकिन यह बात, यानी तन-मन से निरासक्त और निरबंध होना बहुत कठिन और मुश्किल है, क्योंकि जीव जन्मान-जन्म और युगान-युग और सालहा-साल से, उनमें बर्तता और बंधता चला आया है और संग करके उसकी आसक्ति और बंधन अपनी देह और कुटुम्ब-परिवार और धन-माल और भोग-विलास वग़ैरा में दिन-दिन मज़बूत हो गये हैं, फिर उसका यकायक छूटना किस क़दर कठिन है, वह साफ़ ज़ाहिर है।

४—यह आसक्ति और बंधन दो तरकीबों से कम

और ढीले हो सकते हैं। पहिले, गहरा शौक़ और प्रेम, सतगुरु और सतसंग और मालिक के चरणों में होना। दूसरे, संतों की जुगत यानी सुरत-शब्द मार्ग का, थोड़ा-बहुत विरह और प्रेम अंग लेकर, अभ्यास करके मन और सुरत को ऊँचे देश में चढ़ाना।

५—पहिली हालत तो किसी बिरले बड़भागी और गहरे संस्कारी परमार्थी की होवेगी। लेकिन दूसरी हालत हर एक परमार्थी को, जो थोड़ा सा भी शौक़ लेकर सतसंग और शब्द का अभ्यास करेगा, आहिस्ते २ कमाई करके, हासिल हो सकती है।

६—जब किसी को गहरा शौक़ और प्रेम, संत सतगुरु और उनके सतसंग में बचन और महिमा सुन कर आ गया, तब उसकी आसक्ति अपनी देह और कुटुम्ब-परिवार और धन-माल और भोग-बिलास वग़ैरा में एक दम ढीली होकर, चरणों में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के आ जावेगी, और जिस क़दर अभ्यास करके रस अन्तर में मिलता जावेगा, दिन २ बढ़ती जावेगी। और फिर वही शख़्स सतगुरु की आज्ञा और मालिक की मौज के अनुसार सहज में बर्तने लगेगा और उसके मन और इन्द्रियों के विकार और पिछली टेक और पक्ष और कर्म और भर्म बहुत जल्द दूर हो जावेंगे, और अभ्यास में भी उसको मन

और माया के विघ्न बहुत कम सतावेंगे और पिछले-अगले कर्म भी उसके सहज में दया और प्रेम के बल से कट जावेंगे और माया का चक्कर तीन गुणों का जो हरएक के अन्तर और बाहर चल रहा है, उस पर बहुत कम बल्कि कुछ भी असर नहीं कर सकेगा और सुरत और मन उसके ऊँचे देश की तरफ़ सहज में चढ़ते और निर्मल होते चले जावेंगे और संसारी चाहें भी जल्द नष्ट हो जावेंगी। ऐसे प्रेमी परमार्थी को महा बड़भागी और उत्तम संस्कारी समझना चाहिए और कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु की दया हर वक़्त उसके शामिल-ए-हाल रह कर, उसकी परमार्थी तरक़्क़ी और सब तरह की सम्हाल उसके सुरत और तन-मन की करती जावेगी।

७—दूसरे दर्जे के परमार्थी, सतसंग और अभ्यास करके, आहिस्ते २ उसी मक़ाम और हालत को, जो कि उत्तम संस्कारी को जल्द प्राप्त होती है, पहुँच सकते हैं। दया और मेहर कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की उनके संग भी ब-दस्तूर जारी रहेगी और रफ़्ते-रफ़्ते उनका कारज बनावेगी।

८—दुनिया में रह कर और देह में मन और इन्द्रियों के घाट पर बैठ कर, कोई भी दुख-सुख के चक्कर से बच नहीं सकता, सिवाय उनके कि जिनके मन और सुरत

एकाग्र हो कर कुल्ल-मालिक के चरणों में लग गए हैं और उनका रस और आनन्द लेते हैं। या वे कि जो अभ्यास करके मन और इन्द्रियों के घाट से न्यारे हो गये, उनको भी दुख-दुख देह और संस्कार का नहीं व्यापेगा।

९—परमार्थ में शामिल होने और करनी करने का मतलब यही है कि एक दिन ऐसे दर्जे पर पहुँचे कि जहाँ इसको सुख-दुख दुनिया और देह का न व्यापे, और अपने प्यारे सच्चे मालिक की मौज के साथ ख़ुशी से मुआफ़िक़त करे और रफ़्ते २ अमर देश में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त होवे। सो यह बात कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर और संत सतगुरु की दया और अन्तर और बाहर के सतसंग से हासिल होगी।

१०—उत्तम संस्कार से, जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया, मतलब यह है कि कोई शख़्स पिछले जन्म से भक्ति और अभ्यास करता आया है और अब नम्बर उसका अन-क़रीब पूरे दर्जे पर पहुँचने का आ गया है। सो ऐसे जीवों की हालत संत सतगुरु का दर्शन करके और बचन सुनके, जल्द बदलती जावेगी और बाक़ी जीवों को वही हालत आहिस्ते २ सतसंग और अभ्यास करके हासिल होगी। सिर्फ़ देर और सबेर का फ़र्क़ है।

११—हर हाल में परमार्थी को ख़्याल और तवज्जह

इस बात पर रखना ज़रूर और मुनासिब है कि जहाँ तक मुमकिन होवे, संत सतगुरु की आज्ञा के अनुसार बर्ताव करे और जब-जब जैसी मौज होवे, उसके साथ मुआफ़िक़त करे, तब परमार्थ का पूरा लाभ प्राप्त होगा और दुख-सुख के चक्कर से छुटकारा हो जावेगा।

१२—लेकिन यह कैफ़ियत तब हासिल होगी, जब कि परमार्थी शख़्स की आसक्ति और बन्धन तन, मन, धन में आहिस्ते २ कम होकर दूर हो जावेंगे। नहीं तो जिस क़दर कि झुकाव और फँसाव इन में रहेगा, उसी क़दर उनके घाटे-बाढ़े में तकलीफ़ और आराम पावेगा और उसी क़दर मौज के अनुसार बर्ताव में भी कसर रहेगी।

१३—इस बर्ताव के कई दर्जे हैं और उनका ज़िक्र खोल कर बयान किया जाता है। पहिला, सब्र यानी लाचार होकर जो तक़लीफ़ या आफ़त आवे, उसको झेलना। यह हालत संसारियों की है कि पहले रो-पीट कर और इसकी-उसकी, बल्कि मालिक तक की शिकायत करके, जब कुछ बस न चला तब चुप्प होकर बैठ रहे। दूसरा, तहम्मुल यानी बर्दाश्त करना। यह हालत विद्यावान और बुद्धिमानों की है कि सोच-विचार करके और दुनिया में उसी क़िस्म के वाक़ै और नमूने, जो पिछले और हाल के वक़्त में जा-ब-जा जीवों पर गुज़रे हैं, याद लाकर अपने मन

को समझाना और जो तकलीफ़ या दुख आयद हुआ है, उसको धीरज के साथ बर्दाश्त करना। तीसरे, शुक्र यानी अपने मालिक के चरणों में अहसानमंदी ज़ाहिर करनी। यह हालत परमार्थी की शुरू भक्ति में है कि उसको वक़्त सख़्ती और तकलीफ़ के ऐसी समझौती अपने मन को देनी चाहिये कि न मालूम किस क़दर भारी सदमा और दुख आने वाला था कि जो अपने प्यारे मालिक ने दया और मेहर से बहुत कम कर दिया यानी सूली का काँटा और मन का सेर भर रक्खा, और फिर उसमें भी न मालूम क्या मसलहत और फ़ायदा परमार्थी यानी भक्त का मंज़ूर है। सो हर दम और हर हालत में शुक्राना मालिक का मुनासिब और लाज़िम है और धीरज के साथ, बग़ैर तंग होने मन के, उस तकलीफ़ या दुख को सहना और उस सहन में भी मालिक की दया उसको थोड़ी-बहुत नज़र आवेगी। चौथे, तसलीम यानी शौक़ के साथ मंज़ूर और क़ुबूल करना, हर एक हालत ख़ुशी और आराम और सख़्ती और तकलीफ़ का, ऐसी समझ लेकर कि वह अपने प्यारे मालिक की भेजी हुई है और किसी हाल में वह मसलहत और फ़ायदे से ख़ाली न होगी। यह हालत ऊँचे दर्जे के प्रेमी भक्तों की है कि वे हमेशा ऐसी समझ रखते हैं कि जो कुछ होता है, मालिक के हुक्म और मौज से होता है, और जो अपने

प्यारे के हुक्म से कोई हालत अपने ऊपर आई तो उसका आदर करना यानी ख़ुशी से क़ुबूल और मंज़ूर करना वाजिब और लाज़िम है। और उसका निरादर करना यानी मन में दुखी और नाराज़ होना, ख़िलाफ़ क़ायदे और दस्तूर प्रेम और भक्ति के है। पाँचवाँ, रज़ा यानी राज़ी होना मालिक की मौज और हुक्म में। यह हालत पूरे प्रेमी भक्तों की है कि वे कभी किसी बात का सोच और फ़िक्र नहीं करते और उनहोंने अपने सब कामों को मालिक की मौज और रज़ा पर छोड़ दिया है यानी मामूली कार्रवाई और तदबीर भी चाहे करते हैं, लेकिन नतीजा उसका, जैसा कुछ मौज से होवे, उस पर राज़ी हैं और किसी तरह की फ़ुरना या ख़्याल उनके मन में नहीं उठता। खुलासा यह कि किसी काम या उसके नतीजे और फल में उनका बंधन नहीं है। जो कुछ करते हैं, मौज के आसरे पर, और जो नतीजा मौज से होवे, उसमें ऐसे ही राज़ी और मग्न रहते हैं, जैसे बालक, माता-पिता के हुक्म और कार्रवाई में बे-फ़िक्र और ख़ुश रहता है।

१४—इनमें से दो दर्जों में दुनियदारों का बर्ताव रहता है और बाक़ी के तीन दर्जे भक्तों के हैं यानी वही लोग जो राधास्वामी मत में शामिल होकर, प्रेमा भक्ती संत सतगुरु अथवा कुल्ल-मालिक के चरणों में कर रहे हैं।

१५—जो कोई राधास्वामी दयाल की शरण में आया, उसकी सम्हाल और रक्षा वे अपनी दया से जिस क़दर कि मुनासिब और उसकी परमार्थी तरक़्क़ी के वास्ते ज़रूर है, आप करते हैं। और जिस क़दर जिसकी प्रीति और प्रतीत चरणों में गहरी और मज़बूत है, उसी क़दर उनकी दया उसको प्रगट नज़र आती है और तकलीफ़ और आराम के वक़्त उससे सहारा और मदद मिलती है, और मौज के साथ मुआफ़िक़त करने में उसी क़दर उसको आसानी होती है।

१६—लेकिन जब तक जिस-किसी की जिस क़दर आसक्ति और बंधन, संसार और उसके समान में है, उसी क़दर, उस के मन को संसार की हानि-लाभ में सुख-दुख होवेगा। पर जो शरण और प्रीति-प्रतीत चरणों से राधास्वामी दयाल के मज़बूत है, तो उसका असर उस क़दर उस पर नहीं होगा, जैसा कि संसारियों के दिल पर होता है, बल्कि जल्द मौज और मेहर और दया का ख़्याल करके, थोड़ा झकोला खाकर अपने मन को सम्हाल लेगा और ब-दस्तूर प्रेम और भक्ति के घाट पर आ जावेगा।

१७—प्रेमी भक्तों को इन्हीं तीन दर्जों के मुआफ़िक़ सुरत-शब्द मार्ग के अभ्यास में भी रस और आनंद आवेगा और आहिस्ते २ तरक़्क़ी होती जावेगी, यानी मन में उनकी

प्रीति और प्रतीत चरणों की, और चाह दर्शनों की बढ़ती जावेगी और उसी क़दर दुनिया और उसके सामान की मुहब्बत कम होती जावेगी।

१८—हर एक प्रेमी भक्त को मुनासिब है कि अभ्यास के वक़्त विरह या प्रेम अंग मन में लावे और नीचे से अपने मन और सुरत की धार को समेट कर, ऊपर को चढ़ावे और स्थान २ पर ठहरावे। और जो यह कार्रवाई थोड़ी-बहुत दुरुस्ती के साथ बनती जावेगी यानी दुनिया और उसके सामान के ख़्याल मन में नहीं आवेंगे, तो थोड़ा-बहुत रस और आनन्द अभ्यास में ज़रूर मिलता रहेगा और उसकी ताक़त और शौक़ बढ़ते जावेंगे।

१९—जब कभी विरह या प्रेम अंग का घाटा मालूम पड़े, तो उस वक़्त प्रेमी अभ्यासी को मुनासिब है कि चरणों में प्रार्थना करके राधास्वामी दयाल की दया माँगे तो उसका मन थोड़ा-बहुत सिमटेगा और इस सिमटाव और किसी स्थान पर ठहराव का रस थोड़ा-बहुत ज़रूर मालूम पड़ेगा, यानी अभ्यास में जो ऊपर की जुगती के मुवाफ़िक़ किया जावेगा, तो कभी ख़ाली नहीं रहेगा।

२०—अब मालूम होवे कि हर एक जीव के अंतर में मन और माया का त्रिगुणात्मक चक्कर हमेशा चलता रहता है, और उसके मुआफ़िक़ मन और इन्द्रियों की हालत बद-

लती रहती है, यानी कभी सतोगुणी, कभी रजोगुणी और कभी तमोगुणी ख़्याल या तरंगें पैदा होती रहती हैं, और इसी चक्र के साथ अगले-पिछले और हाल के कर्मों के फल का असर भी, जैसे कि इस शख़्स ने किये हैं, ज़ाहिर होकर मन और इन्द्रियों की हालत को बदलता रहता है।

२१—सिवाय इसके, जीव के संगियों की दुख-सुख की हालत का जो कि वे अपने कर्मों के सबब से भोगते रहते हैं, इस शख़्स पर थोड़ा-बहुत असर पहुँचता है और उसके और इन्द्रियों की हालत को उसी मुआफ़िक बदलता रहता है।

२२—अलावा इसके, जो-जो ख़्वाहिशें या तरंगें संसारी यह शख़्स अपने या अपने संगियों के वास्ते उठाता है और उनकी चिन्ता या गुनावन अपने मन में करता है या जतन या तदबीर सोचता और विचारता है, उनका भी असर इसके मन और बुद्धि और इन्द्रियों पर पहुँच कर उनकी हालत को बदलता है।

२३—अब ख़्याल करो कि इतने झगड़े और बखेड़े मन और माया और कर्म और आशा और मंशा वग़ैरा के इस जीव के पीछे लगे हुये हैं। सो जब तक इसके चित्त में संसार और उसके सामान की तरफ़ से थोड़ा-बहुत वैराग न होगा और चरणों में, राधास्वामी दयाल के, प्रीति और प्रतीत और चाह दर्शन की ज़बर न होगी, तब तक इसके मन और

सुरत का अंतर में सिमटाव और चढ़ाई दुरुस्ती से नहीं बन पड़ेगी ।

२४—इस वास्ते, प्रेमी अभ्यासी को मुनासिब है कि जहाँ तक मुमकिन होवे, इन चक्रों को हटा कर और भुला कर और उमंग और प्रेम हृदय में जगा कर अभ्यास किया करे, और चरणों में वास्ते प्राप्ति दया के, जब-तब अभ्यास के समय, और कभी २ दूसरे वक़्तों पर भी प्रार्थना करता रहे, तो राधास्वामी दयाल की मेहर से उसका सब काम आसानी के साथ बनता जावेगा यानी दर्शन का शौक़ और चरणों में प्रेम बढ़ता जावेगा, और अगले पिछले कर्मों का असर घटता जावेगा, और संसारी ख़्वाहिशें सिवाय ज़रूरी और मुनासिब के घटती और कम होती जावेंगी, और अभ्यास में थोड़ा-बहुत रस मिलता रहेगा, और दया और मेहर की अंतर और बाहर परख करके, मौज के साथ मुआफ़क़त करने का इरादा बढ़ता जावेगा, और फिर संसारी दुख-सुख की हालत, ऐसे प्रेमी भक्त पर कम आवेगी, और जब कभी आवेगी तो उसका असर बहुत कम व्यापेगा ।

२५—इस क़दर ख़्याल रखना चाहिये कि यह हालत और कैफ़ियत पूरी २ एक-दम प्राप्त नहीं हो सकती है । लेकिन जो कोई राधास्वामी दयाल की शरण में आया और अपनाया गया, और वह चेत कर होशियारी के साथ अंतर

और बाहर सतसंग करता है और उनके दर्शनों की चाह दिन २ बढ़ाता जाता है, उसकी भक्ति रोज़-ब-रोज़ बढ़ती जावेगी और वह सब दर्जे आहिस्ते २ तै करता हुआ, एक दिन निज धाम में राधास्वामी दयाल के चरणों में पहुँच कर, परम और अमर आनन्द को प्राप्त होगा। और जिस क़दर उसकी हालत बदलती जावेगी, उसी क़दर मन और माया और काल और कर्म और तीनों गुण वग़ैरा के चक्करों का असर उस पर कम होता जावेगा, और एक दिन इन सब से न्यारा हो जावेगा।

२६—यह सच्च है कि संसार यानी कुटुम्ब, परिवार, धन, माल और भोग-बिलास वग़ैरा की प्रीति और आसक्ति छोड़ना और चरणों में गहरा प्रेम लाना, यकायक मुश्किल है। लेकिन जो भाग से कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु या साधगुरू और उनके सतसंग और अभ्यास की जुगती में प्यार आ जावे, तो जल्द और सहज में इन सब से वैराग अंतर में आ सकता है।

२७—दुनिया में देखने में आता है कि जिस किसी की मुहब्बत या आसक्ति थोड़ी-बहुत किसी इन्द्रिय भोग में हो गई, तो वह उसके रस में इस क़दर मस्त हो जाता है कि तमाम संसारी प्रीति और बंधनों को चन्द रोज़ में ढीला कर देता है, बल्कि अपनी देह और जान और

इज़्ज़त का भी कुछ ख़्याल नहीं करता, जैसे शराबी तमाशबीन और जुआरी वग़ैरा।

२८—इसी तरह जिन किनहीं दो शख़्सों की गहरी मुहब्बत आपस में हो जाती है, तो चाहे वह ग़ैर क़ौम के होवें, लेकिन उनका आपस में निहायत खिला-मिला हो जाता है। और इस क़दर अपने दोस्त की ख़ातिर एक दूसरे को मंज़ूर होती है कि कुटुम्ब, परिवार और बिरादरी वग़ैरा से नाता बहुत ढीला कर देते हैं और धन और माल वग़ैरा दोस्त की नज़र करके जैसे वह रहे और रक्खे वैसे ही ख़ुशी से रहते हैं और मरते दम तक दोस्ती को निबाहते हैं।

२९—इस वास्ते, यह कुछ ज़रूर नहीं है कि जब मन और सुरत ऊँचे देश में अभ्यास करके चढ़ें, तब ही चित्त में वैराग आवेगा, क्योंकि यह लोग जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ कुछ भी परमार्थ की ख़बर नहीं रखते, और न उनकी तवज्जह इस तरफ़ को होती है।

३०—लेकिन कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संतों की जीवों पर बड़ी दया है कि वे एक दम संसार का त्याग नहीं कराते हैं, बल्कि यह उपदेश है कि गृहस्थ में रह कर और कारोबार और रोज़गार, दस्तूर के मुआफ़िक़ करते हुए, संतों की जुगत का अभ्यास करो, तो जिस क़दर मन

और सुरत के सिमटाव और चढ़ाई से, अन्तर में रस और आनन्द मिलता जावेगा और चरणों में प्रीति और प्रतीत बढ़ती जावेगी, उसी क़दर चित्त, संसार और उसके सामान और पदार्थों से अंतर में उपराम होता जावेगा और यह अंतरी वैराग सच्चा और पक्का होवेगा।

३१—बाज़े लोग परमार्थ के निमित्त छोटी या बड़ी उम्र में, घरबार और रोज़गार छोड़ कर भेष धारण कर लेते हैं, यानी फ़क़ीर बन जाते हैं। पर जो उनको सच्चे और पूरे गुरू से संतों की जुगत नहीं मिली, तो उनका वैराग थोड़े दिनों में ढीला पड़ जाता है और अनुराग यानी मालिक के मिलने की चाह भी बदल जाती है। फिर ऐसे त्याग से कुछ फ़ायदा नहीं होता है।

३२—इसमें शक नहीं कि ज़ाहिरी त्याग करने में ऐसे लोगों ने बहुत मरदानगी की, पर ब-सबब न मिलने पूरे गुरू और पूरी जुगत के, जो फ़ायदा कि उनको हासिल होना चाहिये था नहीं हुआ। बल्कि जो थोड़े दिन के पीछे जब कि भेष के रंग में रँग गये और वहाँ की चाल-ढाल में पक गये उनके मन में बिल्कुल चाह अपने जीव के कल्याण की नहीं रहती। और फिर जो पूरे गुरू भी मिलें और पूरी जुगत भी बतावें, तो वे उनका सतसंग करना और उपदेश लेना मंज़ूर नहीं करते। फिर ऐसे त्याग और वैराग से

असली फ़ायदा हासिल नहीं हुआ और मुफ़्त अपनी ज़िन्दगी सैर और तमाशे और खान-पान और मान-बड़ाई के लालच में बरबाद करी।

३३—संत सतगुरु जो कुल्ल रचना के भेद से वाक़िफ़ हैं, अति दया करके जीवों को समझाते हैं कि सच्चा और पूरा वैराग, बग़ैर मन और सुरत को आकाश में चढ़ाने के, हासिल नहीं हो सकता। और ज़ाहिरी त्याग करना, जब तक कि मन में सच्चा और पूरा वैराग न आवे और अनुराग, प्राप्ति दर्शन कुल्ल-मालिक का, पैदा न होवे, महज़ फ़िज़ूल है और वह सबसे भारी विकार अहंकार का पैदा करने वाला है। इस वास्ते क़तई हुक्म दिया कि पहिले, भक्ति गृहस्थ में रह कर शुरू करो, और जब अभ्यास करके मन और इन्द्रियों की हालत बदले, तब अन्तर में अपने चित्त को, सर्व-भोग और पदार्थों की तरफ़ से, बल्कि कुल्ल संसार और उसके कारोबार से हटाते जाओ, तब रफ़्ते २ पूरा काम बनेगा।

३४—जिस किसी ने बे-समझे-बूझे और बग़ैर मिलने पूरे गुरू और उनकी पूरी जुगत के, घरबार और रोज़गार छोड़ दिया, उसने भारी ग़लती की और धोखा खाया, क्योंकि मन और इन्द्रियों और काम, क्रोध, लोभ, मोह वग़ैरा कि जड़ बहुत दूर और ऊँचे देश में है। सो जब तक अभ्यासी, अभ्यास करके वहाँ तक नहीं पहुँचेगा, तब

तक उसके त्याग और वैराग का पूरा ऐतबार नहीं हो सकता और न उसको संतों के निज देश में, जहाँ कि मन और माया और काल और कर्म और कष्ट और क्लेश बिल्कुल नहीं हैं, बासा मिलेगा, यों ही माया देश में चक्कर खाता रहेगा। इस वास्ते हर एक परमार्थी को, जो गृहस्थी है या विरक्त, मुनासिब और लाज़िम है कि संतों के उपदेश के मुवाफ़िक़ कार्रवाई करे, तब उसका सच्चा और पूरा उद्धार होगा, और जो गृहस्थ में है तो उसके दोनों यानी स्वार्थ और परमार्थ दुरुस्त बन जावेंगे।

३५—खुलासा यह है कि संसार और उसके सामान और पदार्थों से वैराग, चित्त में आना, बहुत कठिन नहीं है। पर शर्त यह है कि सच्चे मालिक के चरणों में प्रीति आ जावे और संतों की जुगत का अभ्यास दुरुस्ती के साथ बन पड़े कि जिससे मन और सुरत दिन २ ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ते जावें। और जो सच्चे मालिक का भेद और उससे मिलने की जुगत, संत सतगुरु या उनके सच्चे प्रेमी से न मिले, तो उस वैराग का पूरा २ ऐतबार नहीं हो सकता और न उसका असली फ़ायदा, यानी अंतर में रस और आनन्द का मिलना और दिन २ मालिक के चरणों से मेल होना, हासिल होगा।

॥ बचन २६ ॥

राधास्वामी मत वालों को अपने उद्धार की निसबत किसी तरह शक और संदेह मन में नहीं लाना चाहिये, क्योंकि जो कोई राधास्वामी दयाल की शरण लेकर, सुरत-शब्द का अभ्यास करेगा, उसका पूरा उद्धार एक, दो, तीन, हद्द चार जन्मों में ज़रूर हो जावेगा।

१—राधास्वामी मत में बाहर सतसंग, और अन्तर में अभ्यास सुरत और मन के ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ाने का, कराया जाता है, और भेद कुल्ल-मालिक के निज धाम का, जो कि सुरत का निज देश है, और भी रास्ते की मंज़िलों का, समझाया जाता है कि जिससे अभ्यासी रास्ते में कहीं न अटके और हर एक मक़ाम को तै करता हुआ धुर धाम में पहुँच कर राधास्वामी दयाल का दर्शन और उनके चरणों में बासा पावे।

२—जो कि राधास्वामी मत के सतसंगी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का इष्ट बाँध कर और उनके चरणों की शरण दृढ़ करके, उनके निज धाम में पहुँचने की आशा रखते हैं, और उसको दिन २ बढ़ाते और मज़बूत

उमंग के साथ घट में चढ़ते हैं, उसी क़दर शब्द और रूप का रस और आनन्द मिलता है और उसके साथ शौक़ और उमंग भी ज़्यादा और दुनिया के ख़्याल यानी गुनावन कम और दूर होते जाते हैं और मन निश्चल और चित्त निर्मल होता जाता है।

६—राधास्वामी मत में सब में भारी संयम शौक़ और प्रेम का है और जब यह थोड़ा-बहुत दिल में पैदा हुआ और अभ्यास करके थोड़ा-बहुत रस और आनन्द पाकर बढ़ने लगा, तो दिन २ अभ्यास की तरक़्क़ी होती जावेगी और दर्शनों के प्राप्ति की आशा और प्रतीत मज़बूत हो जावेगी।

७—मालूम होवे कि जिस क़दर मन और सुरत को रस और आनन्द अन्तर में मिलता जाता है, उसी क़दर संसार के भोगों और पदार्थों से चित्त हटता जाता है और ख़्वाहिश और संसारी चाह कम होती जाती है और शौक़ दर्शन का बढ़ता जाता है और देह और दुनिया के बंधन भी ढीले होते जाते हैं।

८—जब कि इस तरह अभ्यास करके मन और सुरत का झुकाव और खिंचाव घट में ऊपर की तरफ़ को होने लगा, तब अख़ीर वक़्त पर, जब कि सुरत सर्व अंग करके, पिंड को छोड़ कर, ऊपर की तरफ़ क़ुदरती तौर पर

खिंचेगी, उस वक़्त अभ्यासी को इस क़दर आसानी अपने घर की तरफ़ चलने की होवेगी, और ऐसा भारी रस और आनन्द खुलने शब्द का और नज़र आने दर्शन का मिलेगा कि उसको पाकर सुरत, निहायत उमंग के साथ, ऊपर को चढ़ेगी और सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु जहाँ मुनासिब समझेंगे, उसको ऊंचे और सुख स्थान में बासा देवेंगे।

९—यह हाल गहरे अभ्यासियों का होगा। और जो कम दर्जे के अभ्यासी हैं, उनकी भी सुरत उसी तरह शब्द और स्वरूप की मदद पाकर, ऊपर की तरफ़ को, उमंग के साथ, अख़ीर वक़्त पर मामूल से ज़्यादा, चढ़ेगी और सुख स्थान में यानी सहसदल कँवल और उसके ऊपर बासा पावेगी। और जो ज़्यादा दर्जे के अभ्यासी हैं, वे अपने दर्जे के मुआफ़िक़ त्रिकुटी में या दसवें द्वार में, और जो अव्वल दर्जे के हैं, वे सत्तलोक और राधास्वामी पद में बासा पावेंगे।

१०—खुलासा यह है कि सुरत-शब्द योग का अभ्यासी, चाहे जिस दर्जे का होवे और जिसने कि सच्चे मन से राधास्वामी दयाल की शरण ली है, वह सहसदल कँवल के नीचे नहीं ठहरेगा। वह राधास्वामी दयाल की मेहर और संत सतगुरु की दया से, इस मक़ाम के ऊपर और

ऊँचे से ऊँचे मक़ामों में, अपनी २ भक्ति के मुआफ़िक़ दर्जे पाता हुआ, एक दिन धुर धाम में पहुँच जावेगा। और इसी का नाम पूरा उद्धार है।

११—हरचन्द मन और माया और काल और कर्म, भक्ति की तरक़्क़ी में, अनेक तरह के विघ्न डालते रहते हैं, पर जिस किसी के हृदय में सच्चा शौक़ अपने जीव के उद्धार का, दया से, पैदा हो गया है, वे उसका रास्ता रोक नहीं सकते, बल्कि कुछ अर्से के अभ्यास के बाद, वही विघ्न, अभ्यासी के मददगार हो जाते हैं, और इस तौर पर राधास्वामी दयाल की दया से रास्ता सहज में तै हो जाता है।

१२—कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल इस क़दर अपने भक्तों पर, जो सच्चे मन से शरण में आये हैं, दया फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ उन्हीं का नहीं, बल्कि उनके निज कुटुम्बियों का भी, जिस क़दर मुनासिब होता है, उद्धार फ़रमाते हैं, यानी उनसे अपने भक्त की सेवा लेकर या उसमें प्रीति लगा कर, आख़िर वक़्त पर उनके मन और सुरत को सहज में थोड़ा-बहुत चढ़ाते हैं और चौरासी से चक्कर से बचा कर, और फिर नर देही में लाकर सतसंग और भजन वग़ैरा कराते हैं। इस तरह उनके उद्धार का रास्ता भी जारी हो जाता है।

१३—यह ख़ास दया किसी भी वक़्त में जीवों पर नहीं हुई, जो कि अब कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु स्वरूप धारण करके जीवों पर आप फ़रमाई है यानी कि जिस किसी ने सच्चे मन से उनके चरणों में थोड़ी-बहुत भक्ति करी तो उसका, और भी उसके निज रिश्तेदारों का, बल्कि नौकरों तक का, दर्जे-ब-दर्जे उद्धार फ़रमाते हैं।

१४—माद्दे का ख़्वास है कि जिस तरफ़ एक दफ़ा रवाँ होवे, तो बार २ उसी तरफ़ को, वक़्त मुक़र्ररा पर, रुजू करता है, जैसे कि एक बार मुसिल लिया जावे या फ़स्द खोली जावे, तो माद्दा या ख़ून उसी तरफ़ को, वक़्त मुक़र्ररा पर, बारम्बार रुजू करते हैं, फिर सुरत और मन जिनका निज घर ऊँचे देश में है, अख़ीर वक़्त पर जब कि क़ुदरती खिंचाव अंदर में कुल्ल पसारे का ऊपर की तरफ़ को होगा, किस तरह, और तरफ़ को जा सकते हैं? पर शर्त यह है कि मन और सुरत में चाह और आशा अपने घर में जाने और अपने मालिक से मिलने की पैदा होकर, जिस क़दर मुमकिन होवे, जीते-जी मज़बूत हो जावे।

१५—और जो घर का भेद नहीं मिला और जीते-जी उस रास्ते पर चलना शुरू नहीं किया और आशा और वासना देह और संसार और उसके भोगों और पदार्थों में रही, तो वह मन और सुरत, ज़रूर अपनी चाह और करनी

के मुआफ़िक़, सहसदल कँवल के नीचे जो सुन्न है, उसमें ग़ोता लगा कर, फिर नीचे की तरफ़ उतर कर, किसी न किसी देश में और योनि में बासा पावेंगे यानी फिर जन्मेंगे और शरीर धारण करेंगे।

१६—जो करनी अच्छी है तो स्वर्गादिक और मृत्यु लोक में नर देही पावेंगे और सुख भोगेंगे और जो नाक़िस करनी है तो नीचे देश और नीची योनियों में भरमेंगे

१७—जिस वक़्त कि सुरत छठे चक्र के पार सुन्न में जाती है, उस वक़्त देह और दुनिया की कार्रवाई की याद भूल जाती है, लेकिन थोड़े अर्से के बाद, जो ज़बर वासना है, उसकी फ़ुरना होती है और उसी के मुआफ़िक़ उस सुन्न से, जहाँ बासा मिलेगा, उस धार पर, जो उस देश या योनि से मिली हुई है, सवार होकर उतर जाती है।

५८—इस उतार का सबब यह है कि उस सुरत और मन का रुख़ ज़िन्दगी में नीचे की तरफ़ रहा और भोगों की आसक्ति करके धार उसी तरफ़ को हमेशा जारी रही। सो उसी स्वभाव और वासना के मुआफ़िक़ मरने के बाद भी वैसी ही फ़ुरना उठती है और सुरत को खींच कर नीचे के देश और योनि में ले जाती है।

१९—इस वास्ते, हर एक जीव को, चाहे औरत होवे या मर्द, मुनासिब और लाज़िम है कि इसी ज़िन्दगी में

अपने निज घर और उसके रास्ते का भेद और जुगत चलने की, संत सतगुरू या उनके प्रेमी सेवक से दरियाफ़्त करके, जिस क़दर बन सके, उस रास्ते पर चलना शुरू करे, और कुछ रस और आनन्द अन्तर में पाकर आशा और चाह अपने निज घर में पहुँचने और अपने सच्चे पिता कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन के प्राप्ति की, मज़बूत बाँधे, तो अलबत्ता उसको संत सतगुरु की दया से ऊँचे देश में बासा मिलेगा, और जब तक कि धुर धाम में नहीं पहुँचेगा, तब तक, एक दो या तीन जन्म धारण करके, वही जुगत कमा कर, ऊँचे से ऊँचे देश में बासा पावेगा, और हर एक जन्म, पहिले जनम से बेहतर होगा और संत सतगुरु भी हर जन्म में मिलेंगे ॥

२०—राधास्वामी मत के हर एक सतसंगी को मुनासिब है कि जिस क़दर अभ्यास बन सके, राधास्वामी दयाल की शरण लेकर, हर रोज़, बिला नाग़ा करता रहे और सतसंग करके चरणों में प्रीति और प्रतीत बढ़ाता जावे, और शक और शुबहा या किसी तरह का सन्देह मन में न रक्खे, तो राधास्वामी दयाल मेहर से अपना बल देकर, जिस क़दर करनी मुनासिब और ज़रूर है, करा कर, एक दिन, निज घर में पहुँचा देंगे कि जहाँ सुरत परम आनन्द को प्राप्त होगी और जन्म-मरण के दुख और देहियों के

कष्ट और क्लेश से बिलकुल छुटकारा हो जावेगा। इसी को पूरा उद्धार कहते हैं। और जो कोई इस तरह अभ्यास जारी रक्खेगा, वह और योनियों में नहीं जावेगा यानी चौरासी का चक्कर उसका फ़ौरन कट जावेगा। इस बात में किसी को कभी शक और सन्देह न लाना चाहिये।

बचन २७

सच्चे परमार्थी को, वास्ते अपनी तरक़्क़ी के, सात बातों की सम्हाल रखना ज़रूर है।

१—जो कोई कि सच्चा परमार्थी है और सच्चे मालिक से उसके निज धाम में पहुँच कर मिलना चाहता है, उसको ये सात बातें ज़रूर माननी चाहियें और उनके मुआफ़िक़ अपने परमार्थ की कार्रवाई करनी चाहिये। तब उसके हृदय में प्रेम पैदा होगा, और उन सातों बातों की सम्हाल के साथ दिन २ बढ़ता जावेगा यानी परमार्थी रंग चढ़ता जावेगा और संसारी रंग उतरता जावेगा यानी मन के अंग बदलते जावेंगे और दिन २ विकार घटते जावेंगे।

२—वे सात बातें ये हैं—

पहिले, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरणों में प्रीति और प्रतीत।

यह बात सतसंग में निर्णय और भेद के बचन सुन कर, और उनका गहिरा मनन और विचार कर के हासिल

होगी । हर एक परमार्थी को मुनासिब और लाज़िम है कि जिस क़दर संशय और भ्रम और शक और शुबहे निसबत कुल्ल-मालिक की मौजूदगी और उसकी सर्व समर्थता और क़ुदरत के, उसके मन में धरे होवें या पैदा होवें, उनको सतसंग में बैठ कर साफ़ और दूर करावे, क्योंकि जो किसी क़िस्म का थोड़ा भी शक और संदेह इस मामले में रहा, तो वह प्रीति और प्रतीत में विघ्न डालेगा । और फिर अभ्यास में भी कसर पड़ेगी । और ये संशय और भ्रम राधास्वामी मत के सतसंग में आसानी से दूर हो सकते हैं ।

३—दूसरे, संत सतगुरु और साध गुरू के चरणों में प्रीति और प्रतीत ।

यह बात वास्ते दुरुस्ती से बनने अभ्यास और पूरे तौर पर समझने उसूल राधास्वामी मत के, बहुत ज़रूरी है । जो संत सतगुरु में थोड़ा-बहुत भाव नहीं आवेगा, तो मत की भी समझ ब-ख़ूबी नहीं आवेगी, और न जुगत दुरुस्ती से कमाई जावेगी और न अन्तर और बाहर मेहर और दया की प्राप्ति होगी । जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है, उसको संत सतगुरु के चरणों में बचन सुनते ही भाव और प्यार आवेगा, क्योंकि उन बचनों को सुन कर और समझ कर, अपने प्रीयतम कुल्ल-मालिक का लखाव आवेगा और उसके निज धाम और रास्ते का पता और भेद मिलेगा

और चलने की जुगत दरियाफ़्त होगी। फिर ख़्याल करो कि जो कोई अपने प्यारे माशूक़ और मतलूब का पता और निशान बतावे, तो वह किस क़दर प्यारा लगना चाहिये ? दुनिया में जो कोई क़ासिद वग़ैरा अपने प्यारे की परदेश से ख़बर लाता है, वह निहायत प्यारा लगता है और उसकी बहुत ख़ुशी के साथ ख़ातिरदारी और मेहमानदारी करते हैं। फिर जो कुल्ल-मालिक का भेदी और मन्त्री है, उसका जिस क़दर भाव और प्यार और सेवा की जावे, वह थोड़ी से थोड़ी है, क्योंकि वही सब तरह से मदद देकर, एक दिन, जीव को धुर घर में पहुँचा सकता है। और किसी तरह किसी का गुज़र महल में, या उसके रास्ते पर नहीं हो सकता।

४—सच्चे परमार्थी को सतसंग और अभ्यास करने से दिन २ उनकी गत-मत और ताक़त की ख़बर पड़ती जावेगी और उसी क़दर उसकी प्रीति और प्रतात उनके चरणों में बढ़ती और मज़बूत होती जावेगी।

५—तीसरे, शब्द और नाम में प्रीति और प्रतीत। राधास्वामी मत में नाम की दो क़िस्में हैं। एक ध्वन्यात्मक जिसको शब्द कहते हैं और उसकी धुन, घट २ में हरदम जारी है और यह मुराद चैतन्य की धार रवाँ से है, जिसके साथ बराबर धुन होती है और वही धारा कुल्ल रचना की कर्ता और सम्हालने वाली है। और दूसरा, वर्णात्मक।

इससे मतलब उसी ध्वन्यात्मक नाम से है जो कि बोलने और लिखने में आया और ध्वन्यात्मक नाम को लखाता है। ध्वन्यात्मक नाम यानी शब्द ज्यों का त्यों बोलने और लिखने में नहीं आ सक्ता, लेकिन जहाँ तक कि मुमकिन था, संत उसको तलफ़्फ़ुज़ में लाये हैं और उसके वसीले से ध्वन्यात्मक नाम को लखाते हैं।

६—ध्वन्यात्मक नाम चैतन्य की धार है, और वही जान और सुरत की धार है, और उससे सब रचना हुई और उसी के आसरे क़ायम है। इसी धार को यानी उस के साथ जो धुन हो रही है, उसको पकड़ के चलना, सुरत-शब्द योग कहलाता है। इसी जुगत से यानी सुरत को शब्द में लगा कर चढ़ाने से रास्ता तै करना और एक दिन धुर घर में पहुँचना मुमकिन है। और कोई दूसरा रास्ता धुर घर का पहुँचाने वाला रचा ही नहीं गया। प्राण की धार और दूसरी धारें माया के घेर से निकसी हैं, सो वहीं उलट कर ख़त्म हो जाती हैं। माया यानी भौसागर के बाहर कोई धा नहीं जाती है। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को मुनासिब है कि शब्द का भेद लेकर यानी मक़ाम २ की धुन को दरियाफ़्त करके और उसमें प्यार और भाव लाकर नित्त नियम से अभ्यास करे, और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की शरण दृढ़ करके, संत सतगुरु की दया संग लेवे। तब अभ्यास

में पूरी मदद मिलेगी और अगले-पिछले कर्म और मन और माया के विघ्न, सहज में, आहिस्ते २ कटते और दूर होते जावेंगे।

७—और मालूम होवे कि वर्णात्मक नाम के अभ्यास से सफ़ाई, और ध्वन्यात्मक नाम के अभ्यास से चढ़ाई होवेगी। और बिना शब्द के अभ्यास के, मन, और किसी तरह, बस में नहीं आवेगा। और बग़ैर मन के ज़ेर होने के, माया के घेर से निकलना और मालिक के धाम में पहुँचना ना-मुमकिन है।

८—चौथे, प्रेमी और भक्त जन यानी राधास्वामी मत के सतसंगियों में प्यार और दया-भाव।

जो सच्चे परमार्थी हैं, उनके मन में सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरणों में प्यार ज़रूर होगा, और उस प्यार को वे दिन २ बढ़ाने की कोशिश करेंगे। फिर जो कि अपने प्यारे को प्यार करते हैं और आप भी उसके प्यारे होते जाते हैं, उनसे प्यार रखना ज़रूर मुनासिब है। बल्कि सच्चे प्रेमी के मन में ऐसों की प्रेम की हालत और परमार्थी कार्रवाई देख कर, आप ही आप, उनकी तरफ़ प्यार और दया-भाव पैदा होगा, जैसा कि किसी आशिक़ ने इन कड़ियों में कहा है। "मुझे अपने प्रीयतम से है यह क़रार, कि जब तक है जाँ देह में बर-क़रार। करूँ उसके भक्तों से हरदम पियार, रहूँ उनको आपे के मुआफ़िक़ निहार" ॥

९—और जो कि हर एक सुरत, राधास्वामी दयाल की अंश यानी बच्चा है, फिर सब सुरतें आपस में भाई और बहिन हुईं। इस तरह सब के साथ दया-भाव मन में रखना चाहिये। लेकिन जो कोई इन में से अपने प्रीयतम कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु के चरणों में प्यार लावे और सेवा करे और उनका हुक्म माने, तो उनको अपने प्रीयतम के प्यारे और प्यार करने वाले समझ कर, उन में, सिवाय दया-भाव के, सच्चे मन से प्यार आना चाहिये और परस्पर यानी दोनों तरफ़ से यही बर्ताव तहे दिल से जारी होना चाहिये, क्योंकि उनके संग से कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु के चरणों में प्रीति और भक्ति और सेवा बढ़ेगी और अभ्यास सुखाला बन पड़ेगा।

१०—जो कोई कहे कि मुझको कुल्ल-मालिक या संत सतगुरु के चरणों में तो भाव और प्यार है, पर सतसंगियों में (जो सच्चे प्रेमी हैं) मुझको भाव नहीं आता, तो उसकी कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु के चरणों प्रीति का मैं भी पूरा ऐतबार नहीं हो सकता, क्योंकि जब उसको अपने प्रीयतम के सच्चे प्यार करने वाले अच्छे नहीं लगते, तो उसको कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु कैसे अच्छे लग सकते हैं? इस वास्ते ऐसे शख़्सों की प्रीति का कुछ भरोसा नहीं हो सकता है और न वे सतसंग में ज़्यादा अर्से तक ठहर सकेंगे।

११—ऊपर के कलाम से यह मतलब नहीं है एक सतसंगी हर एक सतसंगी की, प्यार-भाव के साथ, ख़ातिर-दारी और सेवा करता फिरे। इसमें उसके सतसंग और अभ्यास और सतगुरु की सेवा में ख़लल पड़ेगा। हुक्म यह है कि सब सतसंगी इसको प्यारे लगें और जब ज़रूरत और मौक़ा होवे, तब यह उनकी ख़ातिरदारी और मेहमानी, अपने भाई के मुआफ़िक़ करे, ख़ास कर जबकि कोई सत-संगी इत्तिफ़ाक़ से इसके मकान पर आवे, या चन्द रोज़ को ठहरे।

१२—पाँचवे, निरख-परख अपने मन और इन्द्रियों के हाल और चाल की।

यह काम वास्ते हर दम होशियार रहने और दूर करने भूल और भरम के, बहुत ज़रूर है।

१३—मन और इन्द्रियों का स्वभाव है कि हर वक़्त कोई न कोई तरंग उठा कर या किसी न किसी भोग और पदार्थ की तरफ़ तवज्जह करके चंचल बने रहते हैं और इनकी चंचलता से परमार्थी की वृत्ति हमेशा डावाँडोल रहती है। और वास्ते सफ़ाई और दुरुस्ती अभ्यास के, निश्चलता ज़रूर चाहिये। इस वास्ते हर परमार्थी को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने मन की चौकीदारी करता रहे, यानी फ़िज़ूल और बे-फ़ायदा और ना-मुनासिब तरँगें न उठावे, और न अपनी इन्द्रियों को, किसी तरफ़, बे-फ़ायदा

और ना-मुनासिब तौर पर तवज्जह करने देवे, और न इस क़िस्म की तरंगों या पदार्थों और भोगों के गुनावन में अपने मन और इन्द्रियों को लिपटने देवे। इस तरह कुछ अर्से तक कार्रवाई करने से, यानी हर वक़्त मन और इन्द्रियों की सम्हाल रखने से, इस क़दर ताक़त आ जावेगी कि अभ्यास के वक़्त, थोड़ा-बहुत अपने मन को निश्चल कर सकेगा, और तब कुछ रस अभ्यास का भी ले सकेगा, और मन की कुचाल को आहिस्ते २ दूर कर सकेगा, नहीं तो मन चंचल रह कर अभ्यास का रस नहीं आने देगा, और कुल्ल वक़्त अभ्यास का तरह २ के ख़्यालों में ख़र्च करा के, ख़ाली उठावेगा और फिर नतीजा उसका यह होगा कि कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु और शब्द की तरफ़ से अभाव पैदा हो जावेगा, और एक क़िस्म की निराश्ता तबिअत में आ जावेगी कि जिससे कोई दिन में अभ्यास भी छूट जावेगा और बे-मुखता यानी मन-मुखता बढ़ती जावेगी।

१४—मन का क़ायदा है कि अपनी कसरों को नहीं देखता और न उनके दूर करने का जतन, जो संत सतगुरु बार २ फ़रमाते हैं, करना चाहता है, और ऐसी आशा रखता है और बल्कि प्रार्थना भी करता है कि दया से सब विकार एक दम दूर हो जावें, और अंतर में शब्द खुल

जावे। यह आशा और प्रार्थना कुछ बुरी नहीं है, लेकिन जो यह सच्चा परमार्थी है तो इस को हुक्म के मुआफ़िक़ दया का बल लेकर अपना ज़ोर भी, जिस क़दर बन सके, वास्ते दुरुस्ती अभ्यास और हटाने गुनावन और विघ्नों के, लगाना ज़रूर चाहिए। तब दया इस की मदद करेगी। और जो यह मन और इन्द्रियों की तरंगों में बहता रहता है और नित्त नई चाहें भोग-विलास की उठाता रहता है, और वक़्त अभ्यास के भी इसी क़िस्म के ख़्यालों में भ्रमता रहता है, तो ऐसी सूरत में दया क्या कार्रवाई कर सकती है, सिवाय इसके कि मौज से उसको कुछ डर दिखाया जावे और दुख और तकलीफ़ वाक़ै होवे? तब वह भोगों की तरफ़ से थोड़ा-बहुत हट सकता है। लेकिन इस क़िस्म की कार्रवाई, जहाँ तक मुमकिन होता है, संत सतगुरु मंज़ूर नहीं करते हैं, सिर्फ़ बचन सुना कर और समझौती देकर होशियार करते हैं, ताकि यह आप, अपने नफ़े और नुक़सान को सोच कर दुरुस्ती से चाल चले। और जब यह हिम्मत बाँध कर ऐसी कार्रवाई शुरू करता है, तब उसको मदद देकर उसकी चाल बढ़ाते हैं और अन्तर में थोड़ा-बहुत रस देकर शौक़ और प्रेम जगाते हैं कि जिससे अभ्यास सुखाला बनता जावे और आहिस्ते २ तरक़्क़ी होती जावे। इस तरक़्क़ी का हाल, अभ्यासी अपने मन की हालत को परख कर,

जान सकता है और दिन २ दया और मेहर को भी अंतर और बाहर परख सकता है, अलबत्ता जिसने सच्ची शरण ली है, उसके अगले-पिछले कर्म जिस क़दर जल्दी मुनासिब है, काटते हैं, ताकि वह हलका होकर यानी विघ्नों से बच कर, सुखाला, प्रेम पूर्वक, अभ्यास में लगे।

१५—खुलासा यह है कि परमार्थी को जहाँ तक बने, भोगों की इच्छा नहीं उठाना चाहिए और न उनकी गुनावन में अपना वक़्त ख़र्च करना चाहिये। जो भोग कि मौज से प्राप्त होवे, और बशर्ते कि वह ना-जायज़ और ना-मुनासिब और किसी तरह हारिज न होवे, तो उसमें, अहतियात के साथ बर्तने में दोष नहीं है।

१६—छठे, सच्ची दीनता कुल्ल-मालिक और सतगुरु के चरणों में और अपने तईं ओछा और कसर-वाला समझ कर, प्रार्थना करना, वास्ते प्राप्ति दया के।

जो कोई अपने मन की निरख और परख यानी चौकीदारी करता रहेगा, उसको अपनी कसरें हमेशा नज़र आवेंगी। तब उसके मन में सच्ची दीनता कुल्ल-मालिक और सतगुरु के चरणों में पैदा होगी। और फिर वही शख़्स सच्ची प्रार्थना, वास्ते उनके दूर होने के, करेगा और जो जतन कि बताया जावेगा, उसकी कार्रवाई भी उससे बन

पड़ेगी और कुल्ल-मालिक और सतगुरु की दया की परख और क़दर भी उसी के चित्त में आवेगी।

१७—ऐसा जीव जो कि अपनी कसरों को निहारता रहता है, सब के साथ दीनता और ग़रीबी के साथ बर्ताव करेगा, यानी जो कोई उस पर किसी वक़्त किसी क़िस्म की तान मारेगा, तो वह उसका मुक़ाबिला नहीं करेगा, बल्कि अपनी कसरों का ख़्याल करके, तान के बचन की बर्दाश्त करेगा और तान मारने वाले से नाराज़ नहीं होगा, बल्कि उसको अपना हितकारी समझेगा।

१८—जो कोई अपने तईं ओछा या अपने में कसरें देखता है, वह, वास्ते दूर करने उनके, और हासिल करने तरक़्क़ी के, बराबर जतन करता रहेगा। पर जो कोई अपने तईं पूरा मानेगा, वह अभ्यास में ढीला हो जावेगा और उसकी तरक़्क़ी का रास्ता बंद हो जावेगा। इस वास्ते परमार्थी को चाहिए कि जब तक अपना काम पूरा न बने, तब तक जतन करने से बाज़ न रहे और दीनता और प्रार्थना का अंग न छोड़े।

१९—सातवें, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की मौज के साथ, जहाँ तक मुमकिन होवे, मुआफ़िक़त करना।

यह भक्ति का एक ख़ास अंग है कि जो कुछ अपना भगवंत कहे या करे, उसको अपने वास्ते बेहतर और मुफ़ीद

समझे, और चाहे वह कार्रवाई मन के मुआफ़िक़ होवे या नहीं, जहाँ तक मुमकिन होवे, उसके साथ मुआफ़िक़त करे, यानी उसको अपने प्रीयतम की मौज समझ कर क़ुबूल और मंज़ूर करे, क्योंकि जब यह बात मालूम है कि कुल्ल-मालिक सर्व-समर्थ और सब से ज़बर है और उसकी मौज में किसी को दख़ल नहीं है, फिर विचारो कि उसके साथ मुआफ़िक़त करना बेहतर है या ना-मुआफ़िक़त। पहिली सूरत में भक्ति बढ़ेगी और अदब क़ायम रहेगा, और दूसरी सूरत में मन रूखा-फीका होकर अपने प्रीयतम से किसी क़दर बे-मुख हो जावेगा और अभ्यास में भी ख़लल डालेगा। इसमें सेवक का भारी नुक़सान होगा। मुनासिब यह है कि जब कोई काम ख़िलाफ़ मन के वाक़ै होवे और उसकी बर्दाश्त न कर सके, तो चरणों में प्रार्थना, वास्ते बदलने मौज या मिलने ताक़त और सहारे के, वास्ते बर्दाश्त, करे तो राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु ज़रूर थोड़ी-बहुत दया करेंगे या इफ़ाक़ा बख़्शेंगे, यानी ताक़त और सहारा अंतर में देवेंगे।

२०—उनकी मौज अपने सेवकों के वास्ते कभी मसलहत से ख़ाली नहीं होती। पर उस मसलहत का समझना मुश्किल है और कभी २ दया करके ख़ासों को मसलहत भी जना देते हैं। सेवक को हर हाल में, यानी सुख और दुख के वक़्त, मुनासिब है कि उन्हीं के चरणों की तरफ़

तवज्जह करके दया और सहारा चाहे, जैसे बालक चाहे माता कभी उसकी ताड़-मार भी करे, तो उसी की गोद की तरफ़ दौड़ता है और दूसरे की तरफ़, चाहे वह सहारा भी देवे यानी बचावे, तो भी रुख़ नहीं करता।

२१—यह बात सही है कि सब जीव एक ही बार पूरे तौर से इस घाट पर नहीं बर्त सकते, यानी सर्व अंग करके मौज के साथ मुवाफ़िक़त नहीं कर सकते। लेकिन जो कोई कि राधास्वामी मत में शामिल होकर भक्ति में आया है, उसको जानना चाहिये कि यह बात उस पर फ़र्ज़ और लाज़िम है कि भक्ति के क़ायदों के मुवाफ़िक़ जिस क़दर बन सके, अपने प्रीयतम भगवंत की मौज के साथ मुवाफ़िक़त करे। अलबत्ता जीवों के दर्जे के मुवाफ़िक़, जैसे उत्तम, मध्यम और निकृष्ट, इस बर्ताव में भेद रहेगा। लेकिन चाहे जिस दर्जे का भक्त होवे, उस को अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ कोशिश इस बात की करना चाहिये कि जो कुछ उसका भगवंत और मालिक उसकी निसबत कहे या करे, उसमें अपना हित और बेहतरी समझे।

२२—इस बात की कार्रवाई दुरुस्ती के साथ सिर्फ़ सुनने और समझने से नहीं हो सकती। कुछ मदद अंदरूनी अभ्यास की भी दरकार है, यानी सेवक के मन और सुरत का घाट भी थोड़ा-बहुत बदलना चाहिये और अंतर में

कुछ रस और आनन्द और दया और रक्षा के पर्चे भी मिलने चाहिये, तब उसको थोड़ी-बहुत ताक़त मुवाफ़िक़त करने की, साथ मौज के, सख़्ती और सुस्ती में, हासिल होवेगी। सिवाय इसके, कुछ दया भी संत सतगुरु और सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल की दरकार है कि जो सेवक को इस क़दर बल और ताक़त बख़्शेगी कि जिससे वह आसानी के साथ मुआफ़िक़ और ना-मुआफ़िक़ मौज को बर्दाश्त कर सके। सो जो कोई सच्चे मन से सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल को भक्ति में आया है, उसको यह तीनों बातें—यानी बाहर के सतसंग और अन्तर अभ्यास की मदद और राधास्वामी दयाल की दया, थोड़ी-बहुत अपने दर्जे के मुआफ़िक़ ज़रूर हासिल होंगी और उसी क़दर उसको, ताक़त मौज के साथ मुआफ़िक़त करने की, भी मिलेगी और यह ताक़त जिस क़दर कि इसकी प्रीति और प्रतीत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरणों में, और भी सुरत-शब्द मार्ग के अभ्यास में बढ़ती जावेगी, दिन-दिन ज़्यादा होती जावेगी और एक दिन पूरे दर्जे पर पहुँचा कर छोड़ेगी।

२३—कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की शरण दृढ़ करने और उनकी मौज के साथ मुआफ़िक़त करने में बड़े फ़ायदे हैं, और जीव का संसारी और देह के बंधनों से जल्दी

छुटकारा हो सकता है और कर्मों का असर, जो थोड़े-बहुत किये जावें, उस पर बिल्कुल नहीं पहुँचेगा, और हमेशा अपने सच्चे माता-पिता राधास्वामी दयाल के आसरे और भरोसे देह और संसार में किसी क़दर निःचिंत होकर बर्ताव करेगा, क्योंकि उसको अपनी हालत की रोज़मर्रा जाँच करने से अच्छी तरह से मालूम हो जावेगा कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की नज़र, दया और मेहर की, उस पर है और वे सब तरह से और हर हाल में उसकी दया और रक्षा फ़रमाते हैं। फिर संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक दयाल के चरणों में किसी तरह का ख़ौफ़ नहीं है यानी काल और कर्म और उसके दूत कुछ नुक़सान या तकलीफ़ इस क़िस्म की नहीं पहुँचा सकते हैं कि जिससे वह जीव घबरा कर या निराश होकर बे-मुख हो जावे और मत को, या उसके अभ्यास को, छोड़ देवे।

२४—इस वास्ते सब जीवों को, जो राधास्वामी दयाल की शरण में आये हैं और उपदेश लेकर सुरत-शब्द मार्ग का थोड़ा-बहुत अभ्यास कर रहे हैं, मुनासिब और लाज़िम है कि अपने बल और पौरुष की तरफ़ से नज़र हटा कर, राधास्वामी दयाल की दया का आसरा और भरोसा लेकर ऐसी हिम्मत बाँधें कि अपना बर्तावा संसार और परमार्थ में, जहाँ तक मुमकिन है, प्रेमाभक्ति के क़ायदों के मुआफ़िक़

जारी करें, और किसी तरह का फ़िज़ूल शक और शुबहा या सन्देह, अपने नफ़े और नुक़सान की निसबत, मन में न लावें। तो यक़ीन होता है कि राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से ज़रूर उनकी रक्षा और सम्हाल, जिस क़दर होवेगी, फ़रमावेंगे, यानी पहिले नम्बर, तवज्जह वास्ते दुरुस्ती उनके परमार्थ के, और दूसरे नम्बर, तवज्जह वास्ते सम्हाल और दुरुस्ती उनके स्वार्थ यानी संसारी कारोबार के, फ़रमावेंगे। अगले-पिछले कर्मों का फल ज़रूर भोगना पड़ेगा, लेकिन उसमें दया से बहुत रक्षा और सम्हाल होवेगी, यानी दुखदाई कर्म के भोगने में बहुत कमी हो जावेगी और सुखदाई कर्म का फल ज़्यादा मिलेगा।

राधास्वामी मत की पुस्तकों का
संशोधित सूचीपत्र—१-२-८६ से

पद्य (हिन्दी)

	अजिल्द	सजिल्द
१. सार बचन छंद बंद, पहला भाग	१०.००	१२.००
२. सार बचन छंद बंद, दूसरा भाग	१०.००	१२.००
३. प्रेमबानी, पहला भाग	११.००	१४.००
४. प्रेमबानी, दूसरा भाग	६.००	११.००
५. प्रेमबानी, तीसरा भाग	६.५०	११.००
६. प्रेमबानी चौथा भाग	६.००	८.००
७ संत संग्रह पहला भाग....	१.७५	२.००
८. संत संग्रह, दूसरा भाग	२.५०	४.५०
९. प्रेम प्रकाश	१.००	३.००
१०. बिनती-प्रार्थना	१.००	२.२५
११. नियमावली	१.२५	२·१०

गद्य (हिन्दी)

१२. सार बचन वार्तिक ...	५.५०	७·५०
१३. आखिरी बचन स्वामीजी महाराज	०.२५	—
१४. प्रेमपत्र, पहला भाग	११.००	१४.००
१५. प्रेमपत्र, दूसरा भाग	१३.५०	१५.५०
१६. प्रेमपत्र, तीसरा भाग	६.००	११.००
१७. प्रेमपत्र, चौथा भाग	१०.००	१२.००
१८. प्रेमपत्र, पाँचवाँ भाग	१०.५०	१२·५०
१९. प्रेमपत्र, छठा भाग	७.००	९.००
२०. जुगत प्रकाश	२.००	३.५०
२१. सार उपदेश	१.५०	२.५०
२२. प्रेम उपदेश	१.५०	२.७५
२३. राधास्वामी मत संदेश	१.५०	३.००
२४. राधास्वामी मत उपदेश	१.७५	—
२५. निज उपदेश	१.१०	—
२६. प्रश्नोत्तर सन्त मत	०.७०	—
२७. छाँटे हुए बचन महात्माओं के	०.६०	—
२८. गुरु उपदेश	०.२५	—
२९. बचन महाराज साहब	५.००	७.००
३०. बचन बाबूजी महाराज, पहला भाग	२·००	५.००
३१. बचन बाबूजी महाराज, दूसरा भाग	२·५०	४·००

	अजिल्द	सजिल्द
३२. बचन बाबूजी महाराज, तीसरा भाग	८.००	१०.००
३३. बचन बाबूजी महाराज, चौथा भाग	१०.००	१२.००
३४. जीवन चरित्र, स्वामीजी महाराज	३.००	५.००
३५. जीवन चरित्र, बाबूजी महाराज	—	८.००
३६. शब्द कोश, संत मत बानी	२.००	—
३७. लोक-परलोक हितकारी	३.५०	४.००
३८. मौलाना रूम के दृष्टान्त और औलियाओं की कथाएँ	३.५०	४.५०
३९. समाध पुस्तिका	१.५०	—

बँगला

४०. R. S. Mat Sandesh	२.२०	—
४१. Prasnotter	२.९०	—
४२. Saarupdesh	२.८०	—

गुजराती

४३. राधास्वामी मत उपदेश	१.५०	—
४४. राधास्वामी मत सन्देश	१.५०	—

सिंधी

४५. राधास्वामी मत संदेश	१.००	

अँग्रेजी

४६. राधास्वामी मत प्रकाश Radhasoami Mat Prakash	—	१.०००
४७. डिस्कोरसेज औन राधास्वामी फ़ेथ Discourses on Radhasoami Faith	—	१०.००
४८. फेलप्स साहब के नोट्स Phelps' Notes	—	५.५०
४९. ए-सोलेस-टू-सतसंगीज़ A Solace to Satsangis	१.००	—

सेक्रेटरी, राधास्वामी सतसंग,
स्वामी बाग, आगरा-२८२००५